अक्टूबर ९३ "महालक्ष्मी विशेषांक" मूल्य - १५/-

१०८

सौ टंच खरे

महालक्ष्मी के सिद्ध सफल प्रयोग

स्वर्ण प्रभा यक्षिणी जो साधक को नित्य दो तोला स्वर्ण देती है

पूज्य गुरुदेव का संदेश . . . शिष्यों के नाम

प्रिय आत्मन्!

मैंने आप सभी शिष्यों और साधकों को इस बार **''आत्मन्''** शब्द से संबोधित किया है और यह सम्बोधन सही भी है, क्योंकि आप मेरे **'' आत्मीय''** हैं ही, मेरे शिष्य हैं। तुम्हारे दिल की धड़कने मेरी धड़कनों से मिली हुई हैं, तुम्हारी रगों में मेरा रक्त प्रवहित है . . . और गुरु के नाते जो **आध्यात्मिक खून तुम्हारी रगों में दौड़ रहा है वह केवल खून ही नहीं है . . तूफान है . . जोश है . लावा है. . और मुझे इस बात का गर्व है।**

इस बार चैलेंज के साथ फिर तुम्हें आवाज दे रहा हूं कि **''सिद्धाश्रम''** मे जो काम मुझे सौंपा है उसे पूरा करने का समय आ गया है. . इस पत्रिका को . . . **मंत्र - तंत्र- यंत्र विज्ञान** . . को, जो द्वापर के कृष्ण की **''गीता''** की तरह उद्बोधक पत्रिका है, इसे दीपावली तक . . १३.११.९३ तक . . घर- घर पहुंचाना है, ज्यादा से ज्यादा सदस्य बनाने हैं और प्रत्येक शिष्य को यदि वह मेरी धड़कनों से जुड़ा हुआ शिष्य है तो - कम से कम **दीपावली विशेषांक** की **'' सौ''** प्रतियां तो मंगानी ही हैं इससे ज्यादा हो सकती हैं पर कम नहीं. . और इन सब पत्रिकाओं को वितरित कर देना है . . स्टॉल पर नहीं . . अपने स्वजनों में, मित्रों में - आरजू करके, हठ करके . . आग्रह करके. . . पत्रिका सदस्य बनाकर . . अगर इस बार १०० पत्रिका सदस्य बन गये तो हर बार पत्रिका तुम्हारे हांथों से बांटनी ही तो है, फिर तो प्रयत्न की आवश्यकता ही नहीं है . . और **'' संकल्प ''** यह लेना है, कि इस दीपावली से अगली दीपावली ९४ तक हर माह १०० प्रतियां मंगाकर वितरित करनी ही है, बेचनी है, नये पत्रिका सदस्यों को देनी ही है।

यदि इस बार ''सौ'' प्रतियां नहीं मंगवा सकें तो जितनी संभव हों, २५,५०या १०० प्रतियां मंगवा दें।

ध्यान रहे स्टॉल पर नहीं देनी है अपने प्रयत्नों से शिष्य बनाकर उनके नाम व पते भेजने हैं साथ में वार्षिक शुल्क भी, जिससे कि हर माह आपके माध्यम से उन्हें पत्रिका के अंक वितरित किये जा सकें।

एक गुरु के नाते यही मेरा आग्रह है, यही मेरा आदेश है, यही हमारा संकल्प है।

२१.०९.९३

तुम्हारा

नारायण दत्त श्रीमाली

(गुरुदेव)

अजय कुमार उत्तम बी०ए० इलाहाबाद विश्वविद्यालय

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि
तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ।

(ऋगवेद - १०/ १२५/५)

" मैं जिसे- जिसे चाहती हूं उसे- उसे श्रेष्ठ बना देती हूं, उसे ब्रह्मा , ऋषि या मेधा से युक्त बना देती हूं।"

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस मंत्र -तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका में प्रकाशित लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी स्थान, नाम या घटना का किसी से कोई संबंध नहीं है। यदि कोई घटना नाम या तथ्य मिल जाय तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु संत होते हैं अतः उनके पते या उनके बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना संभव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक ,मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में, असली या नकली के बारे में, अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें, सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद - विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना जप या मंत्र प्रयोग न करे जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी, सन्यासी या लेखकों के मात्र विचार होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है, पत्रिका में प्रकाशित सामग्री आप अपनी इच्छानुसार कहीं से भी मंगा सकते हैं। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया है जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री को पुस्तकाकार या अन्यं किसी भी रूप में डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली के नाम से प्रकाशित किया जा सकता है। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हो) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस संबंध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस संबंध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह संबंधित लाभ तुरंत प्राप्त कर सके। यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस संबंध में किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी । गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस संबंध में किसी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

विषय - सूची

साधना

अक्टूबर ९३

सम्पादक मण्डल

प्रधान संपादक - **नन्दकिशोर श्रीमाली**
सह सम्पादक मण्डल - डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, कृष्ण मुरारी श्रीवास्तव, गुरुसेवक
संयोजक - कैलाश चन्द्र श्रीमाली
वित्तीय सलाहकार - अरविन्द श्रीमाली

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान , डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१ (राज.) ,फोन : ०२९१ - ३२२०९

एवं

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४, फोन : ०११ - ७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

पाठकों के पत्र

⊙ **रहस्य रोमांच विशेषांक** का स्वागत है। मैंने भी पूरी तरह से सात्विक जीवन जीते हुए श्मशान साधनाएं की हैं और विचित्र अनुभवों के साथ - साथ कुछ ऐसी सिद्धियां भी प्राप्त की है, जिन्हें मैं सही समय आने पर प्रकट करूंगा।

कृष्णपाल अवस्थी,
बस्ती

⊙ सितम्बर अंक में **''सौभाग्यदायक गणपति साधना''** विधि - विधान से और पूरी तरह एक ही स्थान पर मिलना अच्छा लगा। ऐसी श्रेष्ठ और नवीन पद्धति की साधना प्रकाशित करने के लिए बधाई!

श्रीमती शकुन्तला श्रीवास्तव,
जबलपुर

⊙ अपने राशिफल को ज्यों का त्यों पूरे माह व्यवहार में खरा उतरता अनुभव कर रहा हूं। अब तो पहले से ही पूरे माह की रूप रेखा माह राशिफल पढ़कर बना लेता हूं।

राधा किशन कुशवाहा,
बस्तर

⊙ **''सम्मोहन विशेषांक''** के प्रकाशन के बाद व्यवहारिक ज्ञान से परिचय कराने की आपकी शैली सहज और रोचक लगी। त्राटक सम्बंधी लेख रोचक है। आप जहां आगामी अंक का विवरण देते हैं, वहीं सम्मोहन, योग , आगामी साधनाओं का भी पूर्व विवरण दिया करें।

प्रीति मनचंदा,
पानीपत

⊙ मेरा किराने का काम है। पिछली बार के शेयर मार्केट में भाव सूची पढ़कर लाभ पाया। पत्रिका का आभारी हूं।

विनय चंद,
अलवर

⊙ सितम्बर अंक साधनाओं की ओर से कमजोर पड़ गया। रहस्य रोमांच की कथाएं ही भरी पड़ी रहीं।

अविनाश सिसोदिया,
हावड़ा

-- सितम्बर अंक की साधनाएं परम्परा से हटी हुई थीं। इसी से आपको सम्भवतः कुछ खेद रहा है, किन्तु इन साधनाओं का भी अपना महत्व होता ही है।

सम्पादक

⊙ कई बार जन्मांकों के अनुसार एवं माह राशिफल के अनुसार भविष्यफल जानने में कुछ अन्तर आ जाता है, जिससे भ्रम उत्पन्न होता है। इस अन्तर का कारण क्या है और दोनों में से प्रामाणिक विधि कौन सी है?

योगेश जोशी,
रायपुर

-- आगामी अंकों में ज्योतिष से संबंधित लेख माला के क्रमशः प्रकाशन से आपको इन सभी गहन प्रश्नों के विस्तृत उत्तर प्राप्त हो सकेंगे।

सम्पादक

प्रिय शिष्यों, साधकों,पाठकों,

इस बार गुरुदेव की आज्ञा से एक **''चेतना ध्वज''** हाथों में लिया है कि इस बार दीपावली विशेषांक को गांव - गांव , नगर- नगर में प्रत्येक घर में पहुंचा कर ही दम लेंगे, और हर बार की तरह इस बार भी विजयी होंगे ही।

<u>इसके लिए प्रत्येक साधक व शिष्य का कर्तव्य है कि</u>

१. अपने गांव व नगर की दीवारों पर बड़े - बड़े अक्षरों में लिखें-

'' भारत की श्रेष्ठतम आध्यात्मिक पत्रिका''
पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली
के आशीर्वाद से प्रकाशित मासिक
''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''
हाई कोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (राजस्थान)

२. शहर में किसी महत्वपूर्ण स्थान पर बड़ा सा **'' होर्डिंग ''** लगावें जिस पर उपरोक्त मैटर लिखे

३. प्रत्येक स्टॉल वाले से सम्पर्क कर पत्रिका के बारे में बताये

४. सिनेमा घर में इस प्रकार का विज्ञापन दें

व आपने जो कुछ इस संबंध में किया है उसका विवरण व संबंधित फोटो हमें ३१.१०.९३ तक भिजवा दें

<u>सम्पर्क</u>

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१ (राजस्थान) ♦

सम्पादकीय

आश्विन एवं कार्तिक, इन दो चैतन्य व साधनामय मासों का अवसर समक्ष आ ही गया। ये क्षण है जबकि किसी भी साधना में प्रवृत्त हुआ जाए, सफलता प्राप्त होती ही है। ये केवल उत्सवों के मास ही नहीं, वास्तव में तो साधना के माह हैं और साधना से ही आ सकता है जीवन में निरंतर उत्सव का भाव। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह महा लक्ष्मी विशेषांक प्रस्तुत किया जा रहा है। *जटिल अनुष्ठानों और लम्बी - लम्बी साधना पद्धतियों की अपेक्षा हमने पूज्यपाद गुरुदेव से प्राप्त इस सूत्र का उपयोग इस विशेषांक में किया है कि आज के युग के अनुकूल छोटी व तांत्रोक्त पद्धतियां ही गृहस्थ जीवन के लिए अधिक अनुकूल हैं।*

वर्षों पूर्व उनसे वार्तालाप के आधार पर उनके एक प्रमुख शिष्य ने जिन १०८ लक्ष्मी प्राप्ति के सूत्रों को लिपि बद्ध किया था उन्हें इस अंक में प्रस्तुत करते हुए हमें सर्वाधिक प्रसन्नता हो रही है। समाज के किसी भी वर्ग का किसी भी आयु का कोई भी साधक बिना किसी उलझाव के स्वयं ही निर्धारित कर सकेगा, अपने जीवन के अनुकूल साधना सूत्र, इनमें से ।

दीपावली उत्सव प्रकाश का पर्व है, किन्तु यह प्रकाश स्थायी हो सके इसके लिए साधना के दीपकों को जलाना ही पड़ता है, जिनके प्रकाश में फिर पूरे वर्ष भर महालक्ष्मी आह्लाद पूर्वक विचरण कर सके। यह पर्व केवल लक्ष्मी पूजन की परम्परा निभाने का पर्व नहीं वरन बहुत पूर्व से तैयारी कर **''महालक्ष्मी पर्व ''** मनाने का है क्योंकि महालक्ष्मी का ही तात्पर्य होती है लक्ष्मी के समस्त १०८ रूपों की साधना और जीवन में उनको प्राप्त करना।

जीवन में लक्ष्मी के सभी रूपों के संयुक्त प्रभाव से ही घटित हो सकती है, जीवन की **''श्री''** , वैभव और पूर्ण समृद्धि! दीपावली तो वर्ष का अद्भुत पर्व है। एक ओर घनी काली रात और दूसरी ओर *पूर्ण आभामय स्वरूप में षोडश श्रृंगार किए इस धरा पर महा लक्ष्मी का पदार्पण और फिर उनके पदार्पण से ही यह रात्रि बन जाती है साक्षात महारात्रि* -- - एक चैतन्य दिवस, इस बात को सूचित करता हुआ जब अंधकार की कालिमा सर्वाधिक घनी हो, तभी घटित होने के क्षण आते हैं जीवन में उत्सव के, परिवर्तन के। दीपावली ऐसे ही दरिद्रता रूपी अंधकार के समाप्ति का पर्व है। आशा, आभा और प्रकाश के दीपक जलाकर आत्म - चैतन्य होने का दिवस है।

आशा है पाठक इस अंक में दिए गये सूत्रों के आधार पर , साधनाओं के प्रकाश में अपना जीवन आलोकित कर सकेंगे। मैं, सम्पादक मण्डल एवं पत्रिका परिवार की ओर से शुभकामनाएं व्यक्त करता हूं।

पूज्यपाद गुरुदेव के मंगलमय आशीर्वाद की प्राप्ति तो आप सभी को जीवन में प्रतिक्षण है ही . . .

आपका

नंद किशोर श्रीमाली

अगला प्रधान मंत्री कौन ?

पिछले अंक में मैंने ज्योतिषीय दृष्टिकोण से कुछ नामों की चर्चा की थी और ग्रह गति के आधार पर यह विवेचन करने की कोशिश की थी कि अगला प्रधान मंत्री कौन हो सकता है।

अब मैं कुछ और नामों की चर्चा कर रहा हूं जिससे कि स्थिति स्पष्ट हो सके

अटल बिहारी वाजपेयी

अटल बिहारी वाजपेयी का लग्न तुला है और लग्न में शनि और दशम् भाव में राहु है। ये दोनों ही स्थितियां अनुकूल हैं और सबसे बड़ी बात यह है मंगल अपने आप में कारक ग्रह हो कर छठे स्थान पर पड़ा है और यदि अंतर दशा का अध्ययन किया जाय तो २४ मई १९९२ से इन को राहु महा दशा में बुध की अंतरदशा प्रारम्भ हुई है। इस विवेचन से यह तो स्पष्ट है कि इन की कुण्डली में राजयोग है और आने वाला समय इन के लिए अनुकूल भी है, परन्तु यह दशा और इसके आगे की दशा इतनी प्रबल नहीं है कि इनको भारत के सर्वोच्च सिंहासन पर बिठा सके। गोचर में शनि कुम्भ राशि पर गतिशील रहेगा और इनकी जन्मकुण्डली में चौथे स्थान में शनि बढ़कर पंचम स्थान पर हो जायेगा फलस्वरूप इन को लोकसभा में तो अनुकूलता प्राप्त होगी पर साथ ही साथ इनका स्वास्थ्य कमजोर रहेगा और वे उतनी क्षमता के साथ कार्य नहीं कर सकेंगे जो क्षमता इन दिनों आवश्यक है। इसके अतिरिक्त इनकी जन्म कुण्डली में तीसरे भाव में बुध और वृहस्पति दोनों ही एक साथ हैं, जो कि इनको धीमी गति से चलने वाला व्यक्ति बनाता है, अत्यंत ही सोच - समझ कर धीरे - धीरे और राजनीतिक दृष्टि से यह स्थिति अनुकूल नहीं कही जा सकती, उसमें तो तीव्रता और प्रबलता आवश्यक होती है।

ऐसी स्थिति में ये पार्टी में तो अपने महत्व की दृष्टि से उच्चस्तरीय रहेंगे, परन्तु जो ग्रह दशा का आंकलन बता रहा है वह यह है कि पार्टी में इनकी उपेक्षा होगी, इनकी बात को उतना महत्व नहीं दिया जायेगा जितना देना चाहिए और ग्रहों की स्थिति इन को प्रधान मंत्री बना सके, ऐसी संभावना प्रतीत नहीं होती।

शरद पवार

यह मराठा व्यक्तित्व महत्वपूर्ण ग्रह संयोगों को लेकर गतिशील है, इनकी कुण्डली में सूर्य की स्थिति महत्वपूर्ण है, जो कि इन को प्रखरता और प्रचण्डता देता है,इन को आगे बढ़ाने में सहायक है और मंगल का संयोग राजनीति में आगे बढ़ाने में सहयोग देगा।

परन्तु प्रश्न यह उठता है कि क्या आने वाले समय में क्या ऐसे ग्रह संयोग हैं कि ये प्रधान मंत्री पद पर पहुंच सकें। यदि सूक्ष्मता से अध्ययन किया जाय तो यद्यपि ११ नवम्बर से इनका समय थोड़ा अनुकूल आयेगा परन्तु मंगल एक प्रकार से देखा जाए तो इनके लिये विरोधी कार्य करेगा। निश्चय ही इनके साथ बहुत बड़ा विश्वासघात होगा और यह विश्वासघात इनके किये - कराये पर पानी फेर देगा। इसमें कोई दो राय नहीं कि आने वाले समय में ये निर्विवाद नेता होंगे परन्तु किसी मुकदमे के कारण इनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंच सकता है फलस्वरूप इनको प्रधान मंत्री पद की कुर्सी से अलग होना पड़ेगा या वहां तक पूरी क्षमता के साथ नही पहुंच पाएगे।

शनि भी इनके लिये विशेष अनुकूल नहीं रहेगा, स्नायविक दुर्बलता और मूत्राशय से संबंधित कुछ तकलीफें हो सकती है फलस्वरूप इनके प्रयत्नों में न्यूनता रहेगी। दो अवसरों पर तो लगभग ऐसी स्थिति बन जायेगी कि यह प्रधान मंत्री चुने जा रहे हैं परन्तु वापिस ये पीछे हटने के लिये मजबूर हो जायेंगें ग्रह संयोगो से यह भी लग रहा है कि आने वाले समय में फिर यह महाराष्ट्र की राजनीति छोड़ कर केन्द्रीय राजनीति में सक्रिय होंगे, प्रचण्डता के साथ आगे बढ़ेंगे, प्रधान मंत्री पद के लिये प्रमुख दावेदार होंगे परन्तु अगले दो सालों तक यह प्रधान मंत्री बने, ऐसा प्रतीत नहीं होता और इनकी जन्म कुण्डली में प्रधान मंत्री पद को योग क्षीण है, फिर भी यदि यह कुछ विशेष मंत्र प्रयोगों का उपयोग करें तो मंगल की स्थिति मजबूत कर यह अपने जीवन में सफलता पा सकते हैं, और सर्वोच्च पद पर पहुंच सकते हैं। फिलहाल तो यही कहा जा सकता है कि ग्रह संयोगों के अनुसार इनकी जन्म कुण्डली में आने वाले वर्षों में प्रधान मंत्री पद का योग नहीं के बराबर है।

श्री अर्जुन सिंह

अर्जुन सिंह की जन्म-कुण्डली में मंगल की स्थिति और राहु की स्थिति दोनों ही अनुकूल है साथ ही शनि का सम्बन्ध भी राजनीति के क्षेत्र में ऊंचाई पर उठाने में सक्षम है,परन्तु बृहस्पति और राहु का सम्बन्ध कमजार ह, जिसके कारण ये चार कदम आगे बढ़ते हैं तो दूसरे ही क्षण दस कदम पीछे भी सरक जाते हैं। कुल मिलाकर परिणाम यह होता है कि ये जहां पर खड़े होते हैं, वहीं पर खड़े रह जाते हैं। वह तीव्रता, वह आक्रमण करने की स्थिति नहीं आ पाती जो कि शीर्ष पद पर पहुंचने के लिए आवश्यक होती है।

आने वाले समय में कुम्भ का शनि इन के लिए विशेष सफलता दायक नहीं रहेगा, जो कि १२ अक्टूबर १९९३ से रहा है। यह शनि इन के साथ विश्वासघात करेगा, अत्यन्त निकट माने जाने वाले मित्र किनारा करने की कोशिश करेंगे और एक तरह से देखा जाय तो पार्टी में ही अपने - आप को अलग - थलग अनुभव करेंगे। १९९४ का वर्ष इनके लिए संघर्ष का वर्ष रहेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य कहा जा सकता है, हृदय से संबंधित कुछ समस्यायें आ सकती हैं। इन को पार्टी में महत्वहीन करने की कोशिश की जाएगी। इनके मित्र विश्वासघात करेंगे फलस्वरूप एक स्थिति ऐसी आएगी कि प्रधान मंत्री पद से ये मात्र एक फुट दूर रहेंगें तभी पीछे धकेल दिये जायेंगे। जो पद इन को प्राप्त होना चाहिए वह पद इन को प्राप्त नहीं हो पायेगा, अकारण शत्रु बन जायेंगे, व्यर्थ में विश्वास घातियों की फौज़ चारों तरफ खड़ी हो जायेगी, अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिए बहुत अधिक संघर्ष करना पड़ेगा।

क्या कोई नया व्यक्ति ही प्रधान मंत्री बनेगा?

ऊपर हमने कुछ नामों का विवेचन किया जो इस समय प्रधानमंत्री पद की दौड़ में शामिल हैं और इसके अलावा भी कुछ नाम ऐसे भी हैं जो कि प्रधानमंत्री पद पर पहुंच सकते हैं , यों पिछले कई वर्षों से राजनीति के जानने वालों के सम्पर्क में रहा हूं उनकी जन्म कुण्डलियों का अध्ययन भी किया हूं इसके अनुसार कुछ नाम मेरे सामने उभर कर स्पष्ट हो रहे हैं।

शंकर राव चह्वाण

वर्तमान में जो गृहमंत्री है उनकी कुण्डली में सर्वाधिक प्रखर राहु है और मंगल ने बराबर उनको सहयोग दिया है, जिसकी वजह से ये एक सामान्य स्तर से काफी ऊंचाई पर उठे हैं। आने वाले समय में राहु की स्थिति अपेक्षाकृत अनुकूल बनेगी और १२-१०-९३ से शनि भी इनके लिये अनुकूल आ जायेगा जो कि राहु को सहयोग प्रदान करेगा और यह स्थिति प्रधानमंत्री बनने के लिये सर्वथा अनुकूल है। एक प्रधानमंत्री के लिये जिन ग्रह संयोगों की आवश्यकता होती है, वह सब इनकी कुण्डली में है और यह श्रेष्ठ समय इनकी कुण्डली में २२ अक्टूबर ९२ से शुरू हुआ है और अगले दो वर्षों तक रहेगा बृहस्पति, तुला राशि का होने का कारण इनके मार्ग में बहुत अधिक रोड़े अटकायेगा।

जो जन्म कुण्डलियां मेरी दृष्टि से गुजरी हैं उनमें तो किसी कि कुण्डली इतनी सशक्त नहीं है कि वह प्रधान मंत्री पद पर पहुंच सके, इस लिए जैसा कि मैंने बताया कोई ऐसी ही कुण्डली या कोई ऐसा ही व्यक्तित्व जिसकी जन्म कुण्डली मेरी दृष्टि से नहीं गुजरी हो, हो सकता है वह प्रधान मंत्री बन जाय, परन्तु जिन नामों का मैंने विवेचन किया है उनमें से किसी भी कुण्डली में ऐसी प्रखरता और तेजस्विता नहीं है जो उन्हें प्रधान मंत्री पद तक पहुंचा सके । यह बात तो निश्चित है कि वर्तमान प्रधान मंत्री को स्वेच्छा से अपना पद त्याग करना पड़ेगा **परन्तु उनके स्थान पर जो नाम मैंने बताये हैं या जिन नामों की मैंने चर्चा की है और इन्हीं नामों की चर्चा प्रत्येक भारतीय नागरिक के जन मानस में है और इनमें से प्रत्येक नेता इस बात के लिए प्रयत्न-शील है कि वह प्रधान मंत्री पद पर पहुंचे, मगर निकट भविष्य में उनका प्रधान मंत्री पद पर पहुंचना ग्रह दशा के अनुसार संभव नहीं है, हो सकता है कोई नया ही व्यक्तित्व प्रधान मंत्री पद पर दावेदार हो और उस पद को सुशोभित करेगा, ऐसा ज्योतिष गणना से स्पष्ट हो रहा है।**

-- दिव्यचक्षु

आत्म निवेदन

न तातो न माता न बन्धुर्न भ्राता, न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता ।
न जाया न वित्तं न वृत्तिर्ममैवं , गतिस्त्वं मतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। १।।
भवाब्धावपारे महादुःखभीरू, प्रपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहम्, गतिस्त्वं मतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। २ ।।
न जानामि दानं न च ध्यानयोगं, न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगम्,गतिस्त्वं मतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। ३ ।।
न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं, न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्ति व्रतं वापि मातर्गतिस्त्वंमतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। ४ ।।
कुकर्मी कुसंगी कुबुद्धिः कुदासः, कुलाचारहीनः सदाचारहीनः ।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहम्, गतिस्त्वं मतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। ५ ।।
प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं, दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये , गतिस्त्वं मतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। ६ ।।
विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे , जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा ऽहं भजामि , गतिस्त्वं मतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। ७ ।।
अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो, महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्राः ।
विपत्ति प्रविष्टः सदाऽहं भजामि, गतिस्त्वं मतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। ८ ।।

।। इति श्रीमच्छंकराचार्य कृतं भवानी लक्ष्म्याष्टकं सम्पूर्णम्।।

१०८

सौ टंच खरे लक्ष्मी के सफल सिद्ध प्रयोग

जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता और सम्पन्नता- श्रेष्ठता लक्ष्मी की प्राप्ति से ही संभव है, जो व्यक्ति दरिद्री हो और जिस व्यक्ति के घर में लक्ष्मी का अभाव है, वह सभी दृष्टियों से कमजोर और अशक्त माना जाता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में चाहते हुए भी प्रगति नहीं कर पाता।

इस दीपावली के अवसर पर मैं भगवती लक्ष्मी से संबंधित ऐसे प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूं जो विविध सामग्री और उपकरणों से संबंधित है और यह सभी प्रयोग परीक्षित हैं, आजमाये हुये हैं, यदि श्रद्धा और विवेक से इन मंत्र सिद्ध प्राण - प्रतिष्ठा युक्त सामग्री के साथ बताये हुए प्रयोग सम्पन्न करें तो निश्चय ही आने वाले समय में आर्थिक उन्नति होती है, जीवन में सफलता प्राप्त होती है और उसके घर से दरिद्रता समाप्त होने की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

मैं अपने जीवन में आजमाये हुए अनुभव किये हुए उन प्रयोगों को दे रहा हूं जो अपने आप में श्रेष्ठ और अद्वितीय है।

श्री यंत्र -

१. **श्री यंत्र** तो लक्ष्मी का आधारभूत यंत्र है और अपने आप में अत्यंत ही विलक्षण है। जिसके घर में श्री यंत्र स्थापित होता है, उसके घर में दरिद्रता आ ही नहीं सकती।

२. श्री यंत्र को पीले कपड़े पर स्थापित कर सामने अगरबत्ती और दीपक लगाकर नित्य लक्ष्मी मंत्र **" ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै नमः "** की एक माला मंत्र जप करें तो उसके जीवन में निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहती है।

३. श्री यंत्र को दीपावली की रात्रि में पूजा स्थान में रखकर उसकी पूजा करें और फिर लाल वस्त्र में बांध कर जहां रुपये पैसे रखते हों, वहां स्थापित कर दें तो निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहती है।

४. श्री यंत्र को नित्य पूजा स्थान में रखे रहें और दीपावली की रात्रि को उसके सामने १०८ दीपक लगा कर यदि **कमलगट्टे की माला** से निम्न मंत्र की अगर एक माला मंत्र जप करें तो तत्क्षण आर्थिक उन्नति की सम्भावनाएं बढ़ जाती हैं।

मंत्र - " ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमल वासिन्यै नमः "

५. यदि श्री यंत्र अपने दुकान में स्थापन कर दें तो निरन्तर व्यापार वृद्धि होती रहती है।

कनकधारा यंत्र -

१. यह यंत्र यदि घर में स्थापित होता है तो कई तरह के आर्थिक श्रोत बनते हैं और आर्थिक उन्नति प्रारम्भ हो जाती है।

२. यदि कनकधारा यंत्र घर में है और दीपावली की रात्रि को उसके चारों ओर ११ दीपक लगा कर निम्न मंत्र **" ॐ ह्रीं श्रीं कनकधारायै श्रीं ह्रीं नमः "** का ११ बार उच्चारण करें तो निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहती है।

३. कनकधारा यंत्र को दुकान में रखने से व्यापार में बेतहाशा वृद्धि होने लगती है।
४. कननधारा यंत्र को दुकान में उस स्थान पर रखें जहां ग्राहक की दृष्टि पड़ती हो तो निरन्तर व्यापार वृद्धि होती रहती है।
५. पूर्ण पारिवारिक उन्नति के लिये कनकधारा यंत्र को घर में स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक है।

पर यह ध्यान रहे कि कनकधारा यंत्र मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिये।

लक्ष्मी यंत्र -

१. लक्ष्मी यंत्र को यदि बुधवार के दिन घर में स्थापित करें तो निश्चय ही आर्थिक उन्नति होती ही है।
२. यदि लक्ष्मी यंत्र को बांये हाथ में रख कर दाहिने हाथ से उस पर **"ॐ श्रीं लक्ष्म्यै नमः "** मंत्र से एक - एक चावल १०८ बार रखें और उच्चारण करें तो घर में लक्ष्मी का आगमन प्रारम्भ हो जाता है।
३. लक्ष्मी यंत्र पर यदि कोई साधक दीपावली की रात्रि को २१ गुलाब के पुष्प रखकर **" ॐ श्रीं श्रियै नमः "** मंत्र का जप करे तो दरिद्रता समाप्त होती है।
४. घर में लक्ष्मी यंत्र का स्थापित होना ही सभी दृष्टियों से उन्नति होने की स्थिति बनती है।
५. यदि लक्ष्मी यंत्र अपने पास निरन्तर रखें तो जीवन में व्यक्ति जो चाहता है, वह होता ही है।

पारद गणपति -

१. पारद गणपति ऋद्धि - सिद्धी के अधिकारी देवता माने गये हैं अतः बुधवार के दिन इनकी स्थापना ही पूर्ण सफलता की सूचक है।
२. यदि पारद गणपति को बुधवार के दिन अपनी दुकान में स्थापन करें तो निरन्तर वृद्धि होती रहती है।
३. पारद गणपति पर नित्य ११ पुष्प चढ़ायें और इस प्रकार ११ दिन करें तथा **"ॐ गं गणपतयै नमः"** की एक माला मंत्र जप करें तो सभी विघ्नों का नाश होता है और दरिद्रता समाप्त होती है।
४. यदि घर में पारद गणपति स्थापित हो और किसी बुधवार को उस पर गुलाब का एक फूल चढ़ाया जाय तथा **" ॐ ह्रींश्रीं गं गणपतयै नमः "** मंत्र की एक माला मंत्र जप किया जाय और फिर थोड़ा सा इत्र रुई में लगाकर अपने कानों में लगाये तो उसकी सर्वत्र विजय होती है।
५. यदि पारद गणपति के सामने **" ॐ गणायै पूर्णत्व सिद्धिं देहि देहि नमः "** मंत्र का जप एक माला करें और इस प्रकार ११ दिन करें तो घर में अटूट धन प्राप्त होने की संभावनायें बनती है।

श्वेतार्क गणपति -

१. श्वेतार्क गणपति का तात्पर्य है -- सफेद आक से निर्मित गणपति , जिसके घर में श्वेतार्क गणपति है उसके घर में दरिद्रता रह ही नहीं सकती।
२. श्वेतार्क गणपति के सामने यदि **" गं गणपतयै नमः "** मंत्र की एक माला मंत्र जप किया जाय, तो निश्चय ही उसके जीवन में उन्नति होती रहती है।
३. धन - धान्य सुख- सौभाग्य ऐश्वर्य और प्रसन्नता के लिये श्वेतार्क गणपति से श्रेष्ठ और कोई विग्रह होता ही नहीं है, जिसे घर में स्थापित किया जाय।
४. जिसके घर में दरिद्रता हो और प्रयत्न करने पर भी आर्थिक उन्नति नहीं हो रही हो, उसे अवश्य ही घर में श्वेतार्क गणपति स्थापित करना चाहिये।
५. जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण उन्नति सौभाग्य, श्रेष्ठता और पूर्णता प्राप्त करने के लिये श्वेतार्क गणपति अत्यन्त अद्वितीय है।

विजय गणपति :

१. धातु निर्मित विजय गणपति घर में रखने से मनुष्य को जीवन के सभी क्षेत्रों में विजय प्राप्त होती है।
२. विजय गणपति घर में स्थापित होने से शत्रुओं का भय निश्चित रूप से समाप्त हो जाता है।
३. विजय गणपति का तात्पर्य है जीवन में पूर्ण उन्नति और मनोवांछित सिद्धि एवं सफलता प्राप्त होना।

देवताओं को भी दुर्लभ है

इन्द्र कृत सहस्त्र लक्ष्मी स्तोत्र

जीवन की सार्थकता छुपी है इस ज्ञान में, कि किस प्रकार से हम कम से कम समय में ही जीवन के सभी प्रारम्भिक लक्ष्य प्राप्त कर लें। यह सच है कि इच्छाओं का तो कोई अन्त नहीं, लेकिन इस जीवन की मूलभूत इच्छाएं और उन्हें इच्छाएं ही क्यों कहें वे तो जीवन की आवश्यकताएं होती है चाहे वह अच्छे वस्त्र की बात हो, या अच्छे आवास की, या फिर सुख - सुविधा पूर्ण जीवन के किसी भी अंग की।

कौन सा उपाय करें, कौन सी साधना करें, ऐसा क्या करें कि हमारी साधना निश्चित रूप से सफल हो, हमें लम्बे लम्बे अनुष्ठान न करने पड़े, हमें जटिलताओं में न उलझना पड़े - ये सभी प्रश्न साधक के मन में उमड़ते घुमड़ते रहते हैं, जहां तक साधनाओं की बात है वहां प्रत्येक साधना अपने ढंग से महत्व पूर्ण होती है और केवल सद्गुरुदेव ही व्यक्ति के संस्कारों को समझ कर उसे उचित साधना या प्रयोग का ज्ञान दे सकते हैं, यह अवश्य हो सकता है कि कोई साधना कम फलदायक हो और कोई पूर्ण सफलता दायक हो, लेकिन असफल तो कोई साधना होती ही नहीं।

पिछले अंक में एक महत्वपूर्ण तथ्य स्पष्ट करते हुए धन प्राप्ति की शक्ति साधना दी गई थी कि जीवन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष को पकड़ा जा सकता है तो केवल शक्ति के माध्यम से, बिना शक्ति के अर्थ प्राप्ति संभव ही कैसे? बिना पौरुष के लक्ष्मी का आगमन हो भी तो कैसे? यही सूत्र साधना का आधार बना देवराज इन्द्र द्वारा रचित इस साधना में, जब उन्होंने भगवती महा लक्ष्मी को दस महाविद्याओं से परे एक महाविद्या मानकर उनकी सर्वथा नूतन ढंग से साधना सम्पन्न की, यों तो दस महाविद्याओं में कमला महाविद्या साक्षात रूप से भगवती जगदम्बा की ही महालक्ष्मी स्वरूप में साधना है लेकिन देवराज इन्द्र कृत यह प्रयोग तो सर्वथा अनूठा ही है, जिसकी प्रामाणिकता और तेजस्विता अनुभव कर सके बाद के साधक और योगीगण जीवन में इसे उतार कर।

‘ क्या देवताओं के अधिपति इन्द्र को कोई साधना करने की आवश्यकता है? हां ! इन्द्र के तो जीवन का आधार ही है भगवती महालक्ष्मी, यह दुर्लभ साधना जब उन्होंने भगवती महालक्ष्मी को एक महाविद्या मानकर उनकी सहस्त्र रूप में स्तुति की, तभी . . . ’

यह एक साधना ही नहीं है, यह तो साधना के समुद्र में उतर कर देवराज इन्द्र का किया एक मंथन है जिससे भगवती महालक्ष्मी का सर्वथा नवीन रूप उभर कर सामने आता है यह सम्पूर्ण रूप से भगवती महा लक्ष्मी का मौलिक व पूर्ण चिन्तन है और चिन्तन के साथ - साथ देह में स्थापन भी, जो कि साधना का आधार होता है। साधना का तो सारा आधार है कि देव या देवी का अपने शरीर में स्थापन हो सके। जहां महालक्ष्मी का इस देह में स्थापन हो जाय वहां दरिद्रता रहेगी भी तो किस स्थान पर?

यह एक स्तोत्र है लेकिन स्तोत्र से भी अधिक एक साधना है और साधना से भी अधिक है जीवन का सौभाग्य। किसी भीं माह में पड़ने वाले पुष्य नक्षत्र के दिन की जाने वाली इस साधना में जटिलता तो कुछ है ही नहीं, पुष्य नक्षत्र से इसका विशेष सम्बन्ध होने के कारण यह एक पुष्टि दायक

साधना है, चाहे वह जीवन का कोई भी पक्ष क्यों न हो। पत्नी के स्वास्थ्य, बच्चों की पढ़ाई, अतिथियों का सत्कार, आकस्मिक खर्चों से लेकर आमोद - प्रमोद और सैर - सपाटे सहित मनोरंजन के सभी पक्ष तो सिमट आते हैं जीवन शब्द के कहते ही।

साधना विधि

किसी भी पुष्य नक्षत्र के दिन प्रातः स्नान कर पीले वस्त्र पहन कर पूर्व की ओर मुख कर बैठे और पहले से ही प्राप्त महालक्ष्मी के चित्र को (जो फ्रेम में मढ़ा हो) स्थापित कर उस पर कभी भी प्रयोग में न लाई गयी कमलगट्टे की माला पहना दें, भगवती महालक्ष्मी के चरणों में केसर की बिन्दी लगाये और अक्षत समर्पित करें, घी का दीपक एवं अगरबत्ती से वातावरण को मंगलमय बनाएं तथा एक ओर कलश स्थापित कर उसके मुख पर मौली बांधे, आम का पल्लव अथवा किसी पवित्र वृक्ष की पांच पत्तियों पर नारियल स्थापित कर इस का मंगल घट के रूप में धूप - दीप से पूजन करें। भगवती महालक्ष्मी के चित्र के सामने चावल की एक छोटी सी ढेरी बना कर लघु नारियल स्थापित करें और बगल में एक ढेरी पर श्री - पात्र की स्थापना करें। हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि "मैं (अपना नाम व गोत्र बोलें) इस श्रेष्ठ पुष्य नक्षत्र पर जीवन की सम्पूर्ण रूप से पुष्टि के लिए यह दुर्लभ साधना सम्पन्न कर रहा हूं" ऐसा कहकर जल जमीन पर छोड़ दे और पुनः हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग पढ़ने के पश्चात पुनः भूमि पर छोड़ दें।

विनियोग

ॐ अस्य श्री सर्व महाविद्या महारात्रि गोपनीय मंत्र रहस्याति रहस्य मयी पराशक्ति श्री मदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी सहस्राक्षरी सहस्र रूपाणि महाविद्याया श्री इन्द्र ऋषिं गायत्र्यादि नाना छन्दांसि, नवकोटि शक्तिरूपा श्री मदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी देवता श्री मदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी प्रसादादखिलेष्टार्थ जपे पाठे विनियोगः।

उपरोक्त लिखित उच्चारण कर फिर चित्र के सामने भगवती लक्ष्मी को श्रद्धा युक्त प्रणाम कर निम्न महाविद्या मंत्र का २१ बार उच्चारण करे --

सहस्राक्षरी सिद्ध लक्ष्मी महाविद्या मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौ श्रीं ऐं ह्रीं क्लीं सौः सौः ॐ ऐं ही क्लीं श्रीं जय जय महा लक्ष्मी, जगदाद्ये, विजये, सुरा सुर त्रिभुवन निदाने, दयांकुरे सर्व देव तेजो रूपिणी विरंचि संस्थिते, विधि वरदे, सच्चिदानन्दे, विष्णु देहावृते, महामोहिनी, नित्य वरदान तत्परे, महा सुधाब्धि वासिनि, महा तेजो धारिणि सर्वाधारे, सर्व कारण कारिणे, अचिन्त्य रूपे, इन्द्रादि सकल निर्जर सेविते, साम गान गायन परिपूर्णोदय कारिणी, विजये, जयन्ति, अपराजिते, सर्व सुन्दरि, रक्तांशुके, सूर्य कोटि संकांशे, चन्द्र कोटि सुशीतले, अग्निकोटि दहन शीले यम कोटि वहन शीले ॐ कार नाद बिन्दु रूपिणि, निगमागम भागदायिनि, त्रिदश राज्य दायिनी, सर्व स्त्री रत्न स्वरूपिणि, दिव्य देहिनि, निर्गुणे सगुणे, सदसद रूप धारिणी, सुर वरदे, भक्त त्राण तत्परे, बहु वरदे, सहस्राक्षरे, अयुताक्षरे, सप्त कोटि लक्ष्मी रूपिणि, अनेक लक्ष लक्ष स्वरूपे अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायिके, चतुर्विंशति मुनि जन संस्थिते, चतुर्दश भुवन भाव विकारिणे, गगन वाहिनि, नाना मंत्र राज विराजिते सकल सुन्दरी गण सेविते, चरणारविन्द्र, महात्रिपुर सुन्दरि, कामेश दयिते, करुणा रस कल्लोलिनि, कल्प वृक्षादि स्थिते, चिन्ता मणि द्वय मध्यावस्थिते, मणि मन्दिरे निवासिनी, विष्णु वक्षस्थल कारिणे, अजिते, अमले, अनुपम चरिते, मुक्ति क्षेत्राधिष्टायिनी, प्रसीद प्रसीद, सर्व मनोरथान पूरय पूरय, सर्वारिष्टान छेदय छेदय सर्व ग्रह पीड़ा ज्वराग्र भय विध्वंसय विध्वंसय, सर्व त्रिभुवन जातं वशय वशय, मोक्ष मार्गाणि दर्शय दर्शय ज्ञान मार्ग प्रकाशय प्रकाशय, अज्ञान तमो नाशय नाशय, धन धान्यादि वृद्धिं कुरु कुरु, सर्व कल्याणानि कल्पय कल्पय मां रक्ष रक्ष, सर्वापदभ्यो निस्तारय निस्तारय, वज्र शरीरं साधय साधय ह्रीं सहस्राक्षरी सिद्ध लक्ष्मी महा विद्यायै नमः।

पाठक स्वयं इस मंत्र को पढ़े और देखे कि यह मंत्र कितना अधिक तेजस्वी और महत्वपूर्ण है, इसे दिन में केवल २१ बार मंत्र का उच्चारण करना है। इस एक दिवसीय साधना की पूर्णता पर साधक श्रीपात्र के सम्मुख दूध का बना नैवेद्य अर्पित करें और विधि विधान से भगवती महालक्ष्मी की आरती सम्पन्न करें। श्री पात्र को अपने तिजोरी में अथवा पीले कपड़े में बांध कर अपने पूजा स्थान में स्थापित करें कमल गट्टे की माला भगवती महालक्ष्मी के चित्र पर ही चढ़ी रहने दें प्रत्येक माह के पुष्य नक्षत्रों की सूची नीचे दी जा रही है

६.११.६३	(शनिवार)
४.१२.६३	(शनिवार)
३१.१२.६३	(शुक्रवार)
२१.१.६४	(गुरु पुष्य सर्वार्थ सिद्धि योग)

दीपावली की रात्रि के लिये विशेष

सौभाग्य लक्ष्मी प्रयोग

' . . . सौभाग्य में जो कुछ लिखा हो उसे पाने के लिए भी साधना का बल लेना ही पड़ता है, क्योंकि कई बार भाग्य में लिखा नहीं मिल पाता - ग्रह दोष से, पैतृक दोष से, पूर्व जन्म की बाधाओं से या फिर आए दिन किए और कराए जाते तांत्रिक प्रयोगों से . . .
इन सभी का निराकरण ही तो है सौभाग्य लक्ष्मी, दीपावली की रात्रि में तांत्रोक्त ढंग से साधना कर . . . '

केवल कार्तिक माह का ही नहीं पूरे वर्ष का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पर्व दीपावली, जिसकी प्रतीक्षा तो गृहस्थ के साथ - साथ साधक और सन्यासी भी आतुरता से करते रहते हैं। उसको मनाने का अवसर सम्मुख उपस्थित हो गया है

यह पर्व किन्तु मात्र रात्रि जागरण करके ही न मनाएं, लक्ष्मी के आगमन में द्वार खोलकर राह देखने में ही रात्रि न व्यतीत हो, इसके लिए तो अभी से संकल्प-बद्ध होना ही पड़ेगा।

सौभाग्य पर्व होगा यह -

केवल एक काल रात्रि ही नहीं, केवल महारात्रि ही नहीं, यह तो सांक्षात पर्व बन पड़ी है, इस बार अपने मुहूर्त और योग के कारण जबकि स्वाती नक्षत्र पर सौभाग्य योग का संयोग होने से चैतन्य मुहूर्त निर्मित हो रहा है, जिसमें की गई साधना सम्पूर्णता को प्राप्त कराने वाली होगी ही। तांत्रोक्त साधनाओं के लिए तो यह दिवस यों ही सिद्ध पर्व है और उसमें भी यदि दैववश ऐसे सौभाग्य योग का भी सम्मिलन हो रहा हो तो कहना ही क्या।

सौभाग्य का उदय ही एक प्रकार से देखा जाय तो मानव जीवन की प्रथम आवश्यकता है। सौभाग्य के अभाव में ही व्यर्थ रह जाती है सारी योजनाएं सारा परिश्रम , सारी भाग - दौड़ और कुण्ठित हो जाती है व्यक्ति की बुद्धि और बुद्धि के साथ - साथ मन इसी को समाप्त करने की क्रिया पूर्ण रूप से सम्पन्न होगी इस महा पर्व पर दुर्भाग्य - लिपि मिटाने की क्रियाः-

हां ! दुर्भाग्य की लिपि मिटायी जा सकती है काल के सामने चुनौती से खड़े होकर, काल के अस्तित्व को नकारा जा सकता है, उचित साधना के बल को लेकर।

और वह सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है जो भाग्य में लिखा हो या न लिखा हो। भाग्य में जो कुछ लिखा है उसे प्राप्त करने के लिए भी साधना का बल होना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि कई बार प्रारब्ध में बहुत कुछ लिखा होते हुए भी नहीं मिल पाता है - ग्रह दोष से, पैतृक दोष से, पूर्वजन्म कृत बाधाओं से या किसी के द्वारा करा दिए गए किसी बंधन प्रयोग अथवा तांत्रिक प्रयोग से और सारा सौभाग्य होते हुए भी व्यक्ति अभागों की तरह से जीवन व्यतीत करता रहता है। जीवन का ऐसा दुर्भाग्य भी मिटाना है - इसी दुर्लभ सौभाग्य पर्व पर। दुर्भाग्य को

सौभाग्य में बदलने की क्रिया, दुर्भाग्य को सौभाग्य में परिवर्तित करने का उपाय है, तो बस एक, और वह है सौभाग्य लक्ष्मी साधना। सौभाग्य लक्ष्मी ही आधार है गृहस्थ के सम्पूर्ण जीवन का और उसके अभाव में फिर व्यर्थ है सारा रूप यौवन, ज्ञान, बुद्धि और बल। धन के अभाव में तो इन सभी का कोई अर्थ ही नहीं। अभाव ग्रस्तता के बाद जीवन में कोई सौन्दर्य ही नहीं, तेजस्विता नहीं, बल होते हुए भी निर्बलता से भरा जीवन। जैसे फूल के खिलने के बाद उसे जल न मिला हो, सौभाग्य लक्ष्मी के अभाव में तो फिर यह सब ऐसे ही मुरझा जाते हैं।

इसी को समाप्त करने का प्रयास है तांत्रोक्त विधि से सौभाग्य लक्ष्मी की प्रामाणिक साधना। सौभाग्य लक्ष्मी की साधना किये बिना गृहस्थ साधक के जीवन में सुख का आगमन संभव ही नहीं और इस वर्ष जबकि दीपावली पर ही निर्मित हो रहा है सौभाग्य लक्ष्मी साधना का सिद्ध मुहूर्त तब तो इसे त्यागना अथवा इसमें कोई प्रमाद करना द्वार पर खड़े सौभाग्य को लौटा देना है। अनेक प्रयोगों और लक्ष्मी के सहस्त्र स्वरूपों में से अवसर और ज्योतिषीय गणना से प्राप्त लक्ष्मी के इस स्वरूप की आराधना करने का अर्थ है कि अपने आप को कई द्वंद्वों से मुक्त कर देना क्योंकि सामान्यतः यह निर्णय करना कठिन होता है कि किस साधक के लिए किस लक्ष्मी की साधना सर्वाधिक अनुकूल होगी। किन्तु सौभाग्य लक्ष्मी का स्वरूप तो अपने आप में निर्विवाद रूप से प्रत्येक साधक के लिए उपयोगी ही नहीं प्रथम पूज्य है।

लक्ष्मी के इस स्वरूप में शंख, चक्र, गदा, पद्म मूल रूप से है। इसमे प्रत्येक वस्तु का विशेष प्रतीकात्मक महत्व है। शंख शुभता का प्रतीक है जिसका तात्पर्य है कि धन को शुभ एवं मंगल कार्यों में ही प्रयोग किया जाना चाहिए। चक्र गति का प्रतीक है जिस प्रकार चक्र निरन्तर चलता रहता है उसी प्रकार आय का साधन निरंतर चलते रहना चाहिए, जिसने अपनी गति रोक दी उसके पास लक्ष्मी का आगमन रुक जाता है। गदा कर्म का प्रतीक है जो सही कर्म करेगा, निश्चित मार्ग पर चलेगा उसे ही लक्ष्मी प्राप्त होती है। कमल सबसे सुन्दर प्रतीक है कमल कीचड़ से उत्पन्न होता है लेकिन उस पर एक भी दाग नहीं लगता है, इसी प्रकार गृहस्थ को संसार में रहते हुए लक्ष्मी की कामना करते हुए स्वच्छ खिला रहना चाहिए

जीवन के समस्त सुख अलग - अलग करके नहीं देखे जा सकते, इनके सम्पूर्ण स्वरूप से ही सौभाग्य लक्ष्मी का निर्माण होता है किसी एक पक्ष की साधना कर, किसी एक बाधा की शांति कर, जीवन को पूर्ण आनन्द युक्त नहीं बनाया जा सकता और यदि एक - एक सुख के प्रति साधनारत हो तो जीवन का एक बहुत बड़ा भाग निकल जायेगा, इसके लिए तो इस बार मन में कोई द्वंद्व नहीं रखना है और न समय ही चूकना है क्योंकि हम इस बार प्रस्तुत कर रहे हैं सौभाग्य लक्ष्मी साधना रहस्य। पूर्ण रूप से एक - एक सामग्री को प्राण प्रतिष्ठित और चैतन्य कर, जिस पैकेट में एकत्र किया है उसका नाम है **'सौभाग्य लक्ष्मी साधना पैकेट'** और इसी के साथ संलग्न रहेगी वह गोपनीय विधि जिसके द्वारा सौभाग्य लक्ष्मी का पूर्ण स्थापन आपके साधना स्थान पर हो सके और जिसकी आभा से पूरे घर में सुख सौभाग्य का प्रकाश आ सके।

ऋण, शत्रु, गृह कलह, मुकदमें बाजी, अनायास झगड़े, अभाव, धन का आगमन न होना, बीमारी और आकस्मिक विपदाओं में धन का निकल जाना, मानसिक अशांति, घर में बिखराव, कार्य में मन न लगना यह सब अलक्ष्मी के ही रूप हैं, जिनसे आती है जीवन में दरिद्रता और तनाव और इनके निराकरण का भी उपाय सौभाग्य लक्ष्मी ही है।

इस वर्ष दीपावली का पूजन १३.११.९३ को है आपको घर बैठे सभी सामग्री और सौभाग्य लक्ष्मी पूजन का पूर्ण विधि - विधान लक्ष्मी कृपा का पूर्ण फल प्राप्त हो, इसका आग्रह हमारे पास साधकों और पाठकों के पत्रों के माध्यम से आरम्भ हो गया था जिसको ध्यान में रखते हुए आप सभी को महालक्ष्मी - सौभाग्य लक्ष्मी साधना पैकेट भेजने की व्यवस्था की जा रही है जिसमें बारह साधना सामग्रियों के साथ - साथ पांच पत्रिकाओं का पैकेट निः शुल्क प्रदान किया जा रहा है जो पूज्यपाद गुरुदेव की ओर से अपने समस्त शिष्यों को दीपावली के अवसर पर दिया गया आशीर्वाद है।

साधना पैकेट विवरण

१. सौभाग्य लक्ष्मी महायंत्र
२. कुबेर यक्ष
३. भाग्य चिक्लन
४. सौभाग्य नारियल
५. सौभाग्य चिरमी
६. सौभाग्य किन्नर
७. सौभाग्य दीपन
८. सौभाग्य पेकल
९. सौभाग्य किलेन
१०.सौभाग्य पहनान
११.सौभाग्य बेहुत
१२.सौभाग्य मोरहुन

इस दुर्लभ पैकट की प्राप्ति उन्हीं साधकों को विधि विधान सहित प्राप्त हो सकेगी जिसका पत्र अथवा फोन हमेंसमय रहते ही प्राप्त होगा। इस दुर्लभ पैकट की वी.पी. पी. द्वारा प्राप्ति के लिए सम्पर्क सूत्र -

सम्पर्क
मंत्र शक्ति केन्द्र
डॉ. श्रीमाली मार्ग,
हाई कोर्ट कॉलोनी
जोधपुर, ३४२००१
(राज.) ,फोनः ०२९१-३२२०९

मेरे जीवन का एक स्वर्णिम पृष्ठ

परम पूज्य गुरुदेव के साथ एक दिन

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्टाय संभवाम्यात्ममायया ।

मैं अजन्मा और अविनाशी-स्वरूप हूं, इसलिए मेरा वार-बार जन्म नहीं होता परन्तु समस्त प्राणियों को चेतना देने के लिए और उनको पूर्णता देने के लिए अपनी योग माया अथवा प्रकृति का आश्रय लेकर मैं गर्भ से प्रकट होता हूं. . .

- गीता - ४-११

क्या होती है सद्गुरुदेव की महिमा, क्या होती है उनके न रहने पर कोई कसक और कसक से भी ज्यादा आंखों से लेकर दिल तक में उतर गया एक सूनापन . . .

एक उच्च कोटि के साधक व सन्यासी **योगी राज विश्वबोधानन्द** द्वारा प्रस्तुत ऐसा ही अनूठा भाव पूर्ण चित्रण . . .

पूज्यपाद गुरुदेव के सानिध्य में बीते एक दिन की झलकी और रोमांचक प्रत्यक्षानुभूतियों का उद्घाटन . . .

क्या भूल सकता हूं मैं कभी २० फरवरी १९८७ के उस दिन को? वही तो दिन था जब पूरे ३९ वर्षों बाद मैं उनके समक्ष उपस्थित होकर उनका सदेह दर्शन प्राप्त कर रहा था। चालीस वर्ष पूर्व उन्होंने पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय परम हंस स्वामी सच्चिदानन्द जी की आज्ञा मिलने पर भाव - विह्वल होकर छोड़ा था पवित्र सिद्धाश्रम का पावन स्थल, इस धरा पर अपने पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से अध्यात्म की लुप्त हो रही धारा को पुनः गतिशील करने के लिए। कहने को तो मानसिक रूप से टैलिपेथी के माध्यम से वे हम सभी को साधना की बारीकियां, ज्ञान और चिन्तन देते ही रहे, लेकिन मेरे ही नहीं सिद्धाश्रम के प्रत्येक योगी के मन में कोई सूनापन उतर आया था और उनके न रहने से जो रिक्तता उत्पन्न हुई थी उसकी भरपाई न तो साधना कर पा रही थी, न सिद्धियां और न ही विभिन्न देव दर्शन।

इन्हीं उहापोहों में उलझ कर एक दिन मैं ठान बैठा कि कम से कम एक दिन तो आपके साथ रहूं, मुझे ऐसा सौभाग्य दें। आज छः वर्ष बाद भी मुझे उनका दृढ़ता पूर्वक मना कर देना स्मरण में आता है कि तुम उस संसार के छल - कपट , घृणा और द्वेष के वातावरण में एक पल भी टिकना नहीं चाहोगे, लेकिन मेरा बाल हठ उन्हें अपना निर्णय बदलने के लिए बाध्य कर दिया या शायद नित्य **लीला विहारणी जगतजननी** की इच्छा भी इसमें छिपी थी कि

मैं ही नहीं मेरे माध्यम से सिद्धाश्रम के सभी योगीजन के मध्य स्पष्ट हो सके कि इस धरा पर अध्यात्म का प्रचार - प्रसार करना कितना अधिक दुष्कर और प्रतिक्षण विषपान करने जैसा कार्य है। मैंने जिस रात्रि में टैलिपैथी के द्वारा उनसे आज्ञा प्राप्त की, उसके दूसरे ही दिन सुबह आकाश गमन सिद्धि द्वारा शून्य मार्ग से जोधपुर में उनके निवास के समक्ष उपस्थित था, मंद रश्मियां अपने हल्के आलोक से वातावरण को आभामय कर रही थी। वह मंद प्रभा और पवन की थिरकन पूरे नगर को ही सिद्धाश्रम तुल्य दिखा रही थी, दूर - दूर तक संगीत की स्वर लहरियों की तरह उतरती - गिरती पथरीली पहाड़ियों की चोटियों में भी कोई संगीत सा घुला दिख रहा था , शांत निस्तब्ध और एक लय से युक्त, जिसका मौन स्पन्दन प्रति पल सिद्धाश्रम में अनुभव करते ही रहते हैं। जीवन की आपा - धापी और समाज के विष से सर्वथा दूर रहकर।

सामने ही मातृत्व की साकार स्वरूपा पूज्यनीया माता जी तुलसी के पौधे पर जल चढ़ा रही थीं और वहीं से थोड़ी

क्या तुमने सावन में घुमड़ते बादल की चपलता देखी है, नहीं तो एक बार गुरुदेव की मुस्कराहट देख लीजिए . . .

दूर पर तुरन्त साधना कक्ष से आकर विराजमान हुए थे पूज्यपाद गुरुदेव -- चालीस वर्ष का लम्बा अन्तराल और उनका वर्तमान गृहस्थ स्वरूप डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी का। एक विराट काया और दुर्धर्ष व्यक्तित्व, जो सम्पूर्ण हिमालय में प्रत्येक योगी द्वारा परम हंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के नाम से प्रातः स्मरणीय और वंदनीय है, वे धोती कुर्ते में एक साधारण गृहस्थ का इतना सरल रूप बनाकर विराजमान थे कि योग की उस उच्चता पर पहुंच कर भी मैं एक क्षण के लिए

भ्रमित हो गया, लेकिन गुरु तो गुरु होते हैं अगले ही पल उनका चिरपरिचित दर्प उनके चेहरे पर तमतमाया और मैं आश्वस्त होकर तृप्त व परिपूर्ण हो गया।

साढ़े सात ही बजे थे सूर्य नगरी के नाम से विख्यात जोधपुर नगर तपने लगा था, लेकिन पता नहीं हिमालय की उस शांत सुरम्य, सुखद स्थली और सिद्धाश्रम को छोड़ पूज्यपाद वहां कैसे विराजमान हैं। वे उठे और मुझे अपने पीछे कार्यालय की ओर आने का संकेत करते गये। कक्ष खुला और सैकड़ों दर्शनार्थी एक दम से व्यग्र हो उठे, सच ही है कस्तूरी की सुगंध छुपाये नहीं छुपती और लाख आवरण डाल दिये जायें

मैं ग्रंथ लिखता हूं सजीव, सप्राण जो काल के भाल पर दी गई दस्तक है . . .

लेकिन समाज का कोई भी व्यक्ति उनकी एक झलक देखने के बाद अभिभूत हुए बिना रह ही नहीं सकता।

विविध समस्याएं विविध द्वंद्व जैसे कठिनाइयों का संसार में कोई अंत ही न हो, साधनात्मक विषयों की चर्चा दूर - दूर तक नहीं, बस सांसारिक प्रपंचों की भीड़ और शांत निस्पृह साक्षात् शिव बने प्रत्येक विष अपने कंठ में धारण कर प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्पर्श और तपस्यात्मक अंश का अमृत पिलाते पूज्यपाद गुरुदेव को इस तरह से घिरे हुए देखना मेरे लिए एक विलक्षण अनुभव था, जबकि हिमालय में ऊंचे से ऊंचा योगी भी उनसे अति आवश्यक दो शब्द कहने में भी कतराता है कि पता नहीं हमसे अज्ञानवश कोई अमर्यादा या अवज्ञा जैसी बात न हो जाए।

हर दूसरे ही पल बजती टेलिफोन की घंटी, कभी कोई मंत्री महोदय तो कभी कोई मशहूर फिल्म डायरेक्टर, एक शीर्षस्थ वैज्ञानिक, एक ख्याति प्राप्त शिक्षाविद, अनेक प्रकार की जीवन शैलियों से जुड़े लोगों को फोन द्वारा निरंतर और उनके - उनके क्षेत्रों के अनुकूल मार्ग दर्शन देना एक जटिल कार्य था, किन्तु पूज्यपाद गुरुदेव बिना किसी तनाव के निरंतर बदलते विषय के साथ प्रतिक्षण परिवर्तित होते हुए प्रत्येक क्षेत्र में अपनी दक्षता उनके सामने प्रकट करते जा रहे थे।

प्रतिमाह प्रकाशित होने वाली पत्रिका " मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान " का संचालन संपादन हो अथवा प्रत्येक पत्र पर स्वयं विचार कर आवश्यक निर्देश टाइपिस्ट को देने का कार्य हो अथवा भावी साधना शिविर की योजना बनाने के लिए देश के कोने कोने से उपस्थित हुए साधकों से गहन विचार विमर्श का कार्य, यह सब भी समानान्तर रूप से गतिशील थे। एक साथ विविध विषयों पर गतिशील रहना कितना अधिक तनाव पूर्ण होता है। हिमालय की उन उपत्यकाओं में कई - कई दिन तक उन्हें अनिवर्चनीय समाधि सुख में लीन देखने के बाद इस स्थिति में देखना मुझे दुखद प्रतीत हो रहा था और उससे भी ज्यादा दुखद लग रहा था कि फिर भी उनके प्रयासों और कार्यों का कोई मूल्यांकन और सम्मान नहीं।

तीन बजे पूज्यनीया माता जी के स्वयं उपस्थित हो जाने पर ही उन्होंने अनिच्छा - पूर्वक भोजन के लिए स्थान छोड़ा और भोजन उपरान्त व्यस्त हो गये अपने गोपनीय और दुर्लभ ग्रंथ लेखन के क्रम में, सायं का आगमन कब हुआ यह पता ही नहीं लगा और पूजन कक्ष में हुई शंख ध्वनि से ज्ञात हुआ कि सायं कालीन आरती का समय हो गया है। आरती हुई और अब क्षण थे पूज्यपाद गुरुदेव के साधना में लीन होने के। उन्होंने मुझे अपने साथ एक दिन व्यतीत करने को बुलाया था मैं यह नहीं समझा था कि उनके गोपनीय साधना कक्ष की एक झलक भी पा सकूंगा लेकिन आज तो मेरे सौभाग्य का दिन था और उन्होंने मुझे अपने साधना कक्ष में चलने की आज्ञा दी।

जिनके साधना कक्ष को लेकर प्रत्येक योगी और सन्यासी कौतूहल से भरा रहता है, जिनके सामीप्य में एक क्षण खड़ा रहने पर शरीर रोमांच से थरथरा जाता है, उन्हीं के साथ उन्हीं के साधना कक्ष में साधनारत होना रोमांच से अधिक भय का विषय बन गया था मेरे लिए . . .

. . . मंद प्रकाश से आलोकित वह गुप्त कक्ष जिसमें रखी छोटी सी काली की ताम्र प्रतिमा जो निरंतर साधना द्वारा चैतन्य होकर बोलने वाली ही लग रही थी . . . सामने जलता घी का अखण्ड दीप और उसके सौम्य प्रकाश से आलोकित प्रतिमा का चेहरा दिव्यता की अनोखी प्रस्तुति कर रहा था, आश्चर्य . . . प्रकाश की कोई भी व्यवस्था न होने पर सारा कमरा साठ वाट के बल्ब जितनी रोशनी से भरा भरा लग रहा था, चारों ओर व्याप्त एक मंद सुगन्ध ज्यों कर्पूर पीस कर इस कक्ष में छिड़क दिया गया हो ऐसा ही तीव्र और शीतल अनुभव, ऐसी शीतलता . . . लगे ही न कि ग्रीष्म की ऋतु है और बाहर सारा वातावरण तप रहा है सारा तन मन आह्लाद और उत्तेजना से थरथराता हुआ, मेरा तन - मन मेरे नियंत्रण से बाहर हो चला ऐसा लगा कि सारा कक्ष तेजी

से घूम रहा है और मैं भी एक छोटा सा कण बन कर उसी कक्ष के अलौकिक दिव्य प्रकाश में खोता जा रहा हूं। किसी तरह दीवार को पकड़ कर थरथराता हुआ मैं वहीं पर धम से गिर पड़ा मेरे पांवों में जैसे रक्त रह ही नहीं गया था और शेष शरीर रोमांच से कांपता जा रहा था सामने पूज्यपाद गुरुदेव अपने विशाल वक्षस्थल को वस्त्र हीन कर साधना में प्रवृत्त हो चुके थे, मैं भी अपने को संतुलित करने का प्रयास कर रहा था।

तभी देखा कि . . .

पूरा कक्ष अजस्र मंत्रोच्चार की ध्वनि से कंपायमान होता हुआ और वातावरण किसी धूम्र मंडल से आच्छादित हो रहा है। एक तीव्र ध्वनि . . . **जैसे बिजली कड़की . . . सामने विशाल बलिष्ठ रक्तिम नेत्र युगलों को दहकाती हुई देव मूर्ति प्रकट हुई और साष्टांग प्रणाम मुद्रा** में बिछ गयी, अपना नैवेद्य ग्रहण किया और उसी प्रकार पुनः प्रणाम कर धूम्र मंडल में लुप्त हो गयी। पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा उच्चरित मंत्रों से मैंने अनुमान लगा लिया था कि यह भैरव के उग्रतम स्वरूप महाकाल भैरव का उपस्थित होना था।

आज मेरे भाग्य में सोने के कलम से दिन लिखे गये थे तभी तो भैरव के बाद गणपति और गणपति के बाद भगवती गायत्री के दर्शन भी मुझे यों सुलभ हुए जैसे तो कभी सिद्धाश्रम में भी नहीं प्राप्त कर सका था, आज मेरी वर्षों की दबी छिपी इच्छा भी उभर आयी थी कि काश! मैं भगवती मां काली के दर्शन उनके जाज्वल्य मान रूप में प्राप्त कर सकूं, और तभी पूज्यपाद गुरुदेव ने अपने प्रिय काली स्तवन का पाठ . . . स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवा, का पाठ अत्यंत मधुर कंठ से औंर मां काली में लीन होते हुए प्रारम्भ कर दिया था। स्तवन पाठ के साथ ही साथ कमरे में प्रकाश की मात्रा बढ़ चली थी, साथ ही काली का विग्रह अपना आकार प्रकार बदलने लगा, एक बार तो मुझे लगा कि शायद दीपक की लौ हिलने से मुझे मूर्ति हिलती डुलती सी लग रही है लेकिन जब वह मूर्ती बढ़ते बढ़ते पूरे कक्ष की ऊंचाई तक जा पहुचीं तो एक बार मेरी सांस ही रुकने - रुकने को हो गयी, **किन्हीं मंत्रों का उच्चारण कर पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा जल भूमि पर छोड़ते ही तीव्र कर्पूर गंध के साथ महाकाली अपने रौद्रतम रूप में मेरे सामने स्पष्ट हो गयीं ठीक वही स्वरूप, वही तेजस्विता, वही रौद्रता और सबके उपरान्त भी मातृत्व का अभय देती देवी का वह मधुरतम और तीक्ष्ण रूप, वही गले में मुण्डों की माला वही अस्त्र वैसे ही आयुध और ठीक वैसा ही मंद अट्टहास जो कि काली का ही अट्टहास हो सकता है क्योंकि काली ही तो हंस सकती है इस उन्मुक्त रूप में इस प्रचण्डता से और नृत्य कर सकती है साक्षात् काल के ऊपर आसीन** होकर, उनका वह रौद्र अट्टहास स्वतः कह रहा था कि इन्होंने सम्पूर्ण काल को अपने पांव के तले कुचल दिया था यही काली है यही महाकाली है यही महामाया है यही सभी की नियंता है और उसका वह रौद्र रूप कितना मधुर कितना तीव्र और कितना वात्सलय मय था और इसको तो मैं इतने वर्षों के बाद भी किसी दिन भी भुला नहीं पाया हूं। अद्भुत . . . तेजस्वी . . . अप्रतिम . . . दिग्वसना . . . सौन्दर्य का साकार पुंज जीवित और अत्यंत स्पंदनशील सारे काल को स्पंदित करता हुआ, समस्त काल को स्तंभित करता हुआ सारे दुर्भाग्य को एक क्षण में मटिया मेट कर देने वाला दर्शन और एक क्षण में भाग्य लिपी परिवर्तित कर देने वाला स्पर्श . . . काली की तो महिमा ही निराली है और कांप उठा भय से मैं . . . और सामर्थ्य नहीं रही मेरी कि मैं वह ज्वलंत रूप चर्म चक्षुओं से और भी थोड़ी देर देख सकूं। मैं तीव्र प्रकाश और विध्वन्स कारी रूप से सहम कर प्रार्थना करने लगा कि हे मां! अब यह स्वरूप आप छोड़ कर शांत रूप में आएं . . .

अगले ही पल पूज्यपाद गुरुदेव के श्रीमुख से शांति पाठ अर्घ्य और स्तवन पाठ के बाद वह स्वरूप लघु से लघुतम होता हुआ उसी विग्रह में जाकर समा गया, फिर उसी अलौकिक और वात्सल्य मयी मुख मुद्रा के साथ तब मैंने पहली बार जाना कि विग्रहात्मक स्वरूप भी सत्य होते हैं यदि साधक को प्राप्त हो जाए विशिष्ट गुरु कृपा।

ऊर्जा की अधिकता और तेज की प्रचंडता न सह पाने के कारण मैं अर्धमूर्छित हो गया था, फिर साधना के क्या चरण रहे मुझे तो होश ही नहीं रहा, और उसी तंद्रावस्था में निरंतर मेरी आंखों के सामने महाकाली का वह रौद्र रूप और रौद्र रूप के साथ ही साथ मधुर स्वरूप एक के बाद एक आ रहा था।

शायद ब्रह्म मुहूर्त आरम्भ हो गया हो क्योंकि तभी पूज्यनीय माताजी उस साधना भवन में पधारीं और मैंने पाया गुरुदेव अविचलित निष्कम्प रूप से उच्च कोटि के ध्यान में लीन हैं। सुबह की सूचना पक्षियों के कलरव से मिल रही थी और मेरे अत्यधिक आग्रह पर गुरुदेव ने मुझे केवल चौबीस घंटे के लिए ही अपने सामीप्य में रहने की आज्ञा दी थी। अब मुझे वापस जाना था।

किन्तु गुरुदेव . . . .

पूज्यपाद गुरुदेव कल की ही तरह अपने ऑफिस की ओर प्रस्थान कर रहे थे। मैंने मूक दृष्टि से उनकी ओर देखा, जहां उनकी आंखों से स्पष्ट संदेश आ रहा था कि कर्त्तव्य तो कर्त्तव्य है, भले ही उसके लिये जो भी परिस्थितियां हों। मैं रात्रि में जिन दुर्लभ क्षणों में उनके साथ साधनारत था, ठीक उन्हीं क्षणों में वे सिद्धाश्रम के प्रत्येक योगी को मानसिक रूप से दिशा निर्देश देते हैं और बहुधा सूक्ष्म देह से उपस्थित भी होते हैं। **इस एक ही देह से वे भौतिक जगत के ही नहीं आध्यात्मिक जगत और सूक्ष्म जगत के भी कई कार्य सम्पादित कर लेते हैं,** कब वह उठते हैं, कब वे सांसारिक कार्य करते हैं, कब वे सोते हैं, कब वे साधना में रत होते हैं, अपने समस्त लाखों शिष्यों से भी संपर्क कर लेते हैं, आज छः वर्ष बाद तक भी मैं समझ नहीं पाया हूं।

अन्त में तो मैं उनके विविध स्वरूपों को प्रणाम करता हुआ यही कामना करता हूं कि जल्दी ही हमारे जीवन में सौभाग्य के दिन आए और वे पुनः निश्चिंत रूप से अपने उसी सुख और आनन्द, अपने उसी समाधि अवस्था में लीन हो सकें, हमें उच्च कोटि की साधनाओं में उंगली पकड़ कर ले चल सके। ♦

लक्ष्मी बाध्य हो जाती है प्रत्यक्ष होने को इस प्रकार

हां यह संभव है कि एक दिन की, मात्र एक रात्रि की साधना में ही प्रकट हो जाय महालक्ष्मी साधक के समक्ष . . . अपनी चैतन्यता के साथ . . .

आवश्यक है तो केवल सही साधना, गुरु कृपा का बल और थोड़ी से सजगता . . .आज से चार वर्ष पूर्व सम्पन्न हुए महालक्ष्मी प्रत्यक्षी - करण साधना- शिविर में एक साधक की प्रत्यक्ष अनुभूति . . .

लेकिन मुझे हर हाल में जोधपुर जाना ही है . . . मैंने भी जिद ठान ली थी, मेरी पत्नी मेरे माता - पिता मुझे समझा - समझा कर हार गये कि अभी नयी - नयी लगी नौकरी छोड़ एकदम इस तरह से चले जाना अच्छा नहीं, क्यों नहीं कर रहा मैं कल सुबह तक की प्रतीक्षा, बिना छुट्टी का प्रार्थना पत्र दिये इस तरह . . . . .

. . . . . . लेकिन मैं भी यह गाड़ी छोड़ दूं तो किसी भी हालत में परसों की सुबह से पहले जोधपुर पहुंच ही नहीं सकता था और मुझे पहुंचना था शाम होते - होते . . . . . जोधपुर , पूज्य गुरुदेव के पास।

एक ओर तनाव युक्त माता - पिता का तमतमाया चेहरा और उधर पत्नी की आंखों में उतर आये आंसू . . . बड़ी कठिनाई से मिली थी मुझे यह नौकरी, कितने- कितने व्रत और मान्यताएं मांगी थी उसने और मैं उस पर एक तरह से लात मारकर निकलने की तैयारी में खड़ा हो गया था।

. . . **किंतु व्यक्ति को उसका गुरु बुलाए और वह दौड़ता हुआ जाकर उनके पांवों में न लिपट जाय तो इस मानव जीवन की सार्थकता ही क्या ?** -- गुरुदेव का यह कथन मेरे कानों में गूंज रहा था और हाथ में था वह आमंत्रण - पत्र जो कि एक दिवसीय लक्ष्मी प्रत्यक्ष प्रयोग सम्पन्न होने का था . . .

पता नहीं गुरुदेव ने क्या सोंच कर ऐसा अनूठा शिविर रख दिया था कि जिस तांत्रोक्त पद्धति की वे अभी तक केवल चर्चा करते रहे और महर्षि विश्वामित्र कृत जिस घटना का केवल अपने प्रवचन में अभी तक उल्लेख करते रहे उसको उन्होंने स्वयं सिद्ध कराने की मन में ठान ली और ठान ही नहीं ली, आमन्त्रण दे- देकर सभी को बुलाने का उपक्रम भी कर लिया!

अब तो कोई अभागा ही होगा जो ऐसे अवसर पर चूक जाय एक मामूली सी नौकरी या गृहस्थ में लिपट कर जीवन का ऐसा पल छोड़ दे, पर मुझे नहीं छोड़ना . . . शाम से ही मेरे घर में तेज स्वर में बातचीत और तर्क - वितर्क का वातावरण गर्म था . . . . अन्ततः मैं ही एक झटके से सूटकेस उठाकर निकल पड़ा और पीछे से उनके स्वरों को अनसुना करता हुआ

रिक्शे पर बैठ तेजी से स्टेशन की ओर लपक लिया।

ट्रेन मानों मेरी प्रतीक्षा में ही दस मिनट लेट हो गई थी और मैं अब प्रति पल पूज्यपाद गुरुदेव के एक -एक चमत्कार की झांकी देखने के लिए सजग हो गया . . सामान्य जीवन में तो हम उनकी प्रतिपल कृपा का अनुभव नहीं कर पाते लेकिन जब इसी सामान्य जीवन क्रम से कुछ परे हटते हैं तो वे प्रतिपल सामने आकर अपने मनोहर रूप की झलकी इस प्रकार दिखाते हैं कि साधक को आश्चर्य होता है कि अरे! गुरुदेव तो मेरे पास प्रतिक्षण प्रतिपल थे, मैं ही किन पाप- पुंजों के कारण उनका अनुभव नहीं कर पा रहा था। मेरा रिजर्वेशन नहीं था लेकिन मन में विश्वास था कि मुझे रिजर्वेशन मिलेगा ही, और ठीक ऐसा ही हुआ।

ट्रेन से लखनऊ तक में गाड़ी छूट जाने के वाद, बस की लम्बी कष्ट- साध्य यात्रा लखनऊ से आगरा और आगरा से जयपुर , जयपुर से अजमेर और अजमेर से जोधपुर तक सूखी व रेतीली भूमि को लगातार देखते - देखते गले के साथ आंखें भी सूख गई, लेकिन संतोष यही रहा कि मैं रात के १० बजे तक जोधपुर पहुंच तो गया।

चुने हुए साधकों को लेकर पूज्यपाद गुरुदेव साधना क्रम आरम्भ करवा चुके थे और मैं जब तक नहा- धोकर उस पंडाल में पहुंचा तब तक वे प्रारम्भिक चरण पूर्ण करवाने के पश्चात एक आवश्यक संदेश आ जाने के कारण साधकों को स्थिर - चित्त बैठने की आज्ञा देकर घर के भीतर प्रस्थान कर गये थे। कम साधकों की उपस्थिति के कारण लगा छोटा सा पंडाल भी इतना अधिक चैतन्य और मुखरित लग रहा था कि जैसे यहां पर केवल ये ६० - ७० साधक ही नहीं कम से कम सौ सवा सौ व्यक्तियों का विशाल समूह एकत्र हुआ है।

और पता नहीं वास्तव में रहा भी हो क्योंकि जहां पूज्यपाद गुरुदेव हैं, वहां समस्त देवी - देवता और सिद्धाश्रम के अनेक योगी, ऋषि, मुनियों की सूक्ष्म उपस्थिति तो है ही और आज तो विशेष दिन था। एक युग के पश्चात इसी घटना की पुनरावृत्ति हो रही थी जो कभी सम्भव हुई थी ब्रह्मर्षि विश्वामित्र जैसे प्रचण्ड व्यक्तित्व के द्वारा , फिर कौन ऋषि - मुनि या देवता साक्षीभूत नहीं बनना चाहेगा ऐसे दिव्य क्षणों का।

हल्की सनसनी सी फैल गयी

. . . मंद प्रकाश मंत्र मुग्ध करता हुआ
हल्की गुलाबी आभा अपने में घोलता हुआ,
सुगन्ध ज्यों सैकड़ों कमल दल खिलें हों
यहीं किसी कुण्ड में . . .

और सामने से पूज्यपाद गुरुदेव अपने भव्य और विशाल शरीर को सिंहवत लपक के साथ हम सभी के मध्य एक तीव्र झटके से आकर उपस्थित हो गये। तीन माह बाद मैं उनका दर्शन कर रहा था। कुछ और तीक्ष्ण हो गये उनकी काली और भव्य सुन्दर आंखें , प्रत्येक शिष्य के हृदय तक उतरकर उसे आश्वस्त करती हुई थी। होंठों में ममतामयी मुस्कान और सम्पूर्ण मुख - मुद्रा पर पिता का अभय . . . .

'त्वमेव माता च पिता त्वमेव . . . ." का साकार पुंज . . . . . संक्षिप्त पूजन और विधि की महत्ता बताने के बाद समय अधिक बीत जाने के कारण तुरंत ही उन्होंने प्रत्यक्षीकरण प्रयोग का क्रम आरम्भ करवा दिया। और सर्वप्रथम आह्वान किया विश्वामित्र जी का कि वे उपस्थित हो कर साक्षीभूत बनें कि किस प्रकार से आज उन्हीं की परम्परा को इस धरा पर पुनर्जीवित किया जा रहा है।

धरती से आकाश तक गुंजरित होता पूज्यपाद गुरुदेव का स्वर और साथ ही आ गई सारे वातावरण में एक दम से इतनी हलचल कि कुछ साधिकाएं तो कम्पित हो कर गिर पड़ी। मंत्र जप के उस क्रम में मैंने ही नहीं दो अन्य साधकों ने भी स्पष्ट रूप से पूज्यपाद गुरुदेव के ठीक बगल में विराजमान हुए विश्वामित्र के उस जाज्वल्यमान स्वरूप के दर्शन किंये, जो हमारे ऋषियों का सौन्दर्य रहा। अत्यंत तेजस्वी और मंद मुस्कान लिए, वह असीम दर्प युक्त और पूरे ब्रह्माण्ड को भींचने का हौसला रखने वाला व्यक्तित्व का चित्र सहज ही इन चक्षु - पटल से ओझल नहीं हो सकता और ठीक उनके स्थापन के पश्चात ही आरम्भ हो गया महालक्ष्मी साधना का क्रम -- ब्रह्माण्ड से उन्हीं ध्वनियों को, उन्हीं मंत्रों को यथावत पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा ग्रहण करते हुए जो कभी विश्वामित्र द्वारा इस ब्रह्माण्ड में गुंजरित और ध्वनित हुए थे।

चकित होकर देख रही थी यह प्रकृति, स्तब्ध थे साधक गण और आश्वस्त थे महर्षि विश्वामित्र, यह देखकर कि उनकी परम्परा किस प्रकार से आज इस धरा पर प्रवाहमान है और उन तेजस्वी मंत्रों के उच्चारण से, प्राणों के बल से दिये गये इस आघात से, ज्यों इस ब्रह्माण्ड में व्याप्त लक्ष्मी बद्ध हो गयी इस धरा पर बाध्य होकर उतरने के लिए। सारा वातावरण सुगंधित फूलों की सुगंध से भर उठा और प्रत्येक साधक का चेहरा मुरझाया और फीका न रह कर कुमुदिनी के समान ही गुलाबी आभा से भरने लगा, उस कुमुदिनी की आभा से जो लक्ष्मी का सम्पूर्ण प्रतीक है, पद्म - गंध प्रत्येक साधक के शरीर

से प्रवाहित होने लग गयी और एकाएक इतना अधिक ओज शरीर में समा गया कि लगा जैसे शरीर के रोम - रोम में समाई दरिद्रता और दैन्य की दुर्गन्ध को निकाल फेंका जा रहा था और इसकी जगह आ समाई हो **'श्री'** की पद्म - गंध।

सच कहता हूं कि यदि मर्यादा में बद्ध नहीं होता तो इतने अधिक आनंद को प्राप्त करने के बाद मैं उठ कर वहीं पर थिरकने लगता, निश्चय ही लक्ष्मी इस पण्डाल में केवल एक रूप में ही नहीं जितने साधक बैठे हैं, उतने ही रूपों में विभाजित होकर, विचरण कर रही है . . . और फिर पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा सम्पन्न कराई गयी वह अद्भुत तांत्रोक्त पद्धति, जिसमें लक्ष्मी के केवल १०८ ही नहीं १००८ स्वरूपों का अजस्र उच्चारण पूज्यपाद गुरुदेव के श्रीमुख से प्रारम्भ हो गया, प्रत्येक उच्चारण के साथ यंत्र पर केसर की बिन्दी अंकित करते - करते हम लोगों के हाथ थक गये लेकिन पूज्य पाद गुरुदेव . . . तो भगवान शिव के समान समाधिस्थ होकर आनन्द - ताण्डव में लीन हो गये थे।

लक्ष्मी के सहस्त्र नाम, लक्ष्मी के शत सहस्र रूपों का वर्णन . . . भगवान शिव के मुख से आनन्द में लीन होने पर निकले वर्ण - माला के स्वरों की तरह ही रचित होते लक्ष्मी के स्वरूप . . . वे भी तो लक्ष्मी के एक - एक स्वरूप को रच कर इस धरा पर उतरने को बाध्य कर रहे थे, क्योंकि पूज्यपाद परम हंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी वे युग - दृष्टा हैं, वे मंत्र - सृष्टा हैं, वे देव - सृष्टा भी हैं और उन्हीं के अन्दर ही यह सामर्थ्य है कि वे जिस भी देवी या देवता को चाहें बाध्य कर दें कि वे किस स्वरूप में और कहां जाकर स्थापित हों - ऐसे ही क्रिया का साक्षीभूत था मैं . . .

हृदय का पात्र बहुत छोटा पड़ गया था गुरुदेव की इस कृपा के सामने, शरीर असमर्थ हो गया था लक्ष्मी के इन विविध स्वरूपों को समाने के लिए, और अब क्रम था पूज्य पाद गुरुदेव द्वारा आशीर्वचन का . . . जाते - जाते वह गुप्त संकेत भी बहुत कुछ घटित होगा अभी शेष रह गई रात्रि में, मैं भी यहीं रहूंगा, तुम भी साधना क्रम समाप्त न समझ लेना . .

टिक नहीं पाई दृष्टि उस मुख - मण्डल के तेज पर, नत हो गयी स्वतः चरणों की ओर - अत्यंत कोमल चरण - युग्म शतदल पद्म की आभा प्रकट करते, वे चरणद्वय आभा और सौन्दर्य से आपूरित

. . . शायद प्रत्येक का प्रारब्ध निश्चित था कुछ निद्रा मग्न हो गये, कुछ वार्तालाप में लीन तो कुछ सुबह जाने की तैयारी में व्यस्त . . .

. . . भोर की वह बेला चार के आस -पास का समय . . अलस होता मन और तन पर आकर स्पर्श करती सुखद शीतल हवाएं, कुछ कहती हुई और निद्रा की गोद में भेजने का आग्रह करती हुई . . . लेकिन आज इन हवाओं में इतनी शीतलता क्यों उतर आयी। मंत्र जप ५१ माला हो चुका था और मैं आसन पर ही आलस्य बैठ गया । दो घंटे बाद ही तो सुबह होने वाली थी अब क्या निद्रा का आश्रय लेना और दृष्टि घूम गयी चारों ओर गुरु भाई- बहनों का हालचाल देखने को पूरा पण्डाल निद्रा की गोद में . . . स्तब्ध और शांत दृष्टि कुछ और पीछे गयी . . . ठीक बगल में ही तो मेरे समीप यह कौन खड़ी है ? भरा पूरा ऊंचा कद सामान्य से अधिक स्वस्थ देह - यष्टि, आयु जैसे तीस - पैंतीस के मध्य, अत्यन्त गौर वर्ण, जिसमें पता नहीं कहां से झलकता सुनहरापन ज्यों कोई सद्यस्नाता प्रातः बेला में सूर्य को अर्घ्य देने सुनहरी किरणों के सामने आ खड़ी हुई हो और भगवान सूर्य ने दे दी हो अपनी ऊष्ण स्वर्णिम रश्मियां, पर अभी तो सूर्योदय का कोई आभास भी नहीं . . . इतनी सुन्दर आंखें जैसी कि मैंने सम्पूर्ण जीवन में नहीं देखी, कमल नयन की उपमा को सार्थक करते हुए सचमुच पद्मदल की भांति गहरा कटाव और आभा से युक्त पीठ पर बिखरी दीर्घ केश राशि और एक विचित्र सा प्रभाव देती मुख मुद्रा क्या कहूं उसे नारित्व की गरिमा, देवत्व का प्रभाव या मातृत्व की छवि या सभी का मिला - जुला रूप, शरीर पर एक साधारण सी साड़ी और गुलाबी कंचुकी लेकिन शरीर पर पड़े अत्यंत सुगठित और बहुमूल्य सुगढ़ आभूषण - रत्नों से भरे हुए . . . देख नहीं पाई मेरी दृष्टि देर तक उस मुख की ओर, और अचकचा कर दृष्टि नीचे गई तो पूर्ण रूप से गुलाबी एवं अत्यंत चरण - द्वय भारी सी पायल के साथ और प्रत्येक उंगली में पड़ी बिछिया सारे तन मन को शीतल पवित्र करती हुई। अर्ध उन्मीलित दृष्टि उनींदी से कुछ खोजती सी . . . शायद किसी साधक के साथ आयी कोई साधिका हो और ढूंढ रही होगी अपने पति या भाई को, जाने का समय जो हो रहा है, शायद पंजाब की लगती हो क्योंकि स्वास्थ्य और रूप आकार उसी प्रकार का है सोच कर लीन हो गया, अपनी साधना में . . . प्रातः के आठ बज चुके थे और मेरी दृष्टि के सामने से वह नारी मूर्ति ओझल न हो सकी अधिकांश तो प्रातः होते - होते अपने - अपने स्थान के लिए जाते रहे लेकिन मैं वहीं रुक

(शेष पृष्ठ ७५ पर)

गुरुधाम जोधपुर

दीपावली लक्ष्मी पूजन पर्व

(१३.११.९३ रात्रि ९.१२ बजे से प्रारंभ)

दीपकों की आभा से भी अधिक दमकते, भरे - भरे चेहरों को सुसज्जित करती नय की स्वर्णिम आभा , या देदीप्यमान मस्तक पर मांग को भरती वह स्वर्णिम टीके की लड़ी . . . गले में स्वर्णिम मंगल सूत्र और कलाइयों पर मधुर स्वर से ही खनकते सुनहरे कंगन . . . किंकिणी, पायजेब की मधुर ध्वनि, और एक नहीं कई - कई रूपों में विचरण करेंगी – महालक्ष्मी इसी १३.११.९३ को गुरुधाम जोधपुर के प्रांगण में . . . नारी की सलज्ज आभा जैसे गुलाबी वस्त्र पहने . . . तभी तो क्रम आरम्भ हो चुका है साधकों का, शिष्यों का - पत्रों द्वारा, फोन द्वारा ज्ञात करने का, कि इस वर्ष कहां सम्पन्न होगा दीपावली का पर्व . . . जो भी साक्षी हो चुका एक बार भी पूज्य गुरुदेव के संग दीपावली में, वह तो इसी प्रकार आतुर होगा ही . . .

प्रकाश, उत्सव , मंगल ध्वनियां , संगीत, नृत्य, उछाह और उत्साह से पर्व मनाने की कला तो फिर पूज्य गुरुदेव के साथ पर्व मनाकर सीखे कोई . . .

पूर्ण शालीन, साधना व दीक्षा का क्रम लिए, गरिमा और उत्सव का समवेत प्रभाव . . .

गुरुधाम जोधपुर में

पूर्ण श्रृंगार, यौवन, दीप पंक्तियों की आभा के साथ ही साथ ऐश्वर्य के गर्वीले खनक भरे स्वरों से खनकता हुआ होगा यह पर्व, क्योंकि यह ऐश्वर्य की देवी महालक्ष्मी का ही तो पर्व है – वैभव और विलास का पर्व, स्वर्णिम आभा से दमकते मुख कुछ और भी स्वर्णिम हो जायेंगे जब पूज्य गुरुदेव प्रदान करेंगे . . .

स्वर्ण लक्ष्मी दीक्षा

साथ ही साथ सम्पन्न होगा तांत्रोक्त पद्धति से महालक्ष्मी पूजन जिससे आधार मिल सके प्रत्येक शिष्य को पूरे वर्ष, कुछ विशेष निवारक प्रयोग भी सम्पन्न करायेंगे पूज्य गुरुदेव, अनिष्ट के निवारण के लिए , क्योंकि दीपावली ही तो अवसर है ऐसे तीक्ष्ण निवारक प्रयोगों को सम्पन्न करने का

इसमें भाग लेने के इच्छुक साधकों एवं शिष्यों से अनुरोध है कृपया पहले से ही पत्र द्वारा अथवा फोन द्वारा सम्पर्क कर अपना स्थान निर्धारित कर लें , क्योंकि साधना भवन जोधपुर में स्थान सीमित संख्या में ही उपलब्ध हैं।

न्यौछावर

महालक्ष्मी पूजन व्यय	३००/-
स्वर्ण लक्ष्मी दीक्षा व्यय	१५००/-

साधक दोनों कार्यक्रमों में संयुक्त रूप से अथवा दोनों में से किसी भी एक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए स्वतंत्र है। आप अपने साथ वस्त्र, आसन जैसी नित्य प्रयोज्य सामग्री साथ लेकर आयें, शेष आवश्यक पूजन व साधना सामग्री आपको जोधपुर में ही उपलब्ध करा दी जायेगी।

पूर्ण विवरण के लिए दोनों में से किसी भी स्थान पर सम्पर्क करें

सम्पर्क - सूत्र

३०६, कोहाट एन्क्लेव,पीतमपुरा, नई दिल्ली - ११००३४ ,फोन : ०११- ७१८२२४८

अथवा

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : ०२९१ - ३२२०९

❝ क्या आश्चर्य जो वर्णित है कथाओं में रावण की सोने की लंका . . .
साक्षात कैलाश पति औढरदानी भगवान शिव का वरदान और प्रकट होना महालक्ष्मी का सहस्र गुणों को लेकर . . .
फिर तो क्या कुछ रचा नहीं जा सकता इस धरा पर . . . ❞

जब महाबली दसकन्धर रावण ने महालक्ष्मी सिद्ध की

शास्त्रों और पुराणों में जो वर्णन प्राप्त हुए हैं उनको पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि प्रत्येक देवता और प्रत्येक ऋषि ने महालक्ष्मी को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्रत्येक व्यक्ति को प्रयत्न करके लक्ष्मी साधना करनी ही चाहिए और तब तक प्रयत्न करता रहे, जब तक कि लक्ष्मी सिद्ध न हो जाए। यदि प्रयत्न करने के कुछ वर्षों बाद भी भगवती लक्ष्मी सिद्ध हो गयी तो उसकी जन्म-जन्म की दरिद्रता समाप्त हो जायेगी और जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव रहेगा ही नहीं।

महाबली रावण अपने आप में अत्यंत बलवान और अद्वितीय तंत्र ज्ञाता था, बचपन में वह पुलस्त्य का पुत्र मात्र एक ऋषि पुत्र ही था, क्रोधी था, चंचल था मगर साथ ही साथ दरिद्र भी था। भोजन की व्यवस्था करने में कठोर परिश्रम करना पड़ता था।

एक दिन जब रावण के पिता की अंतिम घड़ी आयी तो उसने रावण का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा - मैं तो इस समय शरीर छोड़ रहा हूं और पूरे जीवन भर दरिद्रता मेरे घर

में बनी रही। मैं उम्मीद करता हूं कि तुम एक ऐसे कुलदीपक बनोगे जो कठोर हृदया लक्ष्मी को भी अपने घर में स्थापित करोगे और जो यह सात पीढ़ियों से मेरे घर में दरिद्रता का आधिपत्य है उसे दूर कर पूर्ण सुख वैभव का जीवन स्थापित करोगे।

रावण ने वचन दिया -- मैं आपका पुत्र यह सौगन्ध खाता हूं कि किसी भी प्रकार से भगवती महालक्ष्मी को सिद्ध करूंगा और उसे विवश कर दूंगा कि वह मेरे घर में स्थापित हो, जीवन पर्यन्त ही नहीं आने वाली कई पीढ़ियों के लिए घर में बनी रहेगी और मैं आपको यह भी वचन ही देता हूं कि मेरा घर ही नहीं नगर में भी प्रत्येक व्यक्ति सम्पन्न, सुखी , धनाढय तथा वैभव युक्त होगा।

समय आने पर रावण बड़ा हुआ परन्तु उसके पिता के कहे शब्द उसके कानों में गूंजते रहे। वह शिव भक्त था, भगवान शिव की आराधना करता था परन्तु उसके मन में एक ही चोट, एक ही कसक बराबर बनी हुई थी कि हर हालत में लक्ष्मी को सिद्ध करना ही है वह चाहे कितनी ही कठोर हृदया हो वह चाहे कितने ही परिश्रम के बाद प्रसन्न हो परन्तु मुझे उसे अपने घर में स्थापित करना है और यह दरिद्रता का साम्राज्य जो मेरे घर में है उसको हमेशा - हमेशा के लिए समाप्त कर देना है।

जब रावण किशोरावस्था से तरुणाई की ओर बढ़ा तो एक दिन वह शिव के निवास स्थान कैलाश पर्वत पर हठकर चला गया और घोर तपस्या की भगवान शिव प्रसन्न हुए और बोले तुम इतनी कठोर तपस्या क्यों कर रहे हो तुम क्या चाह रहे हो रावण ने उत्तर दिया -- मैं लक्ष्मी को सिद्ध करना चाहता हूं ऐसी लक्ष्मी जो सभी दुर्लभ पदार्थों से युक्त हो, जो चिर स्थायी हो, जो चंचल नहीं हो, जो मेरे घर नगर में चिर स्थिर रहे और मेरे परिवार में मेरे घर में आने वाली कई पीढ़ियों में किसी प्रकार की कोई न्यूनता न रह सके।

भगवान शिव ने प्रसन्न होकर कैलाश पर्वत पर ही उसे **सहस्त्र रूपा लक्ष्मी प्रयोग** सम्पन्न करने की आज्ञा दी जो कि तांत्रिक स्वरूपमय है। शिव ने कहा कि यह अपने आप में गोपनीय साधना है मगर तुम्हारी कठोर तपस्या से प्रसन्न हो कर ही मैं तुम्हे यह साधना समझा रहा हूं । इस साधना को करने के बाद निश्चय ही लक्ष्मी प्रसन्न होती ही है और कोई कारण ही नहीं है कि लक्ष्मी सिद्ध न हो।

शास्त्रों के अनुसार जो शिव ने रावण को विधि बताई वह मैं पाठकों की जानकारी के लिए पत्रिका में दे रहा हूं जो कि अत्यंत गोपनीय है और महत्वपूर्ण है।

शिव ने कहा है - रावण तुम किसी भी शुक्रवार से यह साधना प्रारम्भ करो, चाहे तुम प्रातःकाल करो या रात्रि में सम्पन्न करो इसके लिए तुम्हे निम्न पांच पदार्थों की आवश्यकता होगी -- **१. नित्य १०० कमल के पुष्प अथवा कमल के बीज (कमल गट्टा) २. सहस्त्र रूपा सिद्ध माला ३. मंत्र सिद्ध सहस्त्र रूपा महा लक्ष्मी यंत्र ४. क्षीरोद्भव शंख ५. स्थिर महालक्ष्मी मणि।**

प्रातः काल अथवा शाम को साधक दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठ जाए और सामने सहस्त्र रूपा लक्ष्मी यंत्र को स्थापित कर दे, उसका सामान्य पूजन करना है और किसी पात्र में लकड़ियों को रख प्रज्वलित कर १०० आहुतियां देनी है, इस प्रकार का यह सात दिन का प्रयोग है।

इस मणि को अंगूठी में जड़वा कर पहले ही रख देनी चाहिए और घृत के साथ एक कमल बीज या एक कमल पुष्प लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए आहुति देनी चाहिए ।

मंत्र :

ॐ श्रीं हं हठेन महालक्ष्मी मम गृहे आगच्छ स्थिर हठेन फट्

एक मंत्र बोलें तो एक आहुति दें, इस प्रकार नित्य वह आहुतियां दे। सात दिन यह प्रयोग सम्पन्न कर किसी एक ब्राह्मण को भोजन करा दें या फिर किसी एक कन्या को यथोचित दान भेंट दे। ऐसा करते ही रावण! लक्ष्मी तुम्हारे घर में स्थापित हो सकेगी। यह दरिद्रता नाश के लिए और आर्थिक उन्नति का अद्वितीय प्रयोग है. ऐसा हो ही नहीं सकता कि कोई साधक इस प्रयोग को सम्पन्न करे और उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव रह जाए। यदि पूर्व जन्म का भी कोई दोष हो, यदि किसी वजह से लक्ष्मी का अपमान हो गया हो या लक्ष्मी अप्रसन्न हो गयी हो तब भी भगवती लक्ष्मी प्रसन्न होती ही है और उस साधक की सारी इच्छाएं मनोरथ पूर्ण करती है।

साधक यदि चाहे तो इस प्रयोग को सम्पन्न कर जीवन में सम्पूर्ण भोग और यश, पूर्णता और सफलता प्राप्त कर सकता है। साधना सम्पन्न करने के बाद यंत्र को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें और इस प्रकार यह प्रयोग दीपावली से पहले - पहले सम्पन्न कर लें।

वस्तुतः यह प्रयोग महत्वपूर्ण, गोपनीय , दुर्लभ और अद्वितीय है।

जिसे लाया गया हो कुदरत के खजाने से फिर उस पर साधना कैसी ?

बिकिना औल

ज्यों दुर्लभ सर्प के मस्तक में है सर्पमणि या गज - मस्तक में कभी - कभी मिल जाने वाला गजमुक्तक . . . जो रत्न पारखी हैं वे ही जानते हैं इस दुर्लभ रत्न की विशेषता, सैकड़ों हजारों चट्टानों को तलाशने पर खुद ब खुद ढला हुआ मिल जाता है प्रकृति का यह अनमोल तोहफा. . .

भारतीय ही नहीं मुसलमानी ज्योतिष ग्रंथों में भी जमकर तारीफ की गई है कुदरत के इस नूर की। जिसे **''कुदरत की मेहरबानी''**, **'' मालिक का बख्शीश''** कह कर सराहा है क्योंकि . . .

- हीरे से भी ज्यादा कीमती और मोती से भी ज्यादा मासूम इस **''नूर''** को दांये हाथ की किसी भी उंगली में पहनना मुकद्दर है।
- या फिर हिने के इत्र में रात भर भिगो कर जिस किसी को बतौर तोहफा दे दिया जाय वो तो सारी उम्र के लिए दीवानी बन जाय।
- या फिर दे न पाए तो हरे कपड़े में बांध कर घर के चौखट पर रख दिया जाय
- बेरोजगार , बारोजगार बन जाय अगरचे सुबह जगने पर रोज - ब - रोज जमीन पर पांव धरने से पहले हथेली में ले टकटकी बांध पांच मिनट देखे और चूम कर दोनों आंखों से छुआ ले।
- काले कपड़े में चांद के साथ (चांदी के बने) गूंथ पहना दें किसी बच्चे के गले में, फिर दूर रहे हर बुरी शै और अला - बला ।

भारतीय शास्त्रों में भी इसकी महत्ता समझ कर भूरि - भूरि प्रशंसा की गई है क्योंकि . . .

- सौन्दर्य ही आधार है सारे जीवन का और वह भी यदि स्त्री हो तब तो आवश्यक रूप से . . .
  - रात्रि में सोते समय एक बिकिना औल को लेकर सारे चेहरे पर हल्के - हल्के घुमाने से निखर जाता है चेहरा गुलाबी आभा लेकर, उम्र की तो इसमें कोई बाधा ही नहीं. . .
  - लेकिन नित्य प्रयोग के बाद मलमल के टुकड़े में बांध कर सुरक्षित रखें।
- कोई घाव न भर रहा हो तो घाव पर हल्के - हल्के इसका स्पर्श दें।
- नेत्र की ज्योति मद्धिम हो रही हों या नेत्र का कोई भी कष्ट हो इसे नित्य सुबह मुंह धोने के बाद आंखे बंद कर पलकों पर पांच मिनट तक फिराएं।
- शरीर थका - थका रहता हो, या गृहस्थ जीवन का पूरा सुख न ले पा रहे हों तब भी इस का प्रयोग सफल बताया गया है।
- यह तो प्रकृति का उपहार है इसे उंगलियों में जड़वा कर अपनी निगाहों के सामने रखें या ताबीज में मढ़वा कर सीने से लगाये रखें, इसके स्पर्श की बात ही निराली है।

और एक लक्ष्मी प्रयोग भी तो अनुभूत है इसी पर . . .

- त्राटक करते हुए इसी पर एक बुधवार से अगले बुधवार तक नित्य १०८ बार **''श्रीं''** मंत्र का जप करें और उसे दान में दे दें साथ ही दे देंगे अपनी दरिद्रता, दुर्भाग्य और तनाव।

  इन सबसे अधिक जीवन में चाहिए भी क्या और . . .

सम्पूर्ण शक्तिपात युक्त विशेष दीक्षाएं

यह तो देव दुर्लभ क्षण बन जाएंगे

पूज्यपाद गुरुदेव

के द्वारा

चैतन्य सिद्ध मुहूर्त में प्रत्येक मुहूर्त के अनुकूल प्रदान की जाने वाली ये पांच दीक्षाएं - जो अपने आप में एक सम्पूर्ण जीवन क्रम है . . .

२७.१०.६३ : महालक्ष्मी दीक्षा (सिद्धि मुहूर्त)

यह अद्वितीय क्रम प्रारंभ होगा जीवन की गति की आधार महालक्ष्मी की साधना से , सम्पूर्ण सात चरणों में एक साथ दी जाने वाली दीक्षा

२८.१०.६३ : कुण्डलिनी जागरण दीक्षा (सर्वार्थ सिद्धि योग)

भौतिकता एवं आध्यात्मिकता दोनों में पूर्णता संभव है तो केवल कुण्डलिनी जागरण से . . .

२६.१०.६३ : ऋण मोचन दीक्षा (शरदोत्सव)

अपमानित होकर जीने का कोई अर्थ ही नहीं, ऋण मोचन दीक्षा के द्वारा ही जीवन में जीया जा सकता है . . . निर्द्वन्द्व, ससम्मान।

३०.१०.६३ : रोग निवृत्ति दीक्षा (धनवन्तरी दीक्षा) शरद पूर्णिमा

सब कुछ हो लेकिन शरीर खोखला हो गया तो अधूरा है यह संसार आपके लिए । रोग निवारण पूर्ण रूप से संभव है तो केवल गुरु कृपा से, इस प्रकार

३१.१०.६३ : सम्पूर्ण सम्मोहन दीक्षा (सर्वार्थ सिद्धि योग)

जीवन की पूर्णता, अद्वितीय और चुम्बकत्व भरी दीक्षा, सम्पूर्णता के साथ नया व्यक्तित्व गढ़ने के लिए . . .

ये केवल पांच दीक्षाएं ही नहीं, पंच रत्न हैं, दीक्षाओं की रत्न पेटिका से चुनकर . . .

जीवन को संवारने का एक निश्चित और पूर्णक्रम . . .

नोट : ये दीक्षाएं केवल गुरुधाम दिल्ली में उपरोक्त तिथियों को पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा प्रदान की जाएंगी। दीक्षाएं प्राप्त करने के लिए टेलीफोन अथवा पत्र द्वारा सम्पर्क कर कार्यक्रम निर्धारित कर लें-

गुरुधाम

३०६, कोहाट एन्क्लेव , पीतमपुरा,

नई दिल्ली - ११००३४ ,

फोन : ०११ - ७१८२२४८

फैक्स - ०११ - ७१८६७००

सम्मोहन वशीकरण

कार्तिक माह में सम्पन्न किया जाने वाला एक तीव्र वशीकरण प्रयोग --

हां ! लक्ष्मी मेरी मुट्ठी में है . . .

वशीकरण देवी - देवताओं पर भी संभव है यदि आपके पास हो सही साधना, प्रामाणिक उपकरण और कुछ कर गुजरने का हौसला लक्ष्मी को बस में कर लेने की एक अघोर पद्धति की प्रामाणिक विधि जो केवल कार्तिक मास में ही सम्पन्न की जा सकती है।

वशीकरण प्रयोग केवल मनुष्यों या स्त्रियों पर ही नहीं होता, अपितु लक्ष्मी पर भी किया जा सकता है, मुझे बनारस में एक औघड़ साधु मिला था, जिसके पास लगभग तीन महीने रहा था, इस साधु के पास कुछ भी नहीं था,न झोली, न कुटिया और न किसी प्रकार का पात्र ही, परन्तु फिर भी वह नित्य सैकड़ों लोगों को भोजन करवा देता था, बाजार से सैकड़ों रूपये दे कर खाद्य पदार्थ मंगवा लेता था, उसके पास धन की कभी कोई कमी नहीं रहती थी।

एक दिन उसका अच्छा मूड देखकर मैंने इस रहस्य को जानने की इच्छा प्रकट की, तो उसने लगभग गाली देते हुए कहा कि उस घर - घर में घूमने वाली लक्ष्मी का तो मैंने सम्मोहन कर दिया है और अब मुझे छोड़ कर जा भी कहां सकती है, अब तो वह मेरी मुटठी में है, और मैं जिस प्रकार से भी चाहूं उसे नचा सकता हूं, वह हर क्षण मेरे साथ ही रहती है और जब भी जितना भी रुपया चाहूं, मुझे लौं कर देती ही है।

वास्तव में ही उसकी बात सही थी, रुपयों की उसके पास कमी रहती ही नहीं थी, मेरी सेवा से अत्यन्त प्रसन्न होकर उसने मुझे यह गोपनीय साधना रहस्य समझाया था , जो कि आगे कि पंक्तियों में स्पष्ट है --

कार्तिक माह की किसी भी रात्रि को स्नान करें मगर इस वात का ध्यान रहे कि रात्रि को लगभग १२ वजे के आस - पास स्नान करके बिना आसन लगाये, जमीन पर बैठ जाएं और सामने कुंकुंम से पन्द्रह बिन्दियां लगा लें, ये बिन्दियां एक सीध में होनी चाहिए। फिर इसके सामने तीन त्रिकोण बनावे, एक त्रिकोण के बीच में " लक्ष्मी" लिखें, दूसरे त्रिकोण के मध्य में " कुबेर" और तीसरे त्रिकोण के बीच में " श्रीं " लिखें, फिर पन्द्रह तेल के दीपक लगाकर प्रत्येक बिन्दी पर तेल का दीपक रख दें, दीपक का मुंह साधक की तरफ होना चाहिए और फिर पहले त्रिकोण के सामने पन्द्रह **"चिरमी"** के दाने रख दें, दूसरे त्रिकोण के सामने **पन्द्रह हकीक नग** रखं दें और तीसरे त्रिकोण के सामने पन्द्रह **" इन्द्रजाल"** के टुकड़े रख दें। इसके बाद **मूंगे की माला** से पन्द्रह माला मंत्र जप करें।

मंत्र :-

" ॐ चली चली इली इली अलूं अलूं ॐ "

मंत्र जप पूरा होने के बाद तीनों त्रिकोण के सामने ही एक बड़ा त्रिकोण बनाएं और उस त्रिकोण के मध्य में तीनों नाम - लक्ष्मी , कुबेर , **"श्रीं"** लिख दें और फिर इस त्रिकोण के ऊपर अपनी दाहिनी हथेली रख कर अपनी हथेली पर ही वे रखे हुए, हकीक नग , चिरमी के दाने तथा इन्द्रजाल के टुकड़े विखेर दें और फिर अपनी हथेली को अलग कर दें तथा बाहर जा कर स्नान कर लें और भोजन कर लें।

सुबह उठने पर उन हकीक , चिरमी तथा इन्द्रजाल के टुकड़ों को एक पोटली में बांध कर अपने पास रख लें, तो निश्चय ही उसे अनायास लक्ष्मी प्राप्ति होती रहती है, लक्ष्मी पर पूर्ण रूप से सम्मोहन हो जाता है और साधक पूरे जीवन भर जब भी इस मंत्र को एक बार पढ़ कर जितने रुपये की इच्छा करता है, उतने रुपये उसकी हथेली में आ जाते हैं, ऐसा शास्त्र वर्णित है।

वास्तव में ही यह प्रयोग आश्चर्यजनक है और साधकों को इस प्रकार का प्रयोग करना ही चाहिए। यों तो पूरा कार्तिक मास ही लक्ष्मी साधनाओं के लिए अनुकूल है फिर भी ज्योतिष की दृष्टि से कुछ अवसर विशेष योगों से निर्मित हो रहें हैं। दिनांक १ - ११ - ६३ , ११ - ११ - ६३ , १३ - ११ - ६३ (दीपावली), २२ - ११ - ६३ और २८ - ११ - ६३ सिद्ध व सफल मुहूर्त हैं।

राशिफल

मेष :-

मंगल की गोचर में स्थिति के कारण अभी कुछ काल तक समय विषमता पूर्ण रहेगा और नवरात्रि के पश्चात शनैः शनैः स्थितियों में सुधार प्रारम्भ होंगे। इस बात का ध्यान रखें कि नवरात्रि पूर्व तक कोई भी शुभ कार्य अथवा मांगलिक आयोजन न करें। आय की अपेक्षा व्यय बढ़ा रहेगा जिसके लिये योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आवश्यक है। पारिवारिक स्थितियां वस सामान्य ही रहेंगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। जमा पूंजी की स्थिति में सुधार होगा। व्यापारी वर्ग सूझबूझ से काम लें। विचौलियों पर भरोसा न करें। नौकरी पेशा वर्ग के लिए भी थोड़ा कठिन समय रहेगा।

वृषभ :-

व्यापारी बन्धुओं के लिए यह कड़ी चुनौती का माह है। कई महत्वपूर्ण सौदे या तो हाथ से निकल जायेंगे अथवा निकलने की स्थितियां वार - बार आकर खड़ी हो जायेगी। इसकी शांति का उपाय करें। सामान्यतः इस माह इस राशि के सभी व्यक्तियों को चोट - चपेट की दशाओं से भी सतर्क रहना चाहिए। परिवार से सहयोग नहीं के बराबर मिलेगा। मित्र वर्ग भी उपेक्षा करेगा। आय में कोई उल्लेखनीय वृद्धि के आसार नहीं। माह के द्वितीय पक्ष में स्थितियां क्रमशः सुधार की ओर अग्रसर होंगी तथा मासान्त तक श्रेष्ठ समय समक्ष होगा।

मिथुन :-

किसी चिन्ताजनक स्थिति का स्थायी निदान मिलेगा और मन में पूरे माह उल्लास रहेगा। स्वास्थ्य की ओर से सामान्य चिन्ता हो सकती है। सामाजिक सम्बन्धों में नवीनता आयेगी तथा परिचय क्षेत्र में विस्तार होगा। आगामी दिन सुख पूर्वक व्यतीत होंगे। व्यय का वोझ कुछ अधिक रहेगा। छात्र वर्ग के लिए अनुकूल समय। दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा। राज्य पक्ष से सम्बन्धों में सुधार होगा। पत्नी का स्वास्थ्य ढीला रहेगा तथा परिवार में वच्चों के स्वास्थ्य पर भी उचित ध्यान देना होगा। वाहन के प्रयोग में सावधान रहें। शत्रु पक्ष हताश होगा।

कर्क :-

शरीर में शिथिलता एवं आलस्य की अधिकता रहेगी। किसी काम में मन नहीं लगेगा किन्तु जीवन का निश्चित क्रम अपनाना आवश्यक है। मित्र वर्ग अपेक्षा के अनुकूल सहायक सिद्ध होगा। किसी का विश्वास करके बिना सोचे समझे ऋण न दें। समय का सदुपयोग करें। पारिवारिक अनुकूलता रहेगी। यात्राओं से पर्याप्त लाभ मिलेगा। लोक अपवाद से बचें। भ्रम की स्थितियां उत्पन्न होंगी। प्रेम प्रसंगों में शिथिलता आएगी। शत्रु पक्ष सक्रिय होते हुए भी संकट नहीं उत्पन्न कर सकेगा। सामाजिक सम्मान प्राप्त होगा। धार्मिक प्रवृत्तियों में वृद्धि होगी।

सिंह :-

किसी धोखे से सावधान रहें। इस माह आवश्यकता से अधिक किसी पर भी विश्वास न करें, भले ही आपके उससे धनिष्ट संबंध क्यों न हो। नवीन वाहन के क्रय की स्थिति संभव है। पारिवारिक सुख सामान्य रहेगा। आय के नूतन स्रोत उत्पन्न होंगे। यात्रा की स्थितियां बार - बार बनेंगी और विगड़ेंगी। किसी दूरस्थ प्रियजन से भेंट होगीं। गुप्त धन में वृद्धि होगी। स्वभाव में हड़वड़ी और तीव्रता रहेगी जिससे स्वयं ही खिन्नता रहेगी। इस माह के अंतिम सप्ताह से स्थिति सामान्य होगी। व्यापारी वर्ग के लिए अच्छा समय है।

कन्या :-

एकाएक उत्तेजना अथवा क्रोध की स्थितियों का यथासंभव निराकरण करें। प्रयास पूर्वक शांत रहें भला ही आपको उत्तेजित करने के अनावश्यक और अनुचित प्रयास किये जाएं। तृतीय सप्ताह से इन स्थितियों से परिवर्तन होगा, किन्तु अभी इस माह के उपरान्त भी तनाव पूर्ण स्थितियां चलने की संभावना है। आय की स्थिति संतोष जनक रहेगी। नवीन प्रेम प्रसंग संभव। नौकरी पेशा लोग अधिक सतर्कता से कार्य करें। चाहे वे अधिकारी वर्ग के हों अथवा अधीनस्थ वर्ग के दोनों के लिए चुनौती पूर्ण माह है। व्यापारी वर्ग के लिए श्रेष्ठ माह।

तुला :-

यह माह आपके लिये प्रारम्भ में तो श्रेष्ठ फलदायक है किन्तु एक तिहाई माह व्यतीत हो जाने के पश्चात नित नयी कठिनाइयों से मन खिन्न रहेगा, अतः माह के प्रारम्भ में ही निराकरण के उपाय निर्मित कर लें। विशेष रूप से सामाजिक संबंधों में, वार्तालाप एवं व्यवहार करते समय सावधानी रखें। कोई दूर स्थित मित्र सहयोगी सिद्ध होगा। यात्राएं सुखद और लाभदायक रहेंगी। आवश्यक कार्य को निर्णय के अभाव में लटकाए न रखे। चौर्य भय संभावित।

वृश्चिक :-

कही सुनी बातों पर विश्वास करने की अपेक्षा वास्तविकता को स्वयं परख कर ही निर्णय लें। यह माह आपके लिये पीठ पीछे रचे जाने वाले कुचक्रों के कारण श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इससे आपको मानसिक तनाव की स्थितियां प्राप्त होंगी। परिवार की ओर से भी तनाव पूर्ण स्थितियों का सामना करना पड़ेगा। धन के अपव्यय को कठोरता से संतुलित कीजिए। पुत्र की उन्नति से मन में उत्साह रहेगा। किसी महंगे घरेलू उपकरण को खरीदने का विचार अभी त्याग दें। जमा पूंजी में हाथ न लगाएं।

धनु :-

यह माह आपके लिये धनागम की स्थिति से श्रेष्ठ एवं उल्लेखनीय है जिससे जमा पूंजी में निश्चित रूप से वृद्धि होगी। प्रेम प्रसंगों में प्रगाढ़ता आयेगी और मनोमालिन्य दूर होंगे। व्यापारी बन्धुओं के लिए सुअवसर उपलब्ध होंगे। दाम्पत्य जीवन में जीवन साथी के स्वभाव में आयी रूक्षता से मन में खेद रहेगा। स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है और मानसिक अवसाद की स्थिति उत्पन्न होगी। एकान्त का त्याग करें। पारस्परिक मेल- मिलाप बढ़ाना उचित रहेगा।

मकर :-

अत्यधिक वाचालता से हानि होने की सम्भावना है। अधिक समय से चले आ रहे सम्पति के विवाद को निपटा देना ही बुद्धिमत्ता होगी। वाहन व्यय में वृद्धि होगी। पारिवारिक सुखों की न्यूनता रहेगी। सामाजिक सम्पर्कों में कुछ गतिशीलता कम करना आपके स्वास्थ्य एवं पारिवारिक जीवन की दृष्टि से आवश्यक है। पड़ोसी अनावश्यक विवाद उत्पन्न करेंगे। आय की स्थितियों में अनुकूल स्थितियां निर्मित होंगी। व्यापारी वर्ग सुख का अनुभव करेगा। यात्राएं असफल रहेंगी।

कुंभ :-

राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय लोगों को इस माह विशेष उन्नति का अवसर मिलेगा। कार्य क्षेत्र का विस्तार होगा और भावी योजनाओं का आधार रखा जायेगा। शत्रु पक्ष की गतिविधियां क्षीण होंगी और आलोचकों की ओर से भी कोई संकट उत्पन्न नहीं होगा। पत्नी का सहयोग रहेगा किन्तु पारिवारिक सुखों में न्यूनता आयेगी। गुप्त शत्रुओं से अवश्य ही सावधान रहें। यात्रा में सावधानी रखें। व्यापारी वर्ग के लिए नये सौदे करने का अच्छा समय। कुल मिला कर एक श्रेष्ठ माह।

मीन :-

इस माह कुछ श्रेष्ठ परिणाम समक्ष आएंगे। किसी परिचित से सुखद भेंट होगी। आय की अपेक्षा व्यय बढ़ा रहने से मन व्याकुल रहेगा। स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ने की आशंका है अतः तनाव से बचें। प्रेम प्रसंगों में शिथिलता। अधिकारी वर्ग का कर्मचारियों से सामंजस्य नहीं रहेगा। सम्पूर्ण रूप से चुनौती पूर्ण माह कहा जा सकता है। ब्लड प्रेशर के रोगी स्वास्थ्य संकट का सामाना करेंगे। शत्रु पक्ष परास्त होगा। दाम्पत्य जीवन में क्लेश सामाजिक रूप से सम्मान में वृद्धि।

संज्ञान

''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'' पत्रिका के अनुभवी पाठकों को उनके व्यक्तिगत जीवन में घटित हुए दैवी कृपा से संबंधित किसी घटना अथवा साधनाओं के मध्य हुए अलौकिक अनुभूतियों को पत्रिका में यथोचित स्थान देने के लिए आमंत्रित किया जा रहा है। प्रकाशित संस्मरणों या अनुभूतियों पर उचित पारितोषक प्रदान किया जाएगा।

अपने लेखन में इस बात का विशेष ध्यान रखें कि आप के द्वारा भेजा गया वर्णन सर्वथा अप्रकाशित एवं मौलिक हो। इस संबंध में समस्त उत्तरदायित्व विवरण भेजने वाले पाठक का ही होगा। ध्यान रखें वर्णन में चमत्कार पूर्ण अतिरंजित घटनाएं अथवा स्तर - हीनता न हो। अप्रकाशित रचनाओं को लौटाने का दायित्व पत्रिका कार्यालय का नहीं होगा। प्रेषित विवरणों की भाषा शैली में यथोचित परिवर्तन करने का अधिकार सम्पादक मण्डल के पास सुरक्षित है। लिफाफे के ऊपर **''संज्ञान''** अवश्य लिखें।

विवरण / अनुभव निम्न पते पर भेंजे --

''संज्ञान''

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव , पीतम पुरा, नई दिल्ली - ११००३४

सिद्धाश्रम गोल्डन कार्ड योजना

''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''
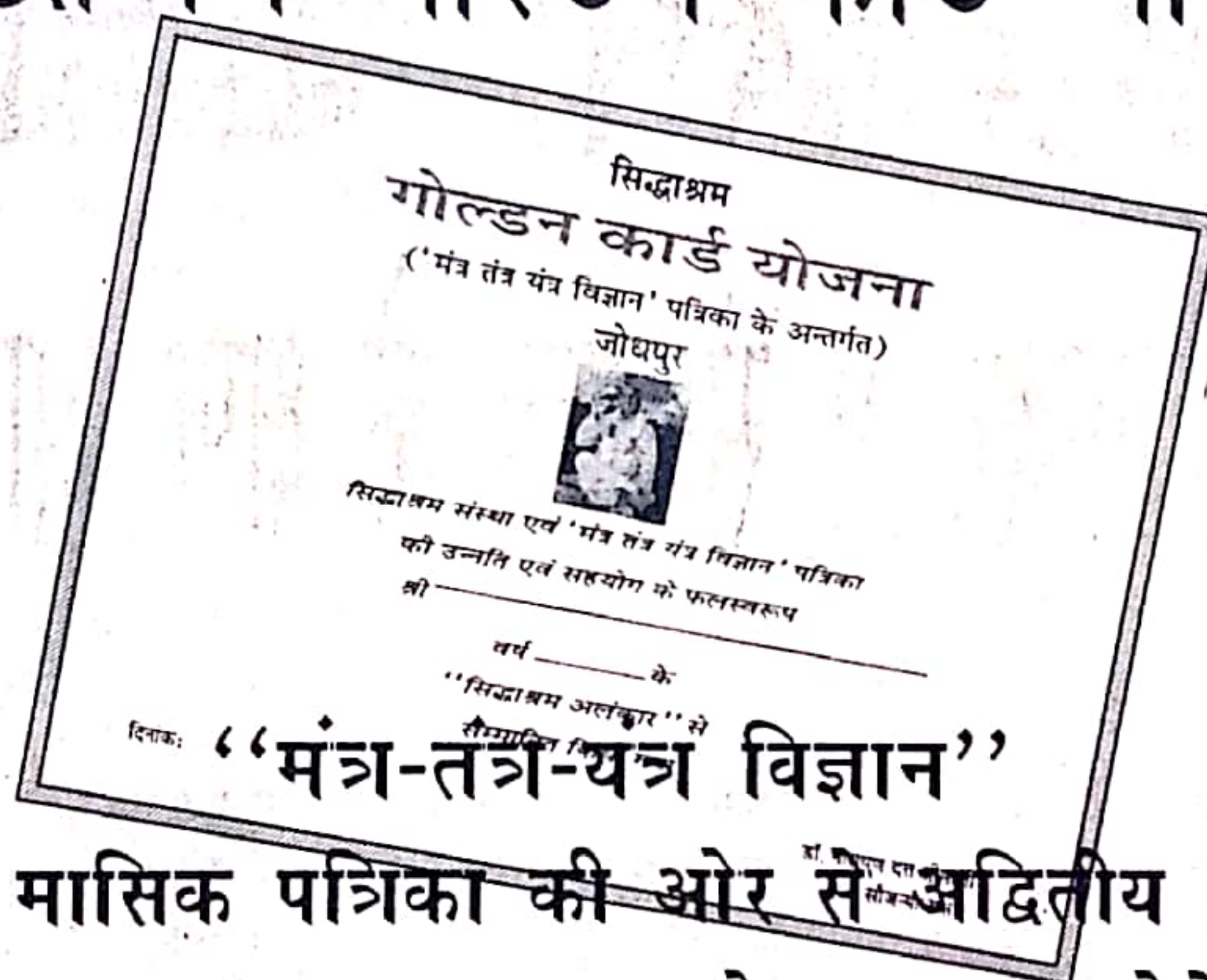
हिन्दी मासिक पत्रिका की ओर से अद्वितीय अवसर

मात्र एक बार इक्यावन हजार रुपये जमा करा देने पर . . .

जीवन भर पत्रिका मुफ्त में प्राप्त होती रहेगी।

भारत वर्ष में कहीं पर भी शिविर होगा,उसमें आप निःशुल्क भाग ले सकेंगे।

प्रत्येक शिविर में कुछ विशेष सामग्री "फ्री" मिलेगी।

प्रत्येक पत्रिका में प्रकाशित साधनाओं में से किसी एक साधना की सामग्री (जो सम्पादक चाहेंगे) निःशुल्क प्राप्त होगी।

गोल्डन कार्ड मेंबर को शिविर किट फ्री मिलेगा।

तंत्र रक्षा कवच, जिसकी न्यौछावर ग्यारह हजार रुपये है।

एक बड़ा मंत्र सिद्ध दक्षिणावर्ती शंख - जिसकी न्यौछावर पांच हजार रुपये है, निःशुल्क दिया जायेगा।

एक मधुरूपेण मंत्र सिद्ध एक मुखी रूद्राक्ष - जिसकी न्यौछावर पंद्रह हजार है, निःशुल्क दिया जायेगा।

एक बड़ा ३० X ४० साइज का गुरु चित्र प्रदान किया जायेगा।

प्रथम सामान्य दीक्षा से शांभवी दीक्षा तक निःशुल्क प्राप्त होगी।

(आप उपरोक्त धनराशि को दो या तीन किश्तों में भी जमा करा सकते हैं)

और फिर

यह धरोहर धनराशि है, जब साधक **''गोल्डन कार्ड मेंबर''** न रहना चाहे तो लिखित में रजिस्टर्ड डाक से ऐसा पत्र लिख दें, पत्र मिलने के दस वर्ष बाद आपकी धरोहर धनराशि लौटा दी जायेगी, जिस पर ब्याज नहीं मिलेगा।

सम्पर्क

मंत्र - तंत्र - यंत्र विज्ञान, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली -३४ , फोन: ७१८२२४८

अथवा

मंत्र - तंत्र - यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी , जोधपुर - ३४२००१, (राजस्थान)टेलीफोन : ०२९१-३२२०६

महालक्ष्मी दीक्षा

जब जीवन में सौभाग्य के क्षण आये

दुःख, दैन्य तनाव और निराशा के साथ -साथ जीवन में अभाव भी क्यां होता है इन सब का मुझको मेरे दुर्भाग्य ने जीवन के एक चरण में अनुभव करा ही दिया। स्थिति यहां तक आ गयी थी कि कुछ एक दिन तो हम पति - पत्नी ने बच्चों को भोजन करवा दिया और खुद चाय पीकर दिन काटे क्योंकि आर्थिक स्थिति इतनी अधिक दयनीय हो गयी थी। मेरे कपड़े का व्यवसाय था और व्यापार में मेरे ही परिवार के लोगों ने मेरे ही सगे बड़े भाई के लड़कों ने मुझे इस प्रकार से प्रताड़ित किया और मजबूर कर दिया कि मुझे संयुक्त व्यापार में से अलग हटना पड़ा। मेरे बड़े भाई जिनकी उंगली पकड़ कर मैंने चलना सीखा और माता - पिता के न रहने पर जो मेरे लिए माता व पिता दोनो बने वे भी मेरी इस दुर्दशा को देखकर आंखों आंसू भर दूसरी ओर मुंह फेर लेने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकते थे। मैं भी उनकी मजबूरी समझ कर उनकी वृद्धावस्था को देखकर उनसे कोई शिकायत नहीं कर सकता था।

पर मेरे लिए उनके अतिरिक्त इस संसार में और था भी कौन? सभी संबंधियों की वास्तविकता तो हम दोनों भाइयों ने बचपन के अभाव ग्रस्त दिनों में देख ही ली थी। लेकिन ऐसी विपन्नावस्था तो बचपन की उस अनाथ स्थिति में भी नहीं रही। यह तो मेरे ऊपर वज्रपात जैसा हो गया था। इस दीवालिये पन की स्थिति में अब कौन आगे बढ़कर मेरा सहायक बनता। एक मारवाड़ी परिवार का होने के कारण स्वाभिमान तो कूट - कूट कर भरा था। हाथ फैलाना तो दूर की बात मैं तो सामान्य सी याचना करने की अपेक्षा आत्म हत्या कर लेना ही अधिक समझता था।

उधर पत्नी का आग्रह दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा था। वह तो विवाह के बाद से ही मुझसे कह रही थी कि मैं उसके घर पीहर चलकर उसके पिता के व्यवसाय में हाथ बटाऊं, लेकिन तब मेरा जमा - जमाया व्यवसाय था, प्रतिष्ठा थी, शहर में मेरी एक सम्मानजनक स्थिति थी, तब उसका ऐसा कहना मुझे अपमानजनक लगता था। उसने तो विवाह के बाद ही मेरे रिश्तेदारों का कुचक्र भांप लिया था, लेकिन क्या कोई इतने बड़े विश्वासघात की बात सोच सकता है? व्यवसाय और धन ये तो अब गौण हो गये थे, मेरे लिए मुख्य हो गया था अपनी जान बचाना, क्योंकि मेरे व्यापार के समाप्त हो जाने के बाद कहीं फिर से मैं हावी न हो जाऊं या कोई मुकदमा न कर दूं, इस डर से मुझे जान से मार डालने की योजनाए भी बन रही थी, जो मुझे ज्ञात हुई अपने एक विश्वस्त पुराने नौकर से।

. . . मुंह अंधेरे बहुत आवश्यक सामान साथ लेकर पत्नी और दोनों बच्चों के साथ मैंने छोड़ दिया अपना बचपन का स्थान। जिसके एक - एक कोने से मेरी आत्मीयता थी और छोड़ा भी तो कितनी अपमानजनक स्थितियों में और रवाना हो गया पत्नी के आग्रह पर अपने ससुराल ।

ससुराल में ऊपरी तौर से तो स्वागत था लेकिन दिन बीतते न बीतते समझ में आ गया मुझको कि मैं एक बिन बुलाया मेहमान हूं जो उनके लिए बोझ हूं, क्योंकि मेरे श्वसुर को अपने समाज में मेरे विषय में बताते हुए लज्जा आती थी। माह भर बीतते - बीतते घर में इधर से उधर आने - जाने पर संबंधियों और उनके मित्रों की कटाक्ष, ताने उलहाने भी कानों में सुनाई पड़ने लगे। मेरे श्वसुर के कोई पुत्र संतान नहीं थी, लेकिन अब वे अपने दिवालिया और नगर छोड़ कर आये दामाद को अपने व्यापार में सहयोगी बनाने में इच्छुक नहीं रह गये थे।

मेरा मन रोज - रोज की काना

(शेष भाग पृष्ठ ७३ पर)

नववर्ष उपहार

भाग्योदय लक्ष्मी यंत्र

जो हम प्रदान करेंगे अपने प्रत्येक

पाठक को

गौरवशाली हिन्दी मासिक "मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" की

वर्ष १९९४ की वार्षिक सदस्यता प्राप्त करने पर

निःशुल्क

सम्पूर्ण भाग्य को उज्जवल

वनाने में समर्थ

भाग्योदय लक्ष्मी यंत्र

-- जीवन में सौभाग्य जागृत करने का निश्चित उपाय, घर एवं व्यापार स्थल पर वरसों वरस स्थापित करने योग्य, सभी प्रकार की उन्नति में सहायक . . .

-- दीपावली के चैतन्य काल में मंत्र सिद्ध एवं प्राणप्रतिष्ठित, प्रामाणिक एवं पूर्ण रूप से शास्त्रोक्त विधि विधान युक्त . . .

. . . कुछ भी अतिरिक्त प्रयास तो नहीं करना है आपको, केवल अंत में दिये गये पोस्ट कार्ड को भर बिना टिकट लगाये हमारे पास प्रेषित ही तो करना होगा, डाक व्यय पत्रिका कार्यालय वहन करेगा।

जो पहले से ही वर्ष १९९४ के लिए सदस्यता प्राप्त कर चुके हों वे भी इस योजना का लाभ अपने किसी मित्र या रिश्तेदार को सदस्य बना कर प्राप्त करने के अधिकारी हैं।

निर्धारित पोस्ट कार्ड पर अपना नाम अथवा अपने मित्र का नाम लिखकर भेजें। **हम १५० /- सदस्यता शुल्क + १५/- डाक व्यय, कुल मिलाकर १६५/- की वी.पी.पी. से प्रेषित कर देंगे यह विशेष यंत्र,(किन्तु यह यंत्र का मूल्य नहीं है)** आपकी प्राप्ति रसीद कार्यालय में मिलते ही हम आपको प्रदान करे देंगे वर्ष १९९४ की सदस्यता।

सम्पर्क

३०६, कोहाट एन्क्लेव ,पीतमपुरा, नई दिल्ली - ११००३४, फोनः ०११ - ७१८२२४८

अथवा

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान , डॉ. श्रीमाली मार्ग,हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन :०२९१-३२२०९

कपिला योगिनी

इस बार यम द्वितीया के अवसर पर एक नवीन प्रयोग, नवीन चिंतन, नवीन रहस्योद्घाटन पूर्ण प्रामाणिक साधना विधि के साथ . . .

यम द्वितीया पर्व पर भारत में सर्वत्र भाई - बहन के त्यौहार के रूप में प्रतिष्ठित है और इससे जुड़ी है विभिन्न मान्यताएं और स्थान - स्थान के साथ विभिन्न रीति - रिवाज। हमने इस वर्ष संकल्प लिया है कि अब हमें इन दिनों का उपयोग तांत्रोक्त ढंग से सफल करना है और जब हम मना चुके हैं पूरे तांत्रोक्त विधि - विधान से दीपावली पर्व, तो क्यों न इस अवसर का भी ऐसा ही सदुपयोग करें।

तांत्रोक्त साधनाओं की आधार -भूता देवी योगिनियों को लेकर समाज में विचित्र रोमांचक, कथाएं प्रचलित हैं लेकिन योगिनियां तो अपने - आप में पूर्ण रूप से चैतन्य और सौम्य स्वरूपा हैं, जिनके रोम - रोम में समाया है साधनाओं का बल और तंत्र की प्रखरता, जो आधार है प्रत्येक तांत्रिक साधना में, साधक की सहयोगिनी बन पूर्ण रूप से भगिनी स्वरूपा बन . . . . मधुर और आत्मीय।

तेजस्वी सौन्दर्य और दिव्य आभा का मेल ही सही स्वरूप है योगिनी का। तनुकाय और शरीर पर आलोकित स्वर्णिम आभा उनका विन्यास रच देता है किसी स्वर्णिम मूर्ति का। उनकी शांत किन्तु तीखी काली आभा से युक्त आंखों से ही स्पष्ट होती है उनकी अन्दर छुपी तंत्र की विलक्षण तीव्रता . . . . अन्दर तक उतरती पैनी दृष्टि, साधनाओं का बल लिए -- भगवान शिव की साक्षात् कृति, जो काम या उपभोग की वस्तु नहीं है और इसी से जब किसी साधक ने साधना काल में रखी इनके प्रति कोई कुदृष्टि या कुविचार तो साधना में असफल होने के साथ मृत्यु तक को भी प्राप्त हो गया . . . . और फिर जुड़ गयी अनोखी कथाएं वीभत्स कथाएं, विकृत मानसिकताओं की उपज, गढ़े - गढ़ाये सनसनी खेज, संस्मरण . . . . .

"दीर्घकाय, भीषण आकृति वाली जिसका वर्ण श्याम है - ऐसी स्थूल काय जिसके विशाल वक्ष- स्थल पर बाल गज के समान स्तनद्वय शोभायमान हैं . . . . जिनकी मुख मुद्रा अत्यंत रक्तिम और नेत्र भयोत्पादक हैं, ऐसी रक्त

"शिव और शक्ति का साकार रूप है योगिनियां और प्रकट है वे अपने चौंसठ स्वरूपों में सबके गुण, कार्य, प्रभाव अलग - अलग शक्ति रूप में, पर बल, आकर्षण सौन्दर्य की साक्षात योगिनी है कपिला और उसके लिए यम द्वितीया से सिद्ध मुहूर्त और क्या हो सकता है . . ."

रूप बल तेज आकर्षण का आधार है

वर्ण वस्त्रों को धारण करने वाली प्रचण्ड योगिनी मातेश्वरी की मैं वन्दना करता हूं।"

" एक हाथ में भाला और दूसरे में खड्ग धारण कर क्रोधातुर हो रही शेष दोनों हाथों में शत्रु के शव से निकले रक्त को अपने वस्त्रों में विलीन करती देवी! मेरे जीवन में सहायक हों . . . . . "

कई - कई रूप वर्णित है योगिनी के साधकों के मध्य और यह स्वरूप है उनका मातृरूप का, प्रेमिका का रूप भी वर्णित है योगिनी का लेकिन वह सामान्य साधक - जगत की बात नहीं, क्योंकि वहां वासना के लिए किंचित मात्र भी स्थान नहीं।

सौम्यतम स्वरूप है योगिनी का भगिनी स्वरूप में और क्या - क्या नहीं जुड़ जाता साधक के जीवन में योगिनी के भगिनी स्वरूप में सिद्ध हो जाने से, जो आतुर हो अपने साधक को जीवन के सभी सुख देने में भले ही वह इच्छा प्रकट करें या न करें। दूर पड़ी किसी वस्तु को उठा लाने जैसी बात हो या धन का भण्डार खोल देने जैसी कृपा, मनोनुकूल विवाह सम्पन्न कराने या प्रेमिका मिलन कराने जैसी घटना . . . . . . योगिनी से तो कुछ भी गोपनीय रह ही नहीं जाता। पग - पग पर अपना स्नेह और मार्ग - दर्शन के साथ - साथ वह करती रहती है साधक की प्रतिपल रक्षा और सचेत कर देती है किसी भी षडयंत्र या धोखे के प्रति पहले से ही . . . .

पूरे - पूरे तंत्र - शास्त्र को अपने में आत्मसात् किये यह कपिला योगिनी अपने सिद्ध साधक में भर देती है ऐसा तेज , बल और उत्साह जो केवल तंत्र के द्वारा ही संभव हो . . . . . आकाश से गिरी कड़कती बिजली जैसा यौवन या आंखों में मस्ती के वे लाल डोरे जो सही अर्थों में किसी पुरुष का यौवन का प्रमाण हो या फिर तना हुआ सीना सब कुछ उतार देती है यह योगिनी, जिससे साधक छा जाए सारे वातावरण में . . .

यम द्वितीया ही सही अवसर है ऐसी वरदायक और भगिनी स्वरूपा कपिला योगिनी को अपने जीवन में सादर निमंत्रित करने का, क्योंकि योगिनी तो एक ही आधार ढूंढती है कि जहां उसे सही साधक मिले, स्नेह पूर्ण वातावरण मिले, वहां वह अपनी शक्तियां प्रकट कर दे। उन्हें जीवन का समस्त सुख वैभव और आनन्द दे दे। अन्य देवी - देवताओं की अपेक्षा कपिला अपना प्रभाव देती है तीक्ष्ण बल देकर ,जिससे साधक में भर जाता है ओज और संघर्ष शीलता। जीवन में ऐसा अवसर बार - बार उपस्थित नहीं होते। जीवन में साधना ऐसी वस्तु नहीं होती कि जिसे जब चाहें तब बाजार में जाकर पैसे देकर खरीद ले या तेज बल सौन्दर्य आकर्षण पैसों से प्राप्त कर लें। इसके लिए तो आधार लेना पड़ता है ऐसी वरदायक साधनाओं का और जो चूक जाते हैं उन्हें फिर प्रतीक्षा करनी पड़ती है एक लम्बे समय तक।

यम द्वितीया तो दिवस है साक्षात् यम का और ऐसे तीव्र दिवस को योगिनी की साधना करने का अर्थ है अपने जीवन में से हटा देना सभी अनिष्टों को, चाहे वे वर्तमान में साथ चल रहे हों अथवा काल के गर्भ में पल रहे हों। ऋण, चौर्य भय , आकस्मिक दुर्घटना, गुप्त - घात या जीवन के छोटे - छोटे अनेक विवाद, जो जीवन में विष लेते रहते हैं, उनका निराकरण पूर्णता से होता है योगिनी साधना से।

मात्र एक दिवस की साधना लेकिन उस रूप में चमत्कार प्रधान या अनुभूति प्रधान नहीं जैसा कि योगिनी से जुड़ी विचित्र कथाओं और कामोत्पादक स्वरूप का वर्णन पढ़कर मानस में चित्र बनता है . . . एक सौम्य साधना मन में पूर्ण आह्लाद और आत्मीयता की भावना लेकर की जाने वाली साधना। इस साधना का प्रभाव दूसरे दिन प्रातः से ही साधक को मिलना प्रारम्भ हो जाता है और यदि साधक कुछ समय तक नियम - बद्ध ढंग से साधना में रत रहे तो उसे योगिनी से साक्षात मिलाप भी संभव होता है।

यम द्वितीया की रात्रि में यह साधना प्रारम्भ करें। यों तो विधान है कि इस साधना को घने जंगल में जाकर किया जाता है लेकिन उसके प्रतीक रूप में साधक वट वृक्ष की डाल प्रातः काल ही लाकर अपने पूजा स्थान में गीली मिट्टी एक ढेर में गाड़ दे। रात्रि में वस्त्र आसन लाल रंग का रखते हुए दक्षिण मुंह होकर बैठे और एक तांबे के पात्र में '**कपिलेश्वरी यंत्र**' स्थापित कर उसका पूजन कुंकुम ,अक्षत, सिंदूर एवं तेल के दीपक से करें। जिस डाल को प्रातः स्थापित किया है उसका भी पूजन इसी प्रकार से करें तथा इस यंत्र पर चौंसठ लाल रंग के पुष्प , चौंसठ योगिनियों के पूजन रूप में अर्पित करें। यंत्र पर '**दस योगिनी कृतवाह**' अर्पित करें और प्रार्थना करें कि कपिला योगिनी अपनी समस्त शक्तियों के साथ दसों दिशाओं

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

शारदीय नवरात्रि में

अद्वितीय सिद्ध सफलतादायक
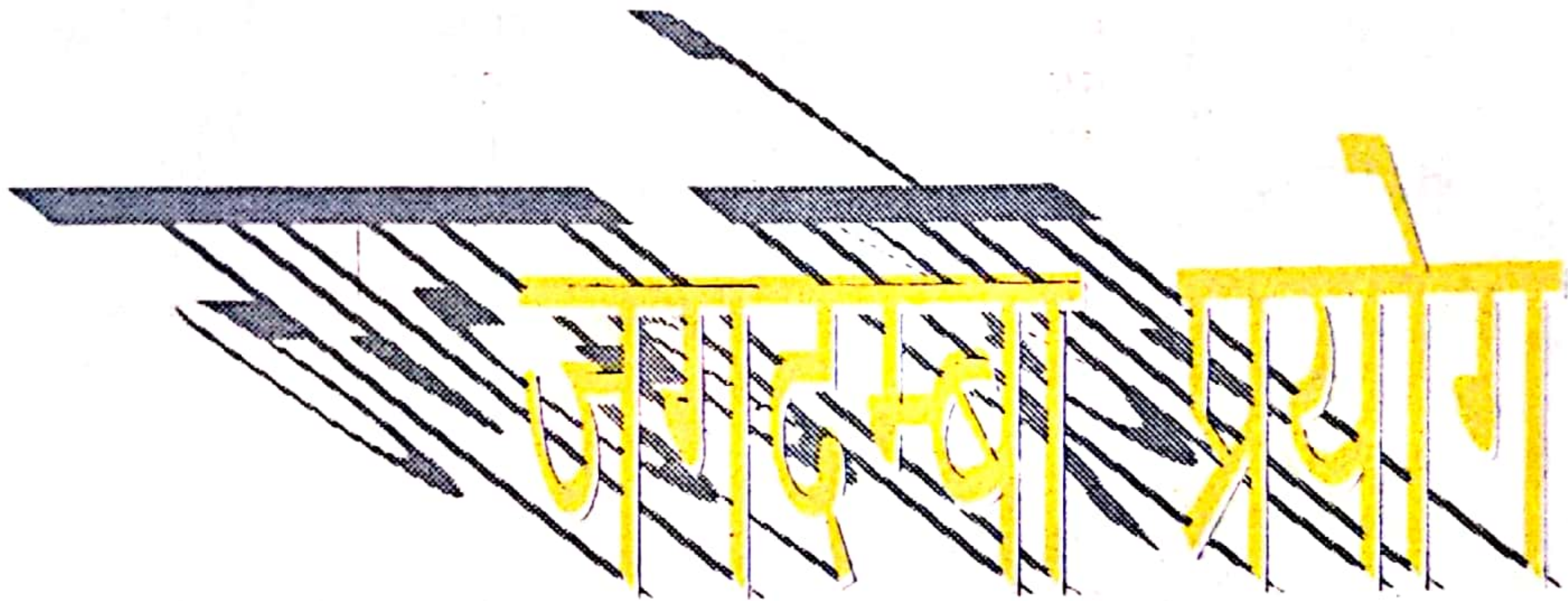
इस बार नवरात्रिका प्रारम्भ १६.१०.६३ से २२.१०.६३ तक सिद्धाश्रम साधक परिवार की तरफ से भिलाई में नवरात्रि सम्पन्न की जा रही है।

इस बार एक अद्वितीय सिद्ध योग आया है जो कि नवरात्रि के दिनों में ही घटित हो रहा है और २०.१०.६३ को एक ऐसा क्षण आ रहा है कि समस्त ग्रह एक ही आर्तिक विन्दु पर स्थित होंगे यह आर्तिक विन्दु अपने आप में अद्वितीय क्षण कहलाता है और यदि इस अवसर पर भगवती जगदम्वा का सौभाग्य दायक प्रयोग सम्पन्न किया जाय तो अपने आप में अद्वितीय लाभ होता है।

इन्द्र उपनिषद में इससे संबंधित विवरण सुनने को मिला था, जब इन्द्र कई सौ वर्षों के बाद उस क्षण के प्रतीक्षा में थे जब इस प्रकार के मुहूर्त का आगमन हो और उसमें भगवती जगदम्वा का पूर्ण श्रृंगार कर, पूजन कर विशेष मंत्रों से आवाहन कर भगवती जगदम्वा को शस्त्र धारिणी शत्रु विनाशिनी स्वरूप के साथ - साथ महालक्ष्मी स्वरूप में भी मानकर यह पूजन कार्य सम्पन्न किया जाता है, किसी भी अच्छे आचार्य से यह प्रयोग सम्पन्न कराना चाहिए और जिसे इस प्रयोग का ज्ञान है वही इस प्रयोग को सम्पन्न करा सकता है।

यह एक प्रयोग ही अपने आप में हजार - हजार प्रयोग के बराबर है क्योंकि सर्व सौभाग्य का तात्पर्य है भगवती लक्ष्मी को, भगवती जगदम्वा को प्रत्यक्ष अनुभव करना, शत्रुओं से रहित निष्कंटक जीवन व्यतीत करना, दरिद्रता का नाश भगवती लक्ष्मी का स्वयं अपने अष्ट भुजा का रूप धारण कर साधक के घर में स्थापित होना। धन , यश, मान , पद प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य की प्राप्ति होना।

इन्द्र उपनिषद में बताया गया है इस दिन साधक स्वयं या अपनी पत्नी सहित किसी आचार्य को बुलाकर भगवती लक्ष्मी, भगवती जगदम्बा का पूजन करें और फिर अपने स्वयं के पास से भगवती जगदम्बा को वस्त्र पहनाएं या वस्त्र भेंट करें। इस प्रयोग में निम्न पदार्थों की आवश्यकता होती है-- जल पात्र, कुंकुंम , अक्षत, नारियल, पुष्प ,पुष्प माला ,अत्यधिक श्रेष्ठ जगदम्बा वस्त्र , साडी और स्त्री

के पहनने योग्य कंचुकी, प्रसाद आदि।

इस बार कई सौ वर्षों के बाद ऐसा मुहूर्त २०.१०.६३ को सम्पन्न हो रहा है और इन दिनों में यह एक श्रेष्ठ संयोग है कि नव रात्रि पर्व भी है। अतः जो साधक इस प्रकार के पर्व में भाग लेना चाहे उन्हें चाहिए कि उपरोक्त सामग्री पहले से ही प्राप्त कर साथ लायें।

हम पूज्य गुरुदेव से प्रार्थना करेंगे कि वे आचार्य पद पर बैठ कर भारत वर्ष के सभी साधकों को ऐसा प्रयोग सम्पन्न करायें। जो इन्द्र ने भगवती लक्ष्मी को , भगवती जगदम्बा को प्रसन्न करने के लिए सम्पन्न किया था।

साधक स्वयं श्रेष्ठ धोती धारण करें ऊपर उत्तरीय पहने, स्त्रियां भी सुन्दर साड़ी पहन कर साधना में बैठे। जो उपरोक्त सामग्री बतायी गई है वह सामग्री पहले से ही मंगाकर तैयार रखें। भगवती जगदम्बा को पहनाने के लिए अद्वितीय उत्तम स्तर की साड़ी, कंचुकी आदि पूजन सामग्री में रखे। माला गुलाब के पुष्पों की हो तो ज्यादा उचित रहती है और अन्य षोडशोपचार पूजन में जिन - जिन पदार्थों की आवश्यकता होती है उन पदार्थों को अपने पास पहले से ही प्राप्त करके रखें।

इसमें भगवती जगदम्बा के चित्र के सामने साधक संकल्प ले कि मैं शत्रुओं का संहार करने के लिए जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के लिए, भगवती जगदम्बा के प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त करने के लिए, पूर्ण स्वरूप में लक्ष्मी को अपने घर में स्थापित करने के लिएं , दरिद्रता निवारण के लिए और पूर्णत्व प्राप्ति के लिए मैं इस अद्वितीय मुहूर्त में यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं और फिर आचार्य के बताये हुए तरीके से भगवती जगदम्बा का षोडशोपचार पूजा सम्पन्न करे उन्हें यथोचित वस्त्र भेंट करें। शास्त्रों के विधान के अनुसार पूजन करने के बाद स्फटिक माला से इससे संबंधित मंत्र की पांच माला मंत्र जप करें। यह मंत्र गोपनीय है और शास्त्रों में बताया गया है कि जब शिष्य या साधक श्रद्धा नत हो तब गुरु या आचार्य अपने मुख से ही इस मंत्र को उसे दें।

विधिवत मंत्र जप सम्पन्न करने के बाद आचार्य पूजन करें, पूर्णता के साथ गुरुपूजन करे उन्हें यथोचित वस्त्र भेंट स्वरूप रखें, दक्षिणा दें और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि आपकी कृपा से ही ऐसे अद्वितीय क्षण में, ऐसे श्रेष्ठ मुहूर्त में आपने यह प्रयोग सम्पन्न कराया है । इसके लिए हम आपके कृतज्ञ हैं और इसी प्रकार की कृपा आप मुझ पर बनाये रखें । इससे संबंधित यंत्र जो **सतूरूपा भगवती जगदम्बे यंत्र** कहलाता है प्राप्त कर लें । जिसका पूजन भी साथ - साथ ही होता है और वह यंत्र पूर्ण श्रद्धा के साथ अपने घर में स्थापित करें और नित्य संभव हो तो अगरबत्ती, दीपक प्रज्वलित करें।

शास्त्रों में विवरण है कि ऐसा क्षण तो जीवन में कभी - कभी ही आता है और जो साधक ऐसे क्षण को भी चूक जाता है उसके समान अभागा कोई नहीं होता।

यह हमारा सौभाग्य है कि नवरात्रि पर्व के दिनों में ही इस प्रकार के ग्रह संयोगों की स्थितियां आयी हैं और हम ऐसा प्रयोग सम्पन्न कर सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करें और जीवन में सभी दृष्टियों से सफल हों।

इस प्रयोग में सुन्दर, उत्तम, कीमती जाज्वल्यमान साड़ी, आभूषण तथा मध्य भाग में पहनने वाली कंचुकी - वस्त्र का विशेष विधान व महत्व है।

प्रयोग पूजन के बाद आचार्य को गुरु मान कर उनका पूजन करें वउन्हें पुरुषोचित पांचों वस्त्र भेंट करें।

यह मुहूर्त कई सौ वर्षों बाद पहली बार आया है।

शास्त्रोक्त पूजन विधि

हे मां! कामेश्वर के अंक में विराजमान हेभगवती! आप सादर पाद्य ग्रहण करें, हे मां! मैं आपको सुगंधित तेल समर्पित करता हूं, भक्ति पूर्वक आपको स्नान कराकर आपको सुवर्ण कलश से अभिषेक करता हूं यह लाल कौशेय (रेशमी) वस्त्र एवं उत्तरीय स्वीकार करें, अब आप आलेप-मण्डप में प्रवेश करें सुवर्ण पीठ पर स्थापित हों, सुगन्धित द्रव्यों का विलेपन प्राप्य करें, काला गुरु धूप से आपके केशों को धूपित कर मैं नाना प्रकार से ॠतु के अनुकूल सुगंधित फूलों की माला अर्पित कर रहा हूं।

हे मां! अब आप भूषण- मण्डप में प्रवेश करें वहां सुवर्ण पीठ में विराजमान होकर मणिमय मुकुट, अर्ध चन्द्र, सीमंत सिन्दूर, ललाट पर बिन्दी, नेत्रों में अंजन, कानों में मणि कुण्डल एवं नाशा भरण, अधर पर आलक्तक, गले में स्वर्ण का हार एवं पदक, महापदक, मुक्तावली, एकावली, छन्नवीर , बाहुओं में केयूर, चूड़ियां, अंगूठी कटि में मेखला, चरण कमलों में नुपूर और पैर की उंगलियों में अंगुलीयक धारण कीजिए।

हे मां! अब मैं आपकी मंगल आरती का नीराजन द्वारा, छत्र-चांवर सहित अभिनन्दन करता हूं, दर्पण, गंध, पुष्प, मधुर वृन्ध, धूप-दीप अर्पण कर षट्रस व्यंजन से भरी थाली का भोग अर्पित करता हूं।

हे मां! इस अकिंचन के इन उपचारों से आप तुष्ट होइए, आह्लादित होइए और मुझे अपनी कृपा का फल प्रदान कीजिए।

— शक्तियामल तंत्र से

शक्तिपात युक्त पांच दीक्षाएं

पांच के अर्थ को प्रकट करता 'पंच' शब्द गूढ़ार्थ लिए हुए शब्द है - पंचभूतात्मक यह देह हो अथवा पंचकर्मेन्द्रियों से संचालित हमारा यह जीवन या फिर पंच ज्ञानेन्द्रियों द्वारा अनुभव किए जाते इस जगत में विविध विषय . . . प्रमुख देव भी पांच ही है; और जीवन की पूर्णता भी होती है पंच दीक्षाओं - महालक्ष्मी दीक्षा, कुण्डलिनी जागरण दीक्षा, ऋणमोचन दीक्षा, रोग निवृत्ति दीक्षा एवं सम्पूर्ण सम्मोहन दीक्षा से . . .

इन सभी दीक्षाओं का तात्पर्य इन सभी की सार्थकता है, तो केवल इस बात में कि इस मानव जीवन को सम्पूर्णता कैसे प्राप्त हो, और जहां सम्पूर्णता की बात आती है वहां गुरु मूर्ति के अतिरिक्त कोई अन्य मूर्ति या छवि आंखों के सामने उपस्थित हो ही नहीं सकती। कौन है हमारे समक्ष इस प्रकार से प्रकट, कौन है इस प्रकार से अपनी कृपा का फल देने को तत्पर, और कौन है हमारा मनोवांछित प्रदान करने की समर्थ लिए हुए? देवी - देवताओं की कृपा भी बिना गुरुदेव के नहीं प्राप्त हो सकती है इस जीवन में। वे भी तो एकटक देखते रहते हैं, श्री गुरुदेव के मुखारविन्द की ओर।

विगत कई माह से साधकों, शिष्यों एवं पाठकों का निरंतर यही आग्रह बना हुआ था कि पूज्यपाद गुरुदेव हम सभी के हित को स्वयं ही निर्धारित कर ऐसा कोई उपाय प्रदान करें, कोई ऐसा लघु क्रम दें जिससे अल्प समय में ही प्राप्त हो सके जीवन की वे सभी स्थितियां, जो हमारे लिए प्रथम आवश्यक हों, जिस प्रकार से एक क्रम आरम्भ हुआ विगत कई माह से गुरुधाम दिल्ली में पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा उच्च कोटि की दीक्षाएं प्राप्त करने का, उससे आरम्भ हुआ चिन्तन का एक नया क्रम - जब उन साधकों ने अपने - अपने क्षेत्र में जाकर अपनी सफलताओं और उपलब्धियों को स्पष्ट किया, उससे समाज के सभी वर्गों में जो चेतना आयी वह समुद्र में उठी तरंग से भी ज्यादा हिलोरें भरी रहीं।

उन्हें यह कहकर नहीं बताना पड़ा, उन्हें प्रचार नहीं करना पड़ा, वरन दीक्षा प्राप्ति के बाद उनके चेहरे की आभा और सम्पूर्ण व्यक्तित्व के साथ - साथ जीवन में जो परिवर्तन आए उससे उनके परिचितों और समाज में आश्चर्य प्रकट हुआ ही। फिर आरम्भ हुआ पाठकों के और जिज्ञासुओं के पत्रों का क्रम कि हम तो बिलकुल नये हैं इस क्षेत्र में, यह तो हमें आपके द्वारा ही ज्ञात हुआ कि दीक्षाएं १०८ प्रकार की होती हैं, हम निर्णय नहीं कर सकते कि कौन सी दीक्षा हमारे अनुकूल रहेगी, और पत्र ही नहीं यहां दिल्ली कार्यालय में ऐसे ही आग्रह भरे टेलीफोन कॉल की भरमार हो गयी। सच

ही तो है कस्तूरी की सुगन्ध छुप नहीं सकती।

ऐसे सभी साधकों और शिष्यों का चिन्तन अपने स्थान पर सही ही है क्योंकि जीवन की इन भूल भुलैया जैसी रपटीली पगडंडियों पर चलना सिखाना ही नहीं, उंगली पकड़कर ले चलने की क्रिया सम्पन्न होती है तो केवल पूज्य पाद गुरुदेव के द्वारा और यह तो हमारा आपका सौभाग्य है कि वे न केवल हम सभी के मध्य साक्षात् उपस्थित हैं, वरन प्रत्येक आग्रह पर गम्भीरता पूर्वक, आत्मीयता पूर्वक सोच विचार कर, अपने साधकों की प्रत्येक समस्याओं को समझते हुए उपाय देने को तत्पर भी हैं।

पूज्य गुरुदेव ने इन सभी आग्रहों को सुनकर एक मौन धारण कर रखा था, और अब जाकर हम सब को समझ में आ सका कि वास्तव में उन्हें प्रतीक्षा थी तो केवल उचित क्षण की, उचित मुहूर्त की, क्योंकि इन मुहूर्तों में ही तो पूर्ण सफल हो सकेंगी ये दीक्षाएं भले ही साधक ने पूर्व में कोई दीक्षा ली हो अथवा न ली हो, गुरु दीक्षा से भी युक्त हुआ हो अथवा न युक्त हुआ हो, या जीवन में कोई भी साधना सम्पन्न न की हो-- क्योंकि जहां पूज्य पाद गुरुदेव अपने शक्तिपात के साथ दीक्षा प्रदान कर रहे हों, अपने साधनात्मक बल के साथ शिष्य को स्वीकार कर रहे हो, उसके जीवन को संवारने के लिए, फिर वहां कोई बन्धन या नियम की बाध्यता नहीं रह जाती। यही होती है गुरुदेव की अनमोल कृपा और यही होता है शक्तिपात युक्त दीक्षा का रहस्य।

. . . क्रिया सम्पन्न होने जा रही है एक युग के पश्चात, आचार्य गोविन्द पाद एवं भगवतपाद शंकराचार्य के क्रम में विस्मृत हो गयी कड़ी को पूर्ण करती हुई . . .

आगामी पांच दिवस -- २७, २८, ३६, ३०, ३१ अक्टूबर को गुरुधाम - दिल्ली में ही सम्पन्न होंगी पांच दीक्षाएं, जो एक - एक विशेष मुहूर्त से जुड़कर वन गई है पूर्ण प्रभावोत्पादक और पूज्य पाद गुरुदेव के शक्ति युक्त स्पर्श से युक्त . . .

१. २७.१०.६३ (सिद्धि मुहूर्त) : महालक्ष्मी दीक्षा --

किसी भी लाग लपेट के बिना दो टूक शब्दों में पूज्य पाद गुरुदेव ने यह तथ्य रखा है कि भौतिकता अथवा लक्ष्मी किसी भी प्रकार से आध्यात्मिकता में बाधक ही नहीं, वास्तव में तो धन का अभाव ही वना देता है व्यक्ति को दीन व पतित। इसी

'महालक्ष्मी दीक्षा' का सिद्धि मुहूर्त से समन्वय करते हुए पूज्य पाद गुरुदेव सात चरणों की इस दीक्षा को समेट देंगे एक ही दिवस में और संवार देंगे अपने शिष्य का जीवन पूरी तरह से. . .

२. २८.१०.६३ (सर्वार्थ सिद्धि योग) : कुण्डलिनी जागरण दीक्षा -

शास्त्रों में वर्णित है कि सदगुरु अपने कृपा पूर्ण शक्ति के प्रवाह से कभी भी जागृत कर सकते हैं किसी भी शिष्य की कुण्डलिनी, किन्तु 'सर्वार्थ सिद्धि योग' एक ऐसा योग है जिसमें सर्वथा साधना हीन और गुरुदीक्षा रहित व्यक्ति भी प्राप्त कर सकता है जीवन का यह पुण्य - जो आधार वन जाता है उसके लिए सम्पूर्ण रूप से जीवन में उंचे उठने का, क्योंकि कुण्डलिनी जागरण से जागृत होता है वह सुप्त प्रवाह जो ऊर्जा का भण्डार है ।

३. २६.१०.६३ (शरदोत्सव) ऋण मोचन दीक्षा --

शरद पूर्णिमा के एक दिन पूर्व ही घटित होता है शरदोत्सव का महोत्सव और . . . 'मेरे प्रत्येक शिष्य के जीवन में महोत्सव मन सके!' - इसी चिंतन से पूज्यपाद गुरुदेव ने इस दिन को निश्चित किया है **ऋण मोचन दीक्षा** के लिए क्योंकि ऋण मुक्त व्यक्ति ही मना सकेगा - जीवन में आनन्द और उत्सव, जीवन में सम्मान पूर्वक सभी परेशानियों से छुटकारा पाकर . . .

४. ३०.१०.६३ (शरद पूर्णिमा) : रोग निवृत्ति दीक्षा --

शरद पूर्णिमा का दिन अवसर है **धनवन्तरी जयन्ती** का जो देव - वैद्य हैं और ऐसे ही दिव्य पुरुष का तेज उतर आता है इस चैतन्य दिवस पर , पूज्य पाद गुरुदेव इसी अमृतमय दिवस पर प्रदान करने जा रहे हैं अपने सभी उपस्थित होने वाले शिष्यों को रोग मुक्ति की दीक्षा - धनवन्तरी पद्धति से।

५. ३१.१०.६३ (भाग्य सिद्धि मुहूर्त) सम्पूर्ण सम्मोहन दीक्षा --

कार्तिक माह का प्रारम्भिक दिवस पूरे वर्ष का सर्वाधिक चैतन्य माह , भगवान विष्णु के तेज बल का दिवस, जो आधार वने साधक के जीवन में तेज बल और सौन्दर्य का और सम्मोहन की भी तो यही आवश्यकता होती है . . .

सम्पूर्ण रूप से एक ही दिवस में पूर्ण प्रभाव कारी शक्तियां दे देने का दिवस . . .

जीवन ये पंच रत्न इस भौतिक जीवन को क्रम वद्ध रूप से संवारने का प्रयास हैं, और इनके आधार पर ही फिर व्यक्ति प्राप्त कर सकेगा भविष्य में बहुत कुछ, क्योंकि ये दीक्षाएं ही नहीं सम्पूर्ण रूप से मजबूत नींव है, जिन पर ही सुख सौभाग्य का जीवन निर्मित हो सकता है।

जो नित्य साधक के सिरहाने दो तोला स्वर्ण रख जाती है . . .

स्वर्णप्रभा यक्षिणी

यक्षिणी साधना . . . धन की साधना, रूप की साधना, यौवन की साधना, भोग - उपभोग और ऐश्वर्य की सरस साधना प्रत्येक गृहस्थ की आवश्यक साधना जो . . .

जीवन में धन की साधना को लेकर द्वंद ग्रस्त होने की आवश्यकता ही नहीं, अर्थ साधना की जो भी निन्दा शास्त्रों में की गई या समाज के नैतिक मूल्यों में जुड़ी, उसके पीछे मुख्य तथ्य था कि व्यक्ति ने अर्थ लोलुप होकर जीवन के मूल्यों, सरसता और पारस्परिक मेल की ऐसी उपेक्षा कर दी कि उसके अन्दर तो जड़ता आई ही, समाज में भी नीरसता आ गई, यदि अर्थ साधनाओं के प्रति ही कोई हेय दृष्टि होती तो मां भगवती जगदम्बा के त्रिगुणात्मक स्वरूपों में से एक स्वरूप भगवती लक्ष्मी का न होता। वर्ष का एक सम्पूर्ण माह, कार्तिक माह पूरा का पूरा लक्ष्मी साधनाओं के लिए ही निर्धारित न किया गया होता। **केवल दीपावली की रात्रि में ही अर्थ सम्बन्धी साधना नहीं की जाती, वरन कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रतिपदा से जो क्रम आरम्भ होता है उसकी पूर्णता संभव होती है दीपावली की रात्रि में।** कार्तिक माह तो पूर्ण रूप से विभिन्न पद्धतियों द्वारा पूरे माह अर्थागम के नवीन स्रोत खोजने और पूरे माह प्रतिदिन सरस पूर्ण ढंग से अर्थ व सौन्दर्य साधना करने का माह है।

सरसता की बात सामने आने पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से नारी तत्व जुड़ा होता है और ठीक यही बात अर्थ उपार्जित करने के विविध ढंगों के साथ भी है। लक्ष्मी की प्रचलित साधनाओं के साथ ही साथ ऐसी साधनाएं भी हैं जो अपेक्षाकृत ढंग से कम समय में ही पूर्ण रूप से सिद्ध हो सकती हैं और निरंतर जीवन भर फलदायक बनी रह सकती हैं। ऐसी ही साधना है **"स्वर्ण प्रभा यक्षिणी साधना"**। मानव के लिए यक्षिणी वर्ग से अधिक सहायक वर्ग शायद ही कोई हो, जो अपनी विशेषता में अप्सरा और किन्नरी वर्ग से भी अधिक विविधता लिये हुए है। अप्सरा और किन्नरी तो देवताओं व मनुष्य के मध्य के बीच की कड़ी है जबकि यक्षिणी ऐसी अभिशप्त देवी होती है जो किसी श्राप के कारण या त्रुटि के चलते अपनी देह व योनि से च्युत होकर सूक्ष्म अथवा प्रकट रूप में इस धरा पर विचरण करती है। कुछ साधनाओं और क्रियाओं के द्वारा सिद्ध होने पर साधक के मनोरथों को पूर्ण कर उसे विभिन्न भोग, धन - आभूषण तथा उसकी विशिष्ट इच्छाओं की पूर्ति कर अपने श्राप के निराकरण का प्रयास करती है। देखा जाय तो यक्षिणी स्वयं ही आतुर रहती है कि कोई उसे सिद्ध कर उसके द्वारा तृप्त होकर उसके श्राप के विमोचन में सहायक सिद्ध हो। मूल रूप से उच्च योनि वर्ग की होने के कारण यक्षिणियां ऐसी - ऐसी दिव्य शक्तियों से युक्त होती है जिनकी साधक कल्पना भी नहीं कर सकता। दिव्य अंजन प्राप्त कर जमीन में गड़ा धन देख लेना, दिव्य औषधि प्राप्त कर वृद्धावस्था को नवयौवन में परिवर्तित कर देना, दिव्य लेप से झुर्रियां और पके बालों का दोष मिटा देना -- जैसे चमत्कार पूर्ण और अद्भुत आख्यानों का उल्लेख **मिश्र तंत्र** में विस्तार से वर्णित है।

ऐसे ही वर्ग की स्वर्णप्रभा यक्षिणी, जो अपने मादक स्वरूप से साधक को सरस बनाती है, **उसके विषय में शास्त्र प्रमाण है कि सिद्ध होने पर नित्य रात्रि में साधक के सम्मुख विविध आभूषणों से लदी हुई आकर, अनेक प्रकार से उसका मनोरंजन कर वह सुबह उन आभूषणों को वहीं छोड़, नित्य प्रति साधक को इतना धन प्रदान कर देती है, कि साधक को उसके व्यय का मार्ग ढूंढना पड़ता है।** अत्यन्त सरस विशाल नयनों वाली इस दिव्य यक्षिणी के साहचर्य में कुछ ऐसी विशेषता है जो अपने तीक्ष्ण कटाक्षों और चंचल हाव - भाव से सिद्ध साधक के सारे तन - मन को स्पंदित कर देती है। अलस उनींदें नयनों वाली यह चंचल यक्षिणी अपनी मंथर गति से शास्त्रों में वर्णित अभिसारिका नायिका का जीता जागता रूप प्रस्तुत करती है, और यौवन

से लबालब भरी उसकी गठन, अपने सौन्दर्य में अप्सरा और किन्नरी को मात करती हुई लगती है। **जिस साधक ने भी इसकी साधना की है उसे आकस्मिक धन लाभ हुआ ही है।** साधना की द्वितीय स्थिति में साधकों को नित्य प्रति अपने सिरहाने स्वर्ण की दो मुद्रायें पड़ी मिलनी आरम्भ हो जाती है, और पूर्ण सिद्ध साधक तो नित्य प्रति उसके साहचर्य का सुख यों अनुभव करता है जिस प्रकार से कोई गृहस्थ व्यक्ति अपने गृहस्थ सुख का उपभोग करता है। यह तो निर्भर करता है कि साधक के अन्दर साधना के प्रति कितनी लगन, धैर्य और तीव्रता है, लेकिन **ऐसा हो ही नहीं सकता कि साधक स्वर्ण प्रभा यक्षिणी की साधना करे और असफल रह जाए।**

यक्षिणी साधना करने के लिए आवश्यक नहीं कि किसी वृक्ष के मूल में बैठा जाए, श्मशान भूमि में जाएं अथवा तिराहे पर आसन जमाया जाए - जैसा कि अनेक शास्त्रों में वर्णित है। यक्षिणी साधना मूल रूप से पौरुष और दमखम की साधना है जिसको साधना के मध्य अपने अंदर तीव्रता धारण करने के साथ - साथ कुछ विशेष मुद्राओं के माध्यम से स्पष्ट किया जाता है। यक्षिणी साधनाओं में मुद्राओं का महत्व सबसे अधिक है, मुद्रा का तात्पर्य है हाथों द्वारा विशेष कार्य के लिए प्रदर्शित की जाने वाली क्रिया। यक्षिणी साधना में साधक सर्वप्रथम यक्षिणी का आह्वान करता है उसे अपने सामने आकर्षित करता है और आकर्षण के पाश्चात पास बिठाने के लिए सानिध्यकरण मुद्रा से मंत्र जप करता है, तत्पश्चात यक्षिणी को विदा देता है, जिसे यक्षिणी विसर्जन कहा जाता है।

आह्वान मुद्रा

यक्षिणी के आवाहन के लिए सर्वश्रेष्ठ मुद्रा योनि मुद्रा है और इस मुद्रा में भी बांये अंगूठे से आह्वान किया जाता है।

आह्वान मंत्र

ॐ ह्रीं आगच्छ स्वर्णप्रभा यक्षिणी स्वाहा।

सानिध्यकरण मुद्रा

यक्षिणी को अपने सानिध्य में अर्थात अपने पास बिठाने के लिए इस मुद्रा का प्रयोग कर मंत्र बोलना चाहिए। दोनों हाथों की मुठ्ठी बांधकर हाथ आगे कर मुठ्ठी फैलाएं और फिर बांधे, इस मुद्रा के दौरान ही निम्न मंत्र बोलें --

ॐ कामेश्वरी स्वाहा ।।

तदनन्तर **"ह्रीं"** मंत्र का सौ बार उच्चारण करते हुए दोनों हाथों को घड़े के आकर में स्थापित कर हृदय मुद्रा बनाएं। इससे यह यक्षिणी विशेष प्रसन्न होती है।

आकर्षण की क्रोध मुद्रा

उपरोक्त दोनों क्रियाओं के पश्चात क्रोध, मुद्रा में यक्षिणी का आकर्षण किया जाता है, इसमें दोनों हाथों की मुठ्ठी बांधकर पहले कनिष्ठका जोड़े तत्पश्चात तर्जनी को फैलाकर मोड़ दें और इस क्रोधान्कुष यक्षिणी आकर्षण मुद्रा में क्रोध मंत्र का जप १०१ बार जप अवश्य करना चाहिए।

क्रोध मंत्र

ॐ जूं कट्टटकट्ट स्वर्ण प्रभा यक्षिणी ह्रीं यः यः हुं फट्।।

विसर्जन मुद्रा

साधना की पूर्णता के पश्चात आह्वान मुद्रा की भांति ही योनि मुद्रा बनाकर यक्षिणी का विसर्जन किया जाता है।

विसर्जन मंत्र

ॐ ह्रीं गच्छ स्वर्ण प्रभा यक्षिणीशीघ्रां पुनरागमनाय स्वाहा।।

यक्षिणी साधना प्रयोग

यह मुख्य रूप से रात्रि के द्वितीय प्रहर अर्थात ११ बजे के पश्चात की जाने वाली साधना है। यक्षिणी साधना शुक्रवार को सम्पन्न की जाती है लेकिन कार्तिक माह में कभी भी सम्पन्न की जा सकती है। ज्योतिष की दृष्टि से इस विशेष माह में भी जो सफलतादायक मुहूर्त निर्मित हो रहे हैं, वे हैं - दिनांक - ६ .११.९३ , ११.११.९३ , १२.११.९३ , २२.११.९३ , २३.११.९३, २६.११.९३ ।

अर्ध रात्रि में साधक स्नान कर शुद्ध लाल वस्त्र धारण कर साधना स्थल में सुगन्धित पुष्प लाकर रखें। सुमधुर धूप एवं दीपक जलाने के पश्चात **स्वर्णप्रभा यक्षिणी यंत्र** का पूजन पुष्प तथा इत्र से करें। सबसे पहले आह्वान फिर आकर्षण तदन्तर मंत्र जप फिर सानिध्यकरण और उसके पश्चात विसर्जन क्रिया सम्पन्न करनी चाहिए। यह मंत्र जप केवल **हकीक माला** से ही सम्पन्न किया जा सकता है।

मंत्र -

ॐ ह्रीं जूं स्वर्ण प्रभा जूं ह्रीं फट्

उपरोक्त मंत्र का २१ माला मंत्र जप करना चाहिए यद्यपि पूर्ण विधान तो ५१ माला का है साधना के उपरान्त यंत्र एवं माला को लाल वस्त्र में बांध कर किसी मंदिर, पवित्र वृक्ष मूल अथवा पवित्र जल प्रवाह में विसर्जित कर देना चाहिए और पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए। आगे के दिनों में केवल कर माला से इस मंत्र का जप नित्य प्रति १०८ बार करना चाहिए। यदि **साधक को कोई अनुभव हो तो उसे गुरु आज्ञा के अतिरिक्त स्वयं न प्रकट करें। साधक चाहे तो यह सब कुछ न कर सीधे ही स्वर्णप्रभा यक्षिणी दीक्षा प्राप्त कर सकता है ।**

कनकप्रभा साधना

आप ३० दिनों में धनवान बन सकते हैं

साधना का एक रहस्य यह है कि इसमें अचानक छलांग मारकर बड़ी उपलब्धि अर्जित करने की अपेक्षा यदि लघु स्वरूपों और शीघ्र प्रकट होने वाले स्वरूप की साधना व आराधना करें तो जीवन में शीघ्र ही समस्त सफलताएं और अनुकूल स्थितियां निर्मित होने की दशा निर्मित हो जाती है। ठीक यही बात भगवती महालक्ष्मी के स्वरूप के साथ भी है साधना के प्रथम चरण में ही भगवती महालक्ष्मी का साक्षात् दर्शन पाना या उनके द्वारा मनोवांछित वर प्राप्त कर लेना साधक के लिए संभव नहीं है, इसकी अपेक्षा यदि वह देवी के किसी विशिष्ट स्वरूप की साधना करता है तो अपने भौतिक जीवन की कामनाएं तो शीघ्रता से पूर्ण करता ही है, साथ ही साथ साधनात्मक दृष्टि से भी कुछ पग और आगे बढ़ जाता है।

प्रस्तुत साधना एक ऐसी ही साधना है। समय - समय पर युग -दृष्टा ऋषियों और मंत्र- सृष्टा चिन्तकों ने एक ही साधना के जो विभिन्न रूप ढूंढे, उन्हें अपनी अनुभूति के आधार पर अलग - अलग नामों से संबोधित किया और यह उनके प्राणों का बल होता है कि वे मंत्रों के प्रभाव से देवी का वही स्वरूप गठित कर उन्हें उपस्थित होने के लिए विवश कर देते हैं। कनक प्रभा साधना ऐसी ही मांत्रोक्त साधना है जहां पर प्रखर ऋषि और युग -दृष्टा महर्षि याज्ञवल्क्य ने महालक्ष्मी को कनक प्रभा रूप में उपस्थित होने की एक विशिष्ट पद्धति ढूंढ निकाली।

एक युग पूर्व युग पुरुष आद्यशंकराचार्य जी ने जिस प्रकार से एक धनहीन विप्र की दरिद्रता से व्यथित होकर भगवती महालक्ष्मी का आवाहन कनक धारा रूप में किया था और देवी से प्रार्थना की थी कि वे अपने नाम के ही अनुकूल अपने प्रभाव से स्वर्ण की धारा जैसी समृद्धता प्रवाहित कर दें, ठीक उसी क्रम में उससे भी अधिक प्राचीन और सरल पद्धति से रची गयी साधना है -- कनक प्रभा साधना और तथ्य तो यह है कि इसी साधना के आधार पर कनक धारा देवी का चिंतन भगवतपाद ने अपने प्रसिद्ध स्तोत्र में किया है। प्राचीन कनक प्रभा ही उनके द्वारा कनक धारा रूप में विख्यात हुई।

देवी के उस स्वरूप को कनक धारा कहें अथवा कनक प्रभा का सम्बोधन दें तात्पर्य केवल एक ही है कि घर में और सन्यासी हो तो उसके आश्रम में धन का ऐसा प्रवाह आरम्भ हो जाए जो स्वर्णवर्षा जैसा हो क्योंकि धन की प्रचुरता से ही संभव है जीवन में प्रसन्नता का आगमन। धन केवल आवश्यकता अनुसार ही उपलब्ध होना जीवन की श्रेयता नहीं है। धन का

“ लक्ष्मी का ही साकार और आभामय रूप कनक प्रभा - स्वर्णिम कांति से आलोकित रत्न मण्डित आभूषण युक्त देवी कनक प्रभा जिनकी उपस्थिति ही जीवन को रत्न मंडित और आलोकित कर देने के लिए पर्याप्त है।

भगवती लक्ष्मी की कृपा का साकार पुंज और जो निश्चय ही उपस्थित होती है अपने साधक के आवाहन पर . . . ”

वास्तविक आनन्द यह है कि धन आवश्यकता से कहीं अधिक उपलब्ध हो, जिससे वर्तमान की सभी समस्याएं सुलझे हो, भावी जीवन के लिए हमारे मन में कोई आशंका या चिंता न रहे, क्योंकि जहां कल की चिंता है वहां निश्चिंतता नहीं और जहां निश्चिंतता नहीं वहां फिर कोई श्रेष्ठ धार्मिक या अध्यात्मिक चिंतन नहीं। नित्य प्रति की दरिद्रता धीरे - धीरे व्यक्ति के अन्दर घुलती हुई उसके मन, प्राण, आत्मा तक को दरिद्र, हीन और पतित बना देती है। जीवन की इन्हीं स्थितियों को समाप्त करने की साधना है -- **कनक प्रभा।**

भगवती महालक्ष्मी के साक्षात उपस्थित होने का अर्थ यही होता है कि हमारे जीवन में अनुकूलता प्रारम्भ हो, हमारे जीवन में मधुरता का आरम्भ हो। पौरुष और क्षमता का अतिरिक्त प्रभाव हो और यही लक्षण जीवन में आते हैं किसी साधना के माध्यम से या, किसी दैविक शक्ति शरीर में समाहित हो जाने से। और फिर कनक प्रभा . . . कनक प्रभा तो साक्षात उपस्थित हो जाने वाला स्वरूप है। अपने चैतन्य स्वरूप से साधक को आश्वस्त कर देने वाला स्वरूप है, जिससे साधक के मन में कोई द्वंद्व न रहे और वह निश्चिंत होकर साधना के मार्ग पर तेजी से गतिशील हो सके।

" पद्म की मंद आभा के समान वस्त्र धारण किये हुए विशाल चाक्षुषी देवी जिनकी पलकें अधमुंदी जिनके नयनों के छोर कर्णों को स्पर्श करते हुए प्रतीत होते हैं ऐसी सघन केश युक्ता, सुगन्धित केश युक्ता, पद्मगन्धा, सुमधुर गंध से समस्त वातावरण को आप्लावित करती हुई, देवी कनक प्रभा अपने शरीर पर धारण किये हुए विविध स्वर्णाभूषणों से वातावरण को जिस प्रकार शोभायमान कर रही है और जिनकी स्वर्णिम आभा से युक्त मुख श्री को देखते ही चित्त उनके चरणों में स्वतः नत हो जाता है उन देवी कनक प्रभा के चरणों में मेरा मस्तक सदा ही अवनत रहे। " देवी के उपरोक्त कनक प्रभा स्वरूप की ध्यान और स्तुति से स्पष्ट होता है कि वास्तव में कनक प्रभा भगवती महालक्ष्मी का ही स्वर्णिम और
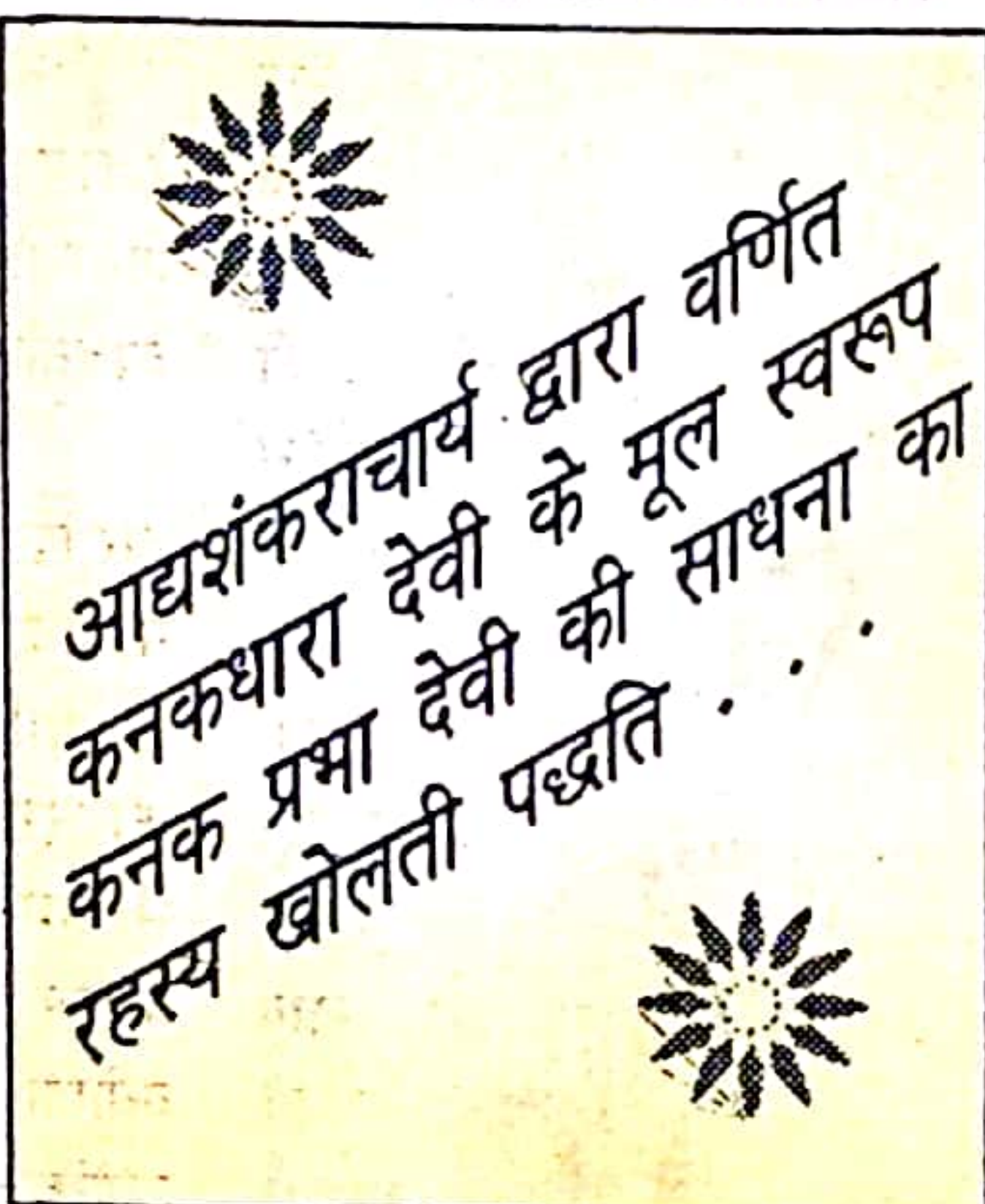
वरदायक स्वरूप है, ऐसे वरदायक स्वरूप की अभ्यर्थना करने की अपेक्षा किसी अन्य स्वरूप की आराधना फिर कहां तक तर्क सम्मत और बुद्धिमत्ता पूर्ण होगी। आगे इसी ध्यान में वर्णित है कि कनक प्रभा देवी के दोनों हाथों में से एक वर मुद्रा एवं दूसरा अभय मुद्रा में अवस्थित है, जिससे स्पष्ट होता है कि उनका यह स्वरूप पूर्ण रूप से अनुग्रहकारी है।

कनक प्रभा देवी तो मूलतः रस सिद्ध योगियों की पारद विज्ञानियों की आराध्या रही है क्योंकि इन्हीं की साधना पद्धतियों में छिपा है स्वर्ण निर्माण का रहस्य। स्वर्ण निर्माण जहां पारद विज्ञान के माध्यम से संभव है, जहां रसायन के माध्यम से संभव है, वहीं मांत्रोक्त पद्धति से भी पूर्ण रूप से संभव है, और कहते हैं इस साधना में सफलता मिलने पर देवी कनक प्रभा के इसी मंत्र में निहित वह गुप्त क्रिया भी प्राप्त हो जाती है जिसके द्वारा केवल तांबे को ही नहीं वरन अन्य सस्ती धातुओं को भी स्वर्ण में परिवर्तित किया जा सकता है।

यह तीस दिनों की साधना है और मांत्रोक्त साधना होने के कारण अपने गर्भ में, अपने आधार में, श्रद्धा विश्वास और भक्ति की अपेक्षा प्रबलता से सिद्ध होती है यह साधना। यदि कार्तिक माह के किसी भी दिन से प्रारम्भ कर आगे के तीस दिनों तक नियमित रूप से की जाय तो श्रेष्ठतम माना गया है अन्यथा किसी भी माह के शुक्ल पंचमी से प्रारम्भ किया जा सकता है, इसमें कोई दोष नहीं, यह साधना लम्बी अवश्य है किन्तु जटिल नहीं। महत्व केवल इस बात का है कि साधक इस पूरे एक माह में श्रद्धा पूर्वक सरलता और ब्रह्मचर्य से जीवन - यापन करें, केवल एक समय ही भोजन करें और दूसरे समय फलाहार अथवा दुग्धाहार लें, भूमि शयन करें और तामसिक विचारों से सर्वथा परे रहे। इसके अतिरिक्त कोई बंधन नहीं है। साधक अपने नित्य प्रति के जीवन को यथावत जी सकता है, व्यवसाय का कार्य कर सकता है, नौकरी पर जा सकता है, यात्राएं कर सकता है तथा भौतिक जीवन के लिए जो कुछ भी आवश्यक है उसे करने में कोई दोष नहीं।

साधना विधान

मंगल, शनि एवं रविवार को छोड़कर जिस दिन भी यह साधना प्रारम्भ करें उस दिन साधना कक्ष स्वच्छ और साफ हो, श्वेत आसन अथवा लाल रंग का ऊनी आसन बिछाएं और एक पात्र में गणपति विग्रह रख उनका पूजन केशर, अक्षत, पुष्प से करें। स्वस्ति पाठ करें--

ॐ श्रीं गणपतये नमः ऋद्धि सिद्धि सहितं मम गृहे महागणपतिं आवाहनं समर्पयामि

सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णक,
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननं,
द्वादशैतानि नामानि च पठेच्छ्रणुयादपि।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा,
संग्रामें संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।

इसके उपरान्त भूमि पर त्रिकोण बना कर (जो आप केशर अथवा अष्टगंध से बना सकते हैं) इसके ऊपर श्वेत आसन बिछायें और निम्न मंत्र पढ़ते हुए आन्तरिक और बाह्य शुद्धि करें --

ॐ अपवित्रः पवित्रो व सर्वास्थां गतोऽपि वा, यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं सः बाह्याभ्यारतं शुचिः।

तत्पश्चात मुख शुद्धि --

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा, ॐ अमृतापिधानामसि स्वाहा, ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीश्रयतां स्वाहा।

(पढ़ते हुए तीन बार जल मुंह में डालें) पृथ्वी पर हाथ रखकर आसन शोधन करें -

ॐ पृथ्वीत्वया धृता लोकांदेवि त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवी पवित्रं कुरु चासनम्।।

अब मूल साधना में प्रवृत्त हों। भगवती महालक्ष्मी का कनक वर्षिणी यंत्र स्थापित करें और प्रार्थना करें कि -- मैं भगवती महालक्ष्मी के ही शीघ्र फलदायक स्वरूप कनक प्रभा की साधना में प्रवृत्त हो रहा हूं, भगवती महालक्ष्मी मुझे यथा - शीघ्र सफलता प्रदान करें और ऐसा कहकर किसी श्रेष्ठ धातु के पात्र में (श्रेष्ठ धातु के अभाव में पुष्प पंखुड़ियों पर) पारद शंख स्थापित करें यदि आपके पास पहले से कोई पारद शंख हो और उस पर साधना की गई हो तब भी वह पूर्ण फलदायक है।

पारद निर्मित विग्रह पर साधना का महत्व हमने पिछले अंक में भली भांति स्पष्ट किया था, पारद तो एक ऐसी चैतन्य धातु है, जिससे निर्मित कोई भी विग्रह अपने आप में श्री युक्त होता ही है और इसी विशेषता से कनक प्रभा की साधना पारद शंख पर निश्चित रूप से फलदायी होती है क्योंकि पारद और स्वर्ण निर्माण का घनिष्ठ संबंध होता ही है। इसी साधना को अन्य दो विधियों से भी किया जा सकता है। जिन्हें मैं स्थानाभाव से देने में असमर्थ हूं तथा सर्वाधिक प्रमाणिक विधि यही है।

इस दुर्लभ पारद शंख पर अष्ट गंध से स्वस्तिक का निर्माण करें, गुलाब की पंखुड़ियां चढ़ाएं और एक बड़ा दीपक शुद्ध घी का जलाकर भगवती लक्ष्मी व उनके साकार प्रतीक विग्रह रूप में पारद शंख का संयुक्त पूजन करें और प्रार्थना करें ।

देवी कनक प्रभा इसी पारद की भांति बद्ध होकर अपने सहोदर तुल्य इस पारद शंख के रूप में मेरे घर में स्थायी निवास करें। भगवती महालक्ष्मी एवं शंख का पूजन सुगंध , कुंकुम , अक्षत, पुष्प, पंचामृत, दुग्ध निर्मित नैवेद्य, ताम्बूल एवं पुंगी फल (सुपारी) से करें। दक्षिणा रूप में इलाइची एवं लौंग समर्पित करें। **पारद माला** से निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जप सम्पन्न करें और मंत्र जप की समाप्ति पर एक बार पुनः कर्पूर आरती से महालक्ष्मी की आरती सम्पन्न कर "क्षमस्व परमेश्वरी" कहकर स्थान छोड़ें। इस साधना में प्रयुक्त होने वाला मंत्र है --

मंत्र-

ॐ ह्रौं ह्रं ह्रीं कनक प्रभा मम गृहे आगच्छ स्थापय फट्

इस साधना में यह आवश्यक नहीं कि आपने प्रथम दिन जिस समय साधना प्रारम्भ की, उसी समय से नित्य प्रति साधना प्रारम्भ करें। लेकिन एक क्रम निश्चित कर सकें तो लाभदायक रहेगा। यदि इन तीस दिनों में घर से बाहर जाना पड़े तब भी इस साधना को निरंतर कर सकते हैं, पारद निर्मित विग्रह को यात्रा में ले जाना शास्त्र सम्मत माना गया है। स्त्रियां रजस्वला काल में साधना स्थगित कर शेष दिनों में साधना पूर्ण कर सकती हैं, इसे व्यवधान नहीं माना जाता।

साधना के आरम्भ करने के तीन-चार दिन के बाद से मधुर सुगंध साधना कक्ष में पद्चाप, पायलों अथवा करधनी की ध्वनि, वस्त्रों की सरसराहट, कर्पूर की सुगंध , शीतलता जैसे विविध अनुभव भी प्रारम्भ हो जाते हैं यदि ऐसे अनुभव प्रारम्भ हो तो साधक और सजग हो जाए क्योंकि कनक प्रभा साधना के मध्य में ही उपस्थित हो जाती है।

कनक प्रभा का साधना के मध्य में उपस्थित होना साधना की पूर्णता मान लेना उचित नहीं क्योंकि यह एक निश्चित क्रम है तथा तीस दिन का साधनामय जीवन व्यतीत करना आवश्यक है।

प्रतिदिन इस साधना की समाप्ति पर सस्वर आद्यशंकराचार्य प्रणीत "कनक धारा स्तोत्र" का पाठ करना चाहिए क्योंकि कनक धारा और कनक प्रभा एक ही देवी के दो विभिन्न ढंग से वर्णन है।

घुड़दौड़ में मिलने वाली सफलता हो या लाटरी में मिलने वाला नम्बर, कौन व्यक्ति हमारे जीवन में लाभदायक होगा, किस स्रोत से हमें धन मिलेगा, किस व्यापार से रातों -रात लाभ हो जायेगा, ऐसी अनेक स्थितियां व्यक्ति को कनक प्रभा देवी के माध्यम से स्पष्ट होने लगती है, आवश्यकता है तो साधक के सतर्क और चौकन्ना रहने की क्योंकि साधना के पूर्ण होने से पूर्व भी सफलताएं मिलती देखी गयी है।

घर घर गूंजे अमृत वाणी

पूज्य पाद गुरुदेव के गुरु - गंभीर स्वर में रचे दुर्लभ ग्रंथ जो साकार हो उठेंगे आपके घर में . . .
जीवित, जाग्रत और सुरभिमय वातावरण की रचना करते हुए, ऑडियो एवं वीडियो कैसेट ।

ऑडियो कैसेट

१. लक्ष्मी मेरी चेरी :- आर्य ऋषियों ने साधनाओं के द्वारा ही प्राप्त किया अभूतपूर्व ऐश्वर्य उन्हीं साधनाओं का पूर्ण प्रामाणिक विवरण

२. नवरात्रि अहोभाव महोत्सव (६ भाग) :- शक्ति अर्जन का महापर्व है **"नवरात्रि"** -- और पूज्य गुरुदेव के चरणों में तो नवरात्रि पूजन बन जाता है "अहोभाव महोत्सव"। सैकड़ों शिष्यों की अनुभूति, साधना, पूज्य गुरुदेव का उद्‌बोधन सभी कुछ तो है इन केसेटों में

वीडियो कैसेट

१. साधना सिद्धि एवं सफलता :- परम पूज्य गुरुदेव की जीवन का एक मात्र लक्ष्य ही दुर्लभ मंत्र -तंत्र को वर्तमान युग में प्रामाणिकता से प्रस्तुत करके उनकी उपयोगिता को सिद्ध करना है , यही कारण है कि उनके चरणों में बैठ कर लाखों साधकों ने लाभ उठाया है। इस वीडियो कैसेट के माध्यम से आप भी सद्‌गुरुदेव के द्वारा घर बैठे ही साधना विधि समझ सकते हैं।

२. मां भगवती शत् शत् वन्दन : - पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा स्वयं भगवती दुर्गा के उच्च कोटि की साधनाओं का सूक्ष्म रहस्य पूर्ण प्रामाणिकता के साथ इस वीडियो केसेट में स्पष्ट किया गया है, जिसे देखकर साधना की ओर उन्नमुख हुए बिना नहीं रह सकेंगे।

(प्रत्येक वीडियो कैसेट की न्यौछावर २००/- तथा ऑडियो कैसेट की न्यौछावर ३०/- है)

: सम्पर्क :

गुरुधाम, ३०६-कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली-११००३४, टेली.-७१८२२४८,फैक्स- ७१८६७००

अथवा

मंत्र शक्ति केन्द्र , डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज.), टेली-०२९१-३२२०६
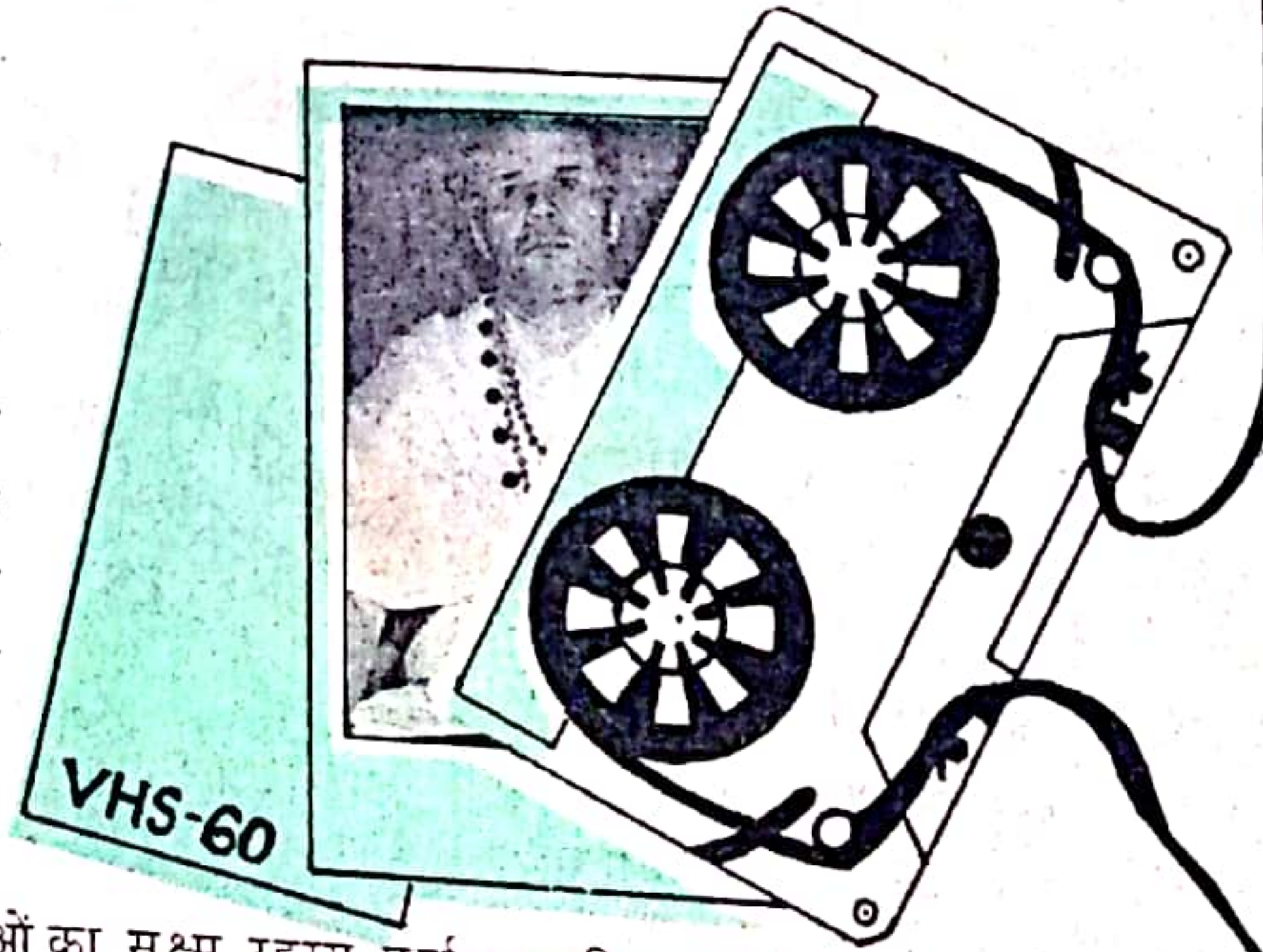
यौवन एवं सौन्दर्य की साकार साधना

सौन्दर्य लक्ष्मी

‘महालक्ष्मी का तो सम्पूर्ण स्वरूप ही सौन्दर्यमय है फिर उनकी किसी भी रूप में उपासना की जाय, किन्तु जहां बात आती हो यौवन की एवं इस शारीरिक सौन्दर्य की, तब तो उनका एक विशेष रूप - सौन्दर्य लक्ष्मी ही उतारना पड़ता है इस जीवन में। ‘सौन्दर्य पारिजात ग्रंथ’ से प्राप्त एक व्यावहारिक रूप, साधना सौन्दर्य लक्ष्मी को जीवन में उतारने की . . . ’

जीवन का कोई भी मोड़ क्यों न आ गया हो, आयु किसी भी पड़ाव पर पहुंच कर कुछ थक कर और कुछ रुक कर पीछे मुड़ कर देख रही हो, बस अभी - अभी बचपन के दूधिया कोहरे को छांटकर यौवन के सूर्य की ऊष्मा देखनी प्रारम्भ की हो या दिन भर की यात्रा के बाद सूरज की ढलती गहरी लाली जैसा यौवन हो गया हो, ऐसा हो ही नहीं सकता कि मन थक गया हो। मन तो वहीं खड़ा रहता है, जहां ओस में भीगी घास उन बूंदों के उस पार सूर्य के नवयौवन का प्रकाश निहारती रहती है। मन कभी भी नहीं थकता, थक तो जाता है यह शरीर और शरीर पर पड़ गई सलवटें देखकर मन को भी समझाने लगते हैं कि अब हमारे गतयौवन के दिन प्रारम्भ हो गये। सौन्दर्य और यौवन भी नहीं ढलता, हमारी धारणा ही उसे ढला मान लेती है। सौन्दर्य तो प्रत्येक स्थिति में सौन्दर्य होता है -- उफनती नदी का भी सौन्दर्य होता है, तो झील में रुके जल में भी, तेज झूमते वृक्षों पर भी सौन्दर्य झूम रहा होता है तो क्या निःस्तब्ध खड़े मौन गगन से बात करते वृक्षों में भी सौन्दर्य नहीं होता सौन्दर्य की कोई उम्र, कोई पड़ाव, कोई स्थिति , कोई धारणा नहीं बनाई जा सकती। रंग , नयन - नक्श, कद - काठी, ये तो मोटे तौर पर बनाई गयी धारणा है, सही अर्थों में तो सौन्दर्य वह है जो बस खींच ले जिसमें कोई गहनता हो और जिसके पास रुकने से मन में तृप्ति आती है। सौन्दर्य का बोध यह नहीं होता कि वह कितना उत्तेजक है, सौन्दर्य का बोध तो इसमें है कि उसमें कितनी तृप्ति है, जहां हम बैठे हैं और मन उस सौन्दर्य की मंद बयार से हल्के - हल्के झूमने लगे, वहीं सौन्दर्य है, और जीवन में ऐसा सौन्दर्य उम्र के सत्रहवें वर्ष में भी आ सकता है तो पैंतीसवें वर्ष में भी और पचासवें वर्ष में भी । यही सौन्दर्य की शालीनता है और इस सौन्दर्यता का बोध ही किसी का वास्तविक सौन्दर्य बोध।

सौन्दर्य निर्भर करता है, आन्तरिक सौन्दर्य पर और आन्तरिक सौन्दर्य आता है देवत्व पूर्ण चिन्तन से, निच्छलता से और सरलता से। रंग निखारा जा सकता है किसी प्रसाधन का सहारा लेकर, लेकिन भोलापन और मासूमियत निखारने की कोई क्रीम अभी तक नहीं बनी है, अल्हड़पन लाने का कोई फार्मूला भी नहीं बनाया जा सका, बरबस किसी को अपनी ओर खींच लाने वाली कशिश पैदा करने की कोई भी औषधि न तो बनी है न बनेगी। अपने पास किसी को खींच कर बैठा लेने का और उसका उठने का मन न चाहे -- ऐसा गोपनीय रहस्य तो केवल साधना के द्वारा ही किसी चेहरे पर, उसके सारे तन बदन पर संगीत की तरह बजता दिखाई देता है। नयनों और वाणी से कोयल की कुहूक बन कर जीवन की घनी अमराई में फूटता है, ऐसा ही सौन्दर्य मन पर वर्षा की पहली बूंद बन रिमझिम बन कर गिरता है और भर देता है एक सोंधी सी महक . . .

क्या होता है ऐसे सौन्दर्य का रहस्य, क्यों कभी - कभी और कहीं - कहीं ही दिखाई पड़ता है यह सौन्दर्य जो बरसों - बरस बीत जाने के बाद भी मन से भुलाए नहीं भूलता और मापदण्ड बन जाता है, जिसको याद कर हम किसी और का सौन्दर्य परखें। इसका अनुभव तो आप सबने भी किया होगा कि निश्चित रूप से सौन्दर्य कहीं अलग सी बात बन कर दिखाई देता है और इसका एक मात्र रहस्य है कि जिनके जीवन में आ समाई होती है 'सौन्दर्य लक्ष्मी' वे ही धनी होतें हैं ऐसे सौन्दर्य के। किसी - किसी को यह लक्ष्मी जन्म से और किसी को मिली होती है भाग्य से, जैसे कोई - कोई जन्म लेता है धन लक्ष्मी की गोद में। शेष सभी को यदि इसे पाना है तो दो उपाय शेष बचते हैं -- या तो व्यक्ति कड़ा परिश्रम करके अर्जित करे या फिर उसे ज्ञात हो सौन्दर्य लक्ष्मी साधना का रहस्य, लेकिन क्या कहीं सौन्दर्य भी परिश्रम से धन की भांति अर्जित किया जा सकता है?

पुरुष -- देवत्व पूर्ण मुख मुद्रा लिए बलिष्ठ शरीर, स्त्री -- सुगठित शरीर के साथ चेहरे पर लावण्य की हल्की पर्त झलकाती हुई। लगे कि हम जिस सौन्दर्य का वर्णन करते रहे वही कई - कई युग बाद आकर सामने खड़ा हो गया है। घुटनों तक लटकते बलिष्ठ लम्बे बाहु, उभरा हुआ सीना, गुलाबी आभा लिए सुगठित चेहरा, दृढ़ ठोढ़ी, लम्बी नासिका और कजरारी आंखें या . . . . . या फिर इकहरा मांसल बदन, सारे देह में मादक सी लहरें लिए हुए घने बाल और होंठों पर सलज्ज मुस्कान यही तो है सौन्दर्य की झलक और यही तो उतर आता है आंखों में सौन्दर्य की बात कहते - सुनते।
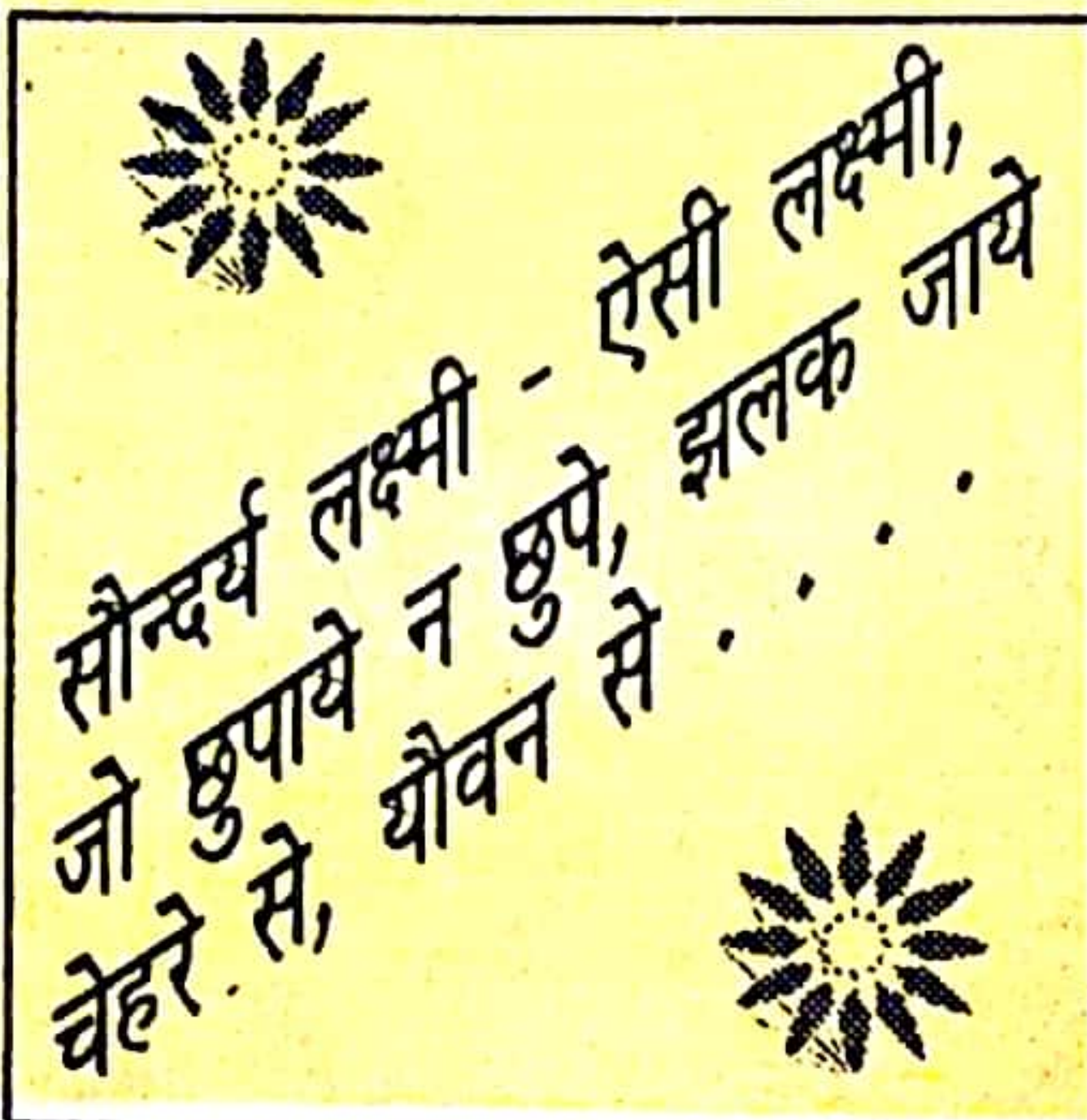
जीवन में इसको प्राप्त करने का एक ही उपाय है **'सौन्दर्य लक्ष्मी'**। सौन्दर्य लक्ष्मी किसी देवी विशेष का नाम नहीं, जब हम भगवती महालक्ष्मी की साधना उन्हें सौन्दर्य की प्रदात्री मान कर करतें हैं, तब वे ही उतर आती हैं सौन्दर्य लक्ष्मी बन कर और सौन्दर्य धन के रूप में दे जाती है उमंग, उल्लास, खिलखिलाहट, आकर्षण, सम्मोहन . . . और सौन्दर्य भी तो. . .

सौन्दर्य फिर टिक जाता है ऐसा कि जो न छलके न बिखरे बस अपनी ठण्डक से सामने वाले की आंखों में हल्की सी कोई लहर दौड़ा दे . . . शीतलता की।

देवी का सबसे अधिक मनोहर चित्रण जिस रूप में किया जाता है, वह है उसका भगवती महालक्ष्मी स्वरूप। कवियों और रचनाकारों ने देवी के मनोहर स्वरूप को लेकर अनेक सुन्दर कल्पनाएं की हैं, काव्य रचे हैं और उपमाएं दी हैं। बस यहीं तक नहीं उन्होंने और आगे बढ़कर उन्हें ही आधार बनाकर उपाय भी ढूंढ निकाले, गति, यौवन को प्राप्त करने के, असौन्दर्य को सौन्दर्य में परिवर्तित करने के, सौन्दर्य को और भी अधिक सजा - संवार देने की, यौवन की उछाल में कुछ और भी सूत्र जोड़ देने को और सौन्दर्य के तो सैकड़ों पक्ष रंग - अंगों का कटाव, केशों का घनापन, झुर्रियों का दूर होना, चेहरे पर ओज बढ़ना, कपोलों पर गुलाबी आभा पुष्प - गुच्छ की तरह आ मंडराना, आंखों में गुलाबी रंगत आ जाना या चमक उठना यौवन की तेजी। सौन्दर्य तो अंग - अंग की बात है, लेकिन क्या इतना सब कुछ एक साथ सवांरा जा सकता है? क्या जीवन में केवल सौन्दर्य को लेकर ही अपने बहुमूल्य समय में से अधिकांश समय व्यतीत किया जा सकता है? और ऐसे ही प्रश्नों के उत्तर हैं मध्य कालीन ग्रंथ **''सौन्दर्य पारिजात''** में। विद्वान, शास्त्रकार अनेक प्रश्नों को लेकर सौन्दर्य विषय पर सौन्दर्य की विवेचना

(शेष भाग पृष्ठ ६४ पर)

नवरात्रि पूजन एवं साधना

शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति समन्वितः ।।
सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्य समन्वितः ।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ।।

जो मनुष्य प्रत्येक आश्विन मास के शारदीय नवरात्रि में श्रद्धा और भक्ति से युक्त हो कर भगवती की पूजा और आराधना करता है वह सभी बाधाओं से निर्मुक्त होकर धनधान्य से पूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

आदिकाल से ही मानव की प्रवृत्ति शक्ति साधना की रही है। शक्ति साधना का प्रथम रूप भगवती दुर्गा ही मानी जाती हैं। विश्व में किसी न किसी रूप में देवी की पूजा शक्ति - रूप में प्रचलित है,और वह मातृ देवता के रूप में अधिक प्रतिष्ठित हैं। वह शक्ति दुर्गा हो, चाहे काली हो, वह परमाराध्या, ब्रह्ममयी महाशक्ति हैं जो विश्व चेतना के रूप में सर्वत्र व्याप्त हैं, वही विश्व की सृजनात्मक शक्ति मानी जाती हैं।

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा।
नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम्।।

कोई भी साधना बिना शक्ति उपासना के पूर्ण हो ही नहीं सकती। शक्ति साधना साधक के लिये उतनी ही आवश्यक है जितना एक शरीर के लिये भोजन आदि। मानव से महामानव बनने के लिये या पुरुष से पुरुषोत्तम बनने की यह परमोच्च विधा है। प्रत्येक महत्वपूर्ण व्यक्ति ने शक्ति उपासना को उपादेय समझा तथा अपने जीवन में इसे आत्मसात करके ही महापुरुष बन पाये तथा मानवोत्तर कार्यों को सम्पादित किया। नवरात्रि मात्र उत्सव ही नहीं है, यह साधकों के लिये साधनाओं के द्वारा कुछ विशिष्ट उपलब्धि प्राप्ति के लिये सौभाग्य दायक अवसर कहा गया है। प्रत्येक मानव के भीतर समाहित इस शक्ति पुंज को साधनाओं के द्वारा उद्भूत करने का यही सुअवसर होता है। **यह नवरात्रि इस वर्ष १६ अक्टूबर से २२ अक्टूबर तक है**। अपनी किसी भी प्रकार की कामनाओं को , चाहे वह अर्थ से संबंधित हो, चाहे रोग मुक्ति, अथवा ऋण मुक्ति, व्यापार वृद्धि भी या किसी अन्य प्रकार की अभिलाषा पूर्ति के लिये भगवती दुर्गा से संबंधित साधना अवश्य ही फलीभूत होती है।

नवरात्रि के दिन प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में साधक को उठ जाना चाहिए। स्नान आदि नित्य कर्मों से निवृत होकर लाल आसन पर पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके , शुद्ध धोती पहन कर ऊपर गुरुनामी चादर ओढ़ कर बैठ जाना चाहिए। पूजन करते समय अपनी पत्नी को या अपने संबंधियों को भी अपने दाहिने हाथ की ओर बैठाना चाहिए। पूजन से पूर्व आपके पास निम्न सामग्री होनी चाहिए।

जल पात्र, नारियल, चावल, कुंकुम, मौली, ५ गोल सुपारी, दूध ,दही, घी, शहद, शक्कर , लौंग, इलायची, फल, प्रसाद, यज्ञोपवीत, **प्राण - प्रतिष्ठित महादुर्गा यंत्र**,पुष्प एवं पुष्प माला, **दुर्गा गुटिका, काली गुटिका, सरस्वती गुटिका** तथा **शक्ति माला।**

प्रयोग विधि :

आत्म शुद्धि --

बांये हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से अपने ऊपर जल छिड़कें और निम्न मंत्र को पढ़ें --

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

आचमन --

निम्न तीनों सन्दर्भों को पढ़कर तीन बार आचमन करें --

ॐ नारायणाय नमः , ॐ केशवाय नमः , ॐ माधवाय नमः

गणपति पूजन --

अपने सामने एक चौकी बिछा कर उसमें सफेद रंग का वस्त्र बिछा दें। सामने एक थाली रखकर उसमें कुंकुम से स्वस्तिक चिन्ह बनाएं, उस पर गणपति की मूर्ति रख दें, यदि न हो तो गोल सुपारी को मौली बांध कर गणेश के रूप में स्थापित कर दें एवं हाथ जोड़कर प्रार्थना करें --

गजाननं भूत गणाधिसेवितं कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणम्

उमासुतं शोक विनाश कारकं नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्।

इसके बाद गणपति को बैठने के लिये पुष्प आसन दें। पाद प्रक्षालन के लिए आचमनी से जल चरणों में चढ़ा दीजिए अर्घ्य तथा आचमन कराकर **ॐ गणेशाय नमः** मंत्र से स्नान कराएं। वस्त्र के लिये मौली चढ़ावे। **ॐ गणेशाय नमः** इस मंत्र से एक यज्ञोपवीत चढ़ाकर तिलक करें। पुनः अक्षत चढ़ाएं तथा एक पुष्प माला गणेश जी को चढ़ाएं। धूप और दीप दिखाकर मीठे प्रसाद का भोग लगाएं तथा फल चढ़ा कर आचमन कराएं, फिर हाथ जोड़कर अपनी मनोकामना पूर्ति की प्रार्थना करें।

संकल्प --

ॐ विष्णुर्विष्णु श्रीमद्भगवतो विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्वेत वाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्तैक देशान्तरे पुण्यक्षेत्रे कलियुगे कलि प्रथम चरणे मासानाम्उत्तमे मासे आश्विन मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदा तिथौ शनि वासरे अमुक (गोत्र) उत्पन्न अमुक कामना सिद्धयर्थे दुर्गा पूजन विधानम् तथा साधनाम् करिष्ये।

इसके बाद दाहिने हाथ में संकल्प हेतु , लिये गये जल को भूमि पर छोड़ दें। ऊपर संकल्प में जहां- जहां 'अमुक' शब्द आया है वहां वहां उस दिन का नाम अपना नाम, गोत्र और मनोकामना का उच्चारण करना चाहिए। उसी चौकी पर बाएं हाथ के कोने में कलश स्थापन करें। वहां पर स्वस्तिक चिन्ह बना कर एक कलश रख दें, उसे जल से पूरा भर दें। उसमें एक सुपारी, एक रुपया तथा कुछ दूर्वादल डाल दें, कलश के ऊपर पांच बिन्दी कुंकुम से लगाएं इसके बाद लाल वस्त्र को कलश के ऊपर लपेट दें। उसके ऊपर नारियल रख दें। जल का छींटा देकर कुंकुम अक्षत धूप दीप से उसका पूजन करें तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करें --

सर्वे समुद्राः सरिता स्तीर्थानि जलदा नदाः, आयन्तु देव पूजार्थं दुरितक्षय कारकाः ।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति, नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

पूर्वे ऋगवेदाय नमः , दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः, पश्चिमे सामवेदाय नमः। उत्तरे अथर्ववेदाय नमः कलश मध्ये अपां पतये नमः। प्रसन्नोभव। अनया पूजनया वरुणाद्यावाहिता देवता प्रीयतांन मम।

इसके बाद संक्षिप्त गुरु पूजन करने के बाद उसी चौकी के दाहिने कोने पर चावल की तीन ढेरियां बना लें। पहली लाल रंग की ढेरी पर दुर्गा गुटिका , दूसरी काली ढेरी पर काली गुटिका तथा तीसरी ढेरी के ऊपर सरस्वती गुटिका रख दें। यह तीनों देवियों के विग्रहात्मक प्रतीक हैं इनका भी ऊपर बताये विधि अनुसार चंदन, अक्षत आदि से संक्षिप्त पूजन करें । इसके बाद एक बड़ी थाली में दुर्गा महायंत्र को कुंकुंम से स्वस्तिक बना कर स्थापित करें। दूध, दही, घी, शक्कर, शहद पंचामृत से स्नानं कराएं। बाद में शुद्ध जल से स्नान कराकर कपड़े से पोंछ लें, फिर दूसरी थाली रखकर उसमें यंत्र को स्थापित करें। आसन के लिये पुष्प प्रदान करें और निम्न मंत्र पढ़ें -

रम्यम् सुशोभिनं दिव्यं सर्वसौगन्ध संयुतम्, आसनं च मया दत्तम् ग्रहाण परमेश्वरि। (पुष्प का आसन दें।)

पाद्यम् :- गंगोदकम् निर्मलं च सर्वसौगन्ध संयुतं पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तम् ते प्रतिगृह्यताम्। (आचमनी से जल चढ़ाएं)

अर्घ्य :- अर्घ्यं गृहाण देवेशि गंधपुष्पाक्षतैः सःह करुणाकर मे देवि गृहाण अर्घ्यं नमोस्तुते । (जल चढ़ाएं)

आचमन :- सर्वतीर्थ समानीनतम् सुगन्धिं निर्मलं जलं, आचमनीयं मया दत्तम् गृहाण जगदम्बिके।

स्नानं :- गंगा सरस्वती रेवा पयोष्णि नर्मदा जलैः, स्नापितासि मया देवि तथाशांतिं कुरुष्व मे। (जल चढ़ाकर स्नान कराएं)

वस्त्र :- सर्व भूषादिके सोम्ये लोक लज्जा निवारणे मयोपपादिते तुभ्यं गृहयतां परमेश्वरि । (वस्त्र चढ़ाएं)

चंदन :- श्री खंण्ड चंदनं दिव्यं गंधाढयं, सुमनोहरम् चंदनं देव देवेशि दत्तंतेप्रतिगृह्यताम्। (कुंकुम एवं चन्दन लगाएं)

अक्षत :- अक्षतान् धवलान् देवि शालीयान् तन्दुलान् तथा आनीतान् तव पूजार्थम् गृहाण परमेश्वरि।

पुष्प :- माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै विभे, मायोपपादिते तुभ्यं गृहयताम् जगदम्बिके। (पुष्प , पुष्प माला चढ़ाएं)

धूप :- वनस्पति रसोदभूता गंधाढ्यः सुमनोहरः आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयम् प्रतिगृह्यताम्।

दीप :- साज्यम् च वर्ति सयुक्तं वह्निना योजितं मया, दीपं गृहाण देवेशि सर्वत्र तिमिरापहा।

नैवेद्य :- शर्कराघृत सयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमं उपहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् (मिठाई का भोग लगाएं)

पुनः आचमन कर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें --

जयति जयति देवी देव संघातपूज्या, जयतु जयतु भद्रा भूम रूपा भवानी।
जयतु जयतु नित्या निर्मलज्ञान वेद्या, जयतु जयतु संवित् सच्चिदानन्द रूपा।।

इस पूजन के बाद अपने संकल्प में कहे हुए मनोकामना सिद्धि के लिये निम्न मंत्र का ५१ हजार मंत्र जाप करें -- यह मंत्र जप नवरात्रि में ही पूरा करना है।

मंत्र :- **ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।।**

जप समाप्ति के बाद भगवती की आरती संपन्न करें। प्रसाद आदि वितरण करें। नवरात्रि की समाप्ति पर यंत्र तथा गुटिका को अपने पूजा स्थान या गल्ले आदि में रख दें , कलश के जल को सारे घर में छिड़क दें। इस तरह नवरात्रि पूजन एवं साधना संपन्न करनी चाहिए।

इन्हीं नवरात्रि के दिनों में उपरोक्त दुर्गा यंत्र पर कुछ विशेष प्रयोग - संपन्न कर सकते हैं जो आपके लिये बहुत ही महत्वपूर्ण हैं --

१. लक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग :-

नया व्यापार शुरू करने के लिये, आर्थिक उन्नति के लिए, आकस्मिक धन प्राप्ति के लिये, व्यापार बन्ध आदि को दूर करने के लिए उपरोक्त पूजन करने के बाद ५१,००० निम्न मंत्र का **मूंगा माला** से मंत्र जप करने पर सफलता मिलती है --

मंत्र : - **ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ।।**

२. शत्रु निवारण प्रयोगः-

शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिये, मुकदमे में सफलता के लिए, शत्रुओं को अपने अनुकूल बनाने के लिए, नवरात्रि के दिनों में दुर्गा महायंत्र के सामने निम्न मंत्र का ५१,००० मंत्र जप **काली हकीक माला** से करने पर सफलता मिलती है।

मंत्र :- **हूँ ऐं ऐं ह्रीं चामुण्डायै स्वाहा ।**

३. रोग मुक्ति का प्रयोग :-

पुरानी बीमारी को दूर करने के लिये, आरोग्य प्राप्ति के लिए, तथा अकाल मृत्यु को दूर करने के लिए, दुर्गा महायंत्र के सामने **लाल हकीक माला** से ५१००० निम्न मंत्र का जप करने से सफलता मिलती है।

मंत्र :- **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं क्लीं नमः।**

४. गृहस्थ प्रयोग :-

कन्या के शीघ्र विवाह के लिये, पति - पत्नी में मधुर संबंध के लिए, अनुकूल संतान प्राप्ति के लिये उपरोक्त महायंत्र के सामने **मूंगा माला** से ५१,००० मंत्र जप करने पर पूर्ण सफलता मिलती ही है।

मंत्र :- **ॐ ऐं ऐं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं नमः**

(पृष्ठ १० का शेष भाग)

४. विजय गणपति बुधवार को अपने पूजा - स्थान में स्थापित करें और नित्य उसके सामने अगरबत्ती और दीपक लगायें तो व्यक्ति के वे सभी कार्य संपन्न होते हैं जो उसके जीवन की इच्छायें होती है।

५. यदि किसी भी यंत्र या प्रयोग से सफलता नहीं मिल रही हो तो उसे अवश्य ही विजय गणपति स्थापित करना चाहिये।

कमल गट्टे की माला -

१. जो व्यक्ति प्रत्येक बुधवार को १०८ कमलगट्टे के बीज लेकर धृत के साथ एक - एक करके अग्नि में समर्पित करता है और १०८ आहुतियां देता है तो उसके घर से दरिद्रता निश्चय ही समाप्त हो जाती है।

२. जो पूजा - काल में कमलगट्टे की माला अपने गले में धारण किये रहता है उस पर लक्ष्मी निश्चय ही प्रसन्न रहती है।

३. यदि नित्य १०८ कमल के बीजों से आहुति दें और ऐसा २१ दिन तक करें तो आने वाली कई पीढ़ियां सम्पन्न बनी रहती है।

४. दीपावली के दिन कमलगट्टे की माला के एक- एक मनके को अलग कर घी शहद और शक्कर के साथ **" ॐ भगवती महालक्ष्मै नमः स्वाहा "** मंत्र से १०८ आहुतियां दें तो निश्चय ही लक्ष्मी प्रसन्न होती है और उसके जीवन के मन चाहे कार्य सम्पन्न होते हैं।

५. यदि दुकान में कमलगट्टे की माला बिछा कर उसके ऊपर भगवती लक्ष्मी का चित्र स्थापित किया जाता है तो व्यापार में कमी आ ही नहीं सकती। उसका व्यापार निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर होता रहता है।

६. यदि कमलगट्टे की माला भगवती लक्ष्मी के चित्र पर पहना कर किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर देता है तो उसके घर में निरंतर लक्ष्मी का आगमन बना रहता है।

लघु नारियल -

लघु नारियल के कई प्रयोग हैं और यह भगवती लक्ष्मी का ही पर्याय है। वास्तव में लघु नारियल के प्रयोग पूर्णता युक्त होते ही हैं --

१. यदि बुधवार के दिन ११ लघु नारियल स्थापित कर उस पर केसर का तिलक लगायें और फिर ११ माला मंत्र **" ॐ श्रीं महालक्ष्मै श्रीं नमः "** का जप करें तो पांचो प्रकार की लक्ष्मी उसके घर में स्थापित होती है।

२. यदि बुधवार के दिन ११ लघु नारियल लेकर उस पर **" ॐ श्रीं पुत्र लक्ष्मै नमः "** मंत्र की एक माला मंत्र जप करें और वे लघु नारियल बुधवार को ही तालाब में विसर्जित कर दें तो घर में पुत्र उत्पन्न होता है तथा घर में सुख शांति बनी रहती है।

३. यदि सोमवार के दिन पांच लघु नारियल लेकर रोगी के सिर पर घुमा कर किसी नदी या तालाब में फेंक दे, तो उसी समय से रोगी का रोग समाप्त होने लग जाता है।

४. यदि २१ लघु नारियल लेकर कोई कुमारी कन्या **" ॐ श्रीं वर प्रदाय श्रीं नमः "** बोलकर एक - एक लघु नारियल भगवान शिव को समर्पित करे और फिर वह लघु नारियल किसी मंदिर में चढ़ा दे तो शीघ्र ही उसका विवाह हो जाता है।

५. यदि ११ लघु नारियल लेकर रसोई घर में किसी स्थान पर रख दें, तो घर में अन्न का भण्डार भरा रहता है और उन्नति होती रहती है।

स्फटिक माला -

स्फटिक माला तो भगवती लक्ष्मी का ही स्वरूप माना गया है और इस पर मैंने जितनी बार प्रयोग किया है, वे सभी सफल हुए हैं --

१. यदि स्फटिक माला पूजा - स्थान में रहती है और उससे नित्य **"ॐ श्रीं लक्ष्मै नमः"** मंत्र का जप किया जाय तो वह स्फटिक माला पूर्ण लक्ष्मी का स्वरूप बन जायगी और उसके घर में लक्ष्मी निरन्तर बनी रहती है।

२. यदि कोई व्यक्ति स्फटिक माला धारण किये रहता है तो उसके जीवन में आर्थिक अभाव रह ही नहीं सकता ।

३. यदि स्फटिक माला धारण करके किसी से मिलने जाता है तो उसका कार्य निश्चित रूप से होता ही है।

४. स्फटिक माला पर लक्ष्मी का चित्र रख कर, इसे घर के पूजा - स्थान में रख दें तो जब तक यह माला और चित्र घर में रहेंगें तब तक लक्ष्मी का आगमन बना रहेगा।

५. यदि मंत्र सिद्ध लक्ष्मी स्फटिक माला दुकान के गल्ले में रखें तो आश्चर्यजनक रूप से आर्थिक उन्नति होने लगती है।

गोमती चक्र -

गोमती चक्र दिखने में भले ही सामान्य से प्रतीत होते हैं, मगर गोमती चक्र का अपने आप में विशेष महत्व है --

१. यदि चार गोमती चक्र बुधवार के दिन अपने सिर पर धुमाकर चारों दिशाओं में फेंक दे, तो व्यक्ति पर किये गये तांत्रिक प्रभाव की समाप्ति हो जाती है।

२. यदि गोमती चक्र चांदी में जड़वा कर बच्चे के गले में पहना दिया जाय तो बच्चे को नजर नहीं लगती और वह स्वस्थ बना रहता है।

३. यदि पांच गोमती चक्र दीपावली के दिन पूजा घर में स्थापन करें और उन्हें लक्ष्मी मानकर पूजन अर्चन करें तो उसके जीवन में निरन्तर उन्नति बनी रहती है।

४. यदि स्वास्थ्य ठीक नहीं हो तो सात गोमती चक्र अपने सिर पर घुमा कर किसी ब्राह्मण या फकीर को दान में दे दें, तो रोग उसी क्षण से समाप्त होना शुरू हो जाता है।

५. यदि ११ गोमती चक्र लाल पोटली में बांधकर दुकान में किसी भी स्थान पर रख दें तो जब तक वह पोटली दुकान में रहेगी तब तक निश्चय ही व्यापार में उन्नति होती रहती है या व्यापार रुक गया है तो वापिस व्यापार प्रारम्भ होता है और व्यापार में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आती।

मोती शंख -

यह छोटा सा शंख होता है जो कि लक्ष्मी का ही पर्याय माना गया है, इस पर कई प्रयोग हैं और श्रेष्ठ व्यक्ति ही इन प्रयोगों को सम्पन्न करता है। इस पर कई प्रयोग हैं इनमें से कुछ प्रमुख - प्रयोग

१. यदि मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त मोती शंख लेकर अपने पूजा स्थान में स्थापित करता है और उसमें जल भरकर लक्ष्मी के चित्र या विग्रह पर चढ़ाता है तो लक्ष्मी प्रसन्न होती है और आर्थिक उन्नति होती रहती है।

२. इस प्रकार के मोती शंख को घर में स्थापित कर दें और नित्य '**ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः**' ११ बार बोलकर एक एक चावल का दाना शंख में भरता रहे, इस प्रकार १०८ दाने इस शंख में डाले और इस प्रकार ११ दिन तक प्रयोग करें तो जन्म - जन्म की दरिद्रता समाप्त हो जाती है।

३. यदि इस प्रकार का मोती शंख गल्ला रखने के स्थान पर रखा जाय तो व्यापार में बेतहाशा वृद्धि होती है।

४. यदि बुधवार के दिन किसी गिलास में पानी भरकर उसमें यह शंख रख दें और एक घंटे बाद ऐसा जल रोगी पर छिड़कें, तो उसका रोग समाप्त होने की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

५. यह एक अचूक प्रयोग है मोती शंख को चावलों से भरकर लाल कपड़े में बांध लें और यह पोटली घर में किसी स्थान पर रख दें तो लक्ष्मी प्राप्ति स्वतः होने लगती है। जब तक वह पोटली घर में रहेगी निरन्तर उन्नति होती रहेगी।

दक्षिणावर्ती शंख :

१. दक्षिणावर्ती शंख मंहगा जरूर होता है, किंतु यह साक्षात् लक्ष्मी का ही स्वरूप होता है। ऐसा सम्भव ही नहीं है कि घर में दक्षिणावर्ती शंख हो और घर में लक्ष्मी की न्यूनता रहे।

२. वास्तव में वह व्यक्ति सौभाग्यशाली होता है जिसके घर में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त दक्षिणावर्ती शंख होता है।

३. घर में यदि दीपावली के दिन पति - पत्नी दोनों मिलकर दक्षिणावर्ती शंख, स्थापित करें । शंख पर स्वस्तिक बनायें और हाथ जोड़कर प्रार्थना करें कि मेरे घर में स्थायी रूप से लक्ष्मी स्थापित हो, तो निश्चय ही जीवन - पर्यन्त उसके घर में लक्ष्मी बनी रहती है और आर्थिक उन्नति होती रहती है।

४. दक्षिणावर्ती शंख को चावलों से भर कर लाल वस्त्र में बांध कर यदि घर में स्थापित कर दिया जाय तो जब तक वह शंख घर में स्थापित रहता है, आर्थिक न्यूनता रह ही नहीं सकती।

५. दक्षिणावर्ती शंख पूर्ण लक्ष्मी का परिचायक होती ही है। यदि यह मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होता है तो उसके माध्यम से साधक **'ॐ श्रीं श्रियै नमः'** मंत्र की एक माला फेर कर जो भी इच्छा करता है वह इच्छा अवश्य ही पूरी होती है।

सियार सिंगी -

सियार सिंगी अपने आप में ही तांत्रिक प्रभाव लिए हुए होता है और इस पर कई प्रयोग हैं --

१. यदि पांच सियार सिंगी लेकर अपने सिर पर घुमाकर मंगलवार के दिन ज़मीन में गाड़ दें तो घर पर किया हुआ तांत्रिक प्रयोग समाप्त हो जाता है।

२. यदि किसी ने व्यापार बांध दिया हो या धन का आवागमन रुक गया है, तो सियार सिंगी लेकर उसे घी के साथ अग्नि में समर्पित कर दें, तो तांत्रिक प्रभाव समाप्त हो जाता है।

३. यदि दो सियार सिंगी काले धागे में बांध कर दक्षिण दिशा की ओर मंगलवार को फेंक दें तो व्यक्ति की दरिद्रता समाप्त हो जाती है।

४. व्यापार रोक दिया हो तो आवश्यक है कि मंत्र सिद्ध सियार सिंगी लेकर दुकान में किसी स्थान पर रख दें और उसके ऊपर एक पत्थर रख दें। यदि लक्ष्मी बंधन प्रयोग किया गया है तो समाप्त हो जाता है।

५. यह निश्चित है कि यदि रोगी व्यक्ति अपने सिर पर यह सियार सिंगी को घुमाकर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें तो उस व्यक्ति का रोग उसी क्षण से समाप्त होने लग जाता है।

मधुरूपेण रुद्राक्ष -

रुद्राक्ष को तो भगवान शिव का स्वरूप माना गया है पर लक्ष्मी से संबंधित भी कई प्रयोग इस पर किये जाते हैं --

१. जिसके घर में ११ मधुरूपेण रुद्राक्ष होते हैं और उनकी नित्य पूजा अर्चना होती है तो उस घर में दरिद्रता नहीं रहती है।

२. सोमवार के दिन ११ मधुरूपेण रुद्राक्ष लेकर व्यक्ति शिवलिंग पर चढ़ायें और कहे कि मेरी दरिद्रता समाप्त हो, तो निश्चय ही उसकी दरिद्रता समाप्त हो जाती है। यह प्रयोग भी अत्यन्त श्रेष्ठ है।

३. यदि घर से बीमारी जा ही नहीं रही हो, कोई न कोई बीमार बना रहता हो, तो ११ मधुरूपेण रुद्राक्ष लेकर घर के सारे सदस्यों के ऊपर घुमाकर यदि दक्षिण दिशा की ओर फेंक दिया जाता है तो बीमारी समाप्त हो जाती है।

४. यदि ५ मधुरूपेण रुद्राक्ष लेकर भगवती लक्ष्मी को समर्पित कर दूसरे दिन नदी या तालाब में विसर्जित कर दिये जाते हैं तो उसके घर में निरन्तर धन का प्रवाह बना रहता है।

५. २१ मधुरूपेण रुद्राक्षों से जो दीपावली के दिन अग्नि में घी और शक्कर के साथ आहुति देता है और प्रत्येक आहुति के साथ **" ॐ श्रीं श्रीं श्रियै नमः "** मंत्र का उच्चारण करता है तो उसके घर में आश्चर्य जनक रूप से धन का आगमन प्रारम्भ हो जाता है।

हकीक पत्थर -

१. हकीक अपने आप में लक्ष्मी का प्रतीक माना गया है, जिसके घर में दरिद्रता हो उसे चाहिए कि दीपावली के दिन मंत्र सिद्ध २१ हकीक पत्थर लेकर जमीन में गाड़ दे तो उस दिन से ही उसके घर में आर्थिक उन्नति होने लगती है।

२. जो व्यक्ति श्रेष्ठ धन की इच्छा रखते हैं उनको चाहिए कि २७ हकीक पत्थर लेकर उसके ऊपर लक्ष्मी का चित्र या विग्रह स्थापित करें तो निश्चय ही उसके घर में आर्थिक उन्नति होती ही रहती है।

३. यदि ११ हकीक पत्थर पर शत्रु का नाम लेकर यदि जमीन में गाड़ दें तो उसी समय से शत्रु का पतन प्रारम्भ हो जाता है।

४. यदि ११ हकीक पत्थर लेकर किसी मंदिर में चढ़ा दें और कहें कि मैं अमुक कार्य में विजयी होना चाहता हूं तो निश्चय ही उस कार्य में विजय प्राप्त करता है।

५. संतान सुख के लिए दीपावली के दिन २१ हकीक पत्थर लेकर पूजा करके **" ॐ श्रीं पुत्राय महालक्ष्म्यै नमः "** कहकर फेंकता है तो शीघ्र ही उसके घर में पुत्र की प्राप्ति होती है या पुत्र की उन्नति होती है।

एकाक्षी नारियल -

१. कई शास्त्रों में लिखा है कि जिसके घर में एकाक्षी नारियल होता है तो उसके घर में दरिद्रता आ ही नहीं सकती ।
२. यदि किसी प्रकार के तांत्रिक प्रभाव से व्यक्ति पीड़ित हो तो एकाक्षी नारियल पीले कपड़े में लपेट कर नदी या तालाब में विसर्जित कर देता है तो उसी दिन से तांत्रिक प्रभाव समाप्त हो जाता है।
३. एकाक्षी नारियल को दीपावली की रात्रि में अपने पूजा स्थान में रखे और फिर दूसरे दिन उसकी गिरि से आहुति दी जाय , तो उसके घर में निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहती है ।
४. जो व्यक्ति एकाक्षी नारियल में छेद कर उसमें घी भर कर अग्नि में समर्पित करता है तो उसके व्यापार में आश्चर्य जनक रूप से आर्थिक उन्नति प्राप्त होती है।
५. जो अपनी दुकान में एकाक्षी नारियल सात दिन तक रखकर फिर उसे किसी मंदिर में चढ़ा देता है तो दुकान की न्यूनता व तांत्रिक प्रभाव समाप्त हो जाता है और व्यापार में वृद्धि होने लगती है।
यों भी एकाक्षी नारियल का घर में रहना शुभ माना गया है और वास्तव में वे व्यक्ति सौभाग्यशाली होते हैं जिनके घर में एकाक्षी नारियल होता है।

कुबेर यंत्र -

१. अत्यंत सौभाग्यशाली व्यक्ति ही अपने घर में कुबेर यंत्र स्थापित कर पाते हैं। यह तो अपने आप में पूर्ण लक्ष्मी का चैतन्य स्वरूप है। यदि आपके घर में कुबेर यंत्र हो तो जीवन में किसी भी प्रकार की न्यूनता रह ही नहीं सकती।
२. कुबेर यंत्र के सामने यदि नित्य " **ॐ ह्रीं धन धान्य समृद्धि देहि देहि कुबेराय नमः** "मंत्र की एक माला मंत्र जप करें, तो उसके घर में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि होने लगती है।
३. दीपावली की रात्रि को अपने घर में कुबेर यंत्र स्थापित करना ही अपने आप में अत्यंत सौभाग्यशाली माना गया है और ऐसा व्यक्ति जीवन में सभी दृष्टियों से उन्नति करता है।
४. जिसके घर में कुबेर यंत्र स्थापित होता है, उसके घर में कभी अकाल मृत्यु नहीं होती और न उसके बच्चों को व्याधि ही सताती है।
५. जिसके घर में कुबेर यंत्र स्थापन होता है,उसे जीवन में सभी प्रकार की उन्नति प्राप्त होती है।

लक्ष्मी माला -

१. जो व्यक्ति अपने गले में लक्ष्मी माला धारण किये रहते हैं वे निरंतर उन्नति करते हैं।
२. यदि व्यक्ति लक्ष्मी माला धारण कर परीक्षा या इंटरव्यू देने जाता है तो अवश्य ही सफलता प्राप्त करता है।
३. लक्ष्मी माला धारण करने से व्यक्ति का हौसला बढ़ जाता है और उसकी वाणी सफल हो जाती है।
४. निरन्तर आर्थिक उन्नति चाहने वाले व्यक्ति को अपने घर में लक्ष्मी माला अवश्य ही स्थापित करनी चाहिए और उसे अपने गले में पहने रखना चाहिए।
५. यदि घर के किसी स्थान में या जहां रुपये - पैसे रखते हैं वहां लक्ष्मी माला रखी रहती है, तो उसके घर में निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहती है और आश्चर्यजनक अनुकूल परिणाम प्राप्त होते हैं।

विद्युत लक्ष्मी यंत्र :

१. यदि व्यक्ति विद्युत लक्ष्मी यंत्र अपने गले में धारण करता है या बांह पर बांध लेता है तो आश्चर्यजनक रूप से धन की प्राप्ति होती है।
२. इस प्रकार का यंत्र धारण करने से व्यक्ति के पराक्रम में वृद्धि होती है और शत्रु भय समाप्त हो जाता है।
३. जिसके गले में इस प्रकार का यंत्र पहना हुआ हो तो उसे किसी प्रकार का राज्य भय नहीं होता और निरन्तर राज्य में उन्नति होती रहती है।
४. जो इस प्रकार का यंत्र धारण करता है उसके घर में पारिवारिक कलह समाप्त हो जाती है और घर में पूर्ण सुख शांति और सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

५. जो स्त्री अपने पति की निरन्तर उन्नति चाहती है, उसको चाहिए कि वह इस प्रकार का यंत्र अपने गले में धारण करे।

कामरूप लक्ष्मी मणि -

१. यह लक्ष्मी का ही एक प्रयोग है जो पूर्ण पुरुष बनना चाहते हैं , उसको चाहिए कि कामरूप मणि अंगूठी में जड़वा कर धारण करें।
२. जो दीपावली की रात्रि को अपने पूजा स्थान में कामरूप मणि स्थापित करते हैं, उनके घर में निरन्तर सुख सौभाग्य , धन - धान्य , पद - प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है।
३. यदि व्यक्ति नपुंसक है या शारीरिक दृष्टि से कमजोर हो , तो कामरूप मणि को अंगूठी में धारण करना चाहिए।
४. यदि किसी बालिका का विवाह नहीं हो रहा हो तो कामरूप मणि लेकर भगवान सूर्य को समर्पित कर दें और प्रार्थना करें कि मुझे सुन्दर वर की प्राप्ति हो या लड़का कहे कि - सुन्दर पत्नी की प्राप्ति हो , ऐसा करने से शीघ्र ही विवाह हो जाता है। यह किसी भी बुधवार को सम्पन्न करें।
५. भाग्योदय के लिए कामरूप लक्ष्मी मणि से श्रेष्ठ और कोई मणि नहीं होती और सौभाग्यशाली ही इस प्रकार की मणि धारण करते हैं।

पारद लक्ष्मी -

पारद का बना तो कोई भी विग्रह समाहित किये होता है अपने आप में वरदायक प्रभाव और फिर यदि वह पारद महालक्ष्मी हो तो बात ही क्या ?

१. चंचल पारे की तरह बद्ध हो जाती है लक्ष्मी भी इसी विग्रह के साथ साथ। जिसका तो स्थापन ही पर्याप्त है, फिर भले ही कोई साधना की जाय या न की जाए।
२. स्वर्णावती साधना या कनक - धारा साधना अर्थात घर में स्वर्ण वर्षा के समान **"श्री"** का आगमन होता है पारद महालक्ष्मी के स्थापन से।
३. जो स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया की ओर अग्रसर हों या स्वर्ण निर्माण में रुचि रखते हों उनकी साधना का आधार ही है पारद महालक्ष्मी।
४. पारद महालक्ष्मी के नित्य दर्शन से शरीर अत्यधिक सुन्दर, गौर वर्ण, आकर्षक तो बनता ही है, साथ ही उसके शरीर से ऐसी सुगन्ध प्रवहित होने लगती है जो कठोर से कठोर व्यक्ति को भी अपनी ओर खींच ले।
५. नित्य पारद महालक्ष्मी का षोडशोपचार पूजन कर शेष जल को घर भर में छिड़कने से समाप्त होती है-- गृह दोष की समस्त स्थितियां और आधार बनता है शांति, सुख- सौभाग्य के स्थापन का।

मैंने ऊपर उन प्रयोगों को लिखा है जो अपने आप में ही मंत्र सिद्ध है , जो अपने आप में ही परीक्षित हैं जो आजमाये हुए है, और व्यक्ति को चाहिए कि एक से ज्यादा प्रयोग सम्पन्न करें। कार्तिक मास ,विशेषकर दीपावली के दिन अथवा बताएं हुए दिन को तो अवश्य ही प्रयोग सम्पन्न करे। ऐसा करने से पूरा वर्ष उसके लिए अनुकूल बना रहता है और वह सभी दृष्टियों से उन्नति करता रहता है। वास्तव में ये सभी प्रयोग अद्वितीय माने गये हैं। यों ये प्रयोग किसी भी महीने में किए जा सकते हैं।

(पृष्ठ ३४ का शेष भाग)

से मेरी रक्षा करें। एक बड़ा फल बलि रूप में समर्पित करें वातावरण को धूप अथवा लोबान की सुगंध से भरा रखें। इसके पश्चात् **'रक्तवर्णीय माला'** से निम्न मंत्र का २१ माला मंत्र जप करें। मंत्र जप के काल में दृष्टि दीपक की लौ पर एकाग्र रहे।

मंत्र -

ॐ श्रीं क्लीं क्रीं कपिला योगिन्यै हुं फट्

यह एक दिवस की साधना है लेकिन साधक की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह आगामी कितने दिनों तक इस साधना को करे। यदि साधक को दूसरे दिन से ऐसा अनुभव हो कि कोई उसके साथ प्रतिक्षण रहता है या अपने आस -पास किसी स्त्री का आभास अनुभव करे तो न आश्चर्य - चकित हो न भयभीत। इस घटना की चर्चा तो भूल कर भी किसी से न करे, यदि उसके जीवन में कोई आकस्मिक संकट आ जाय या शत्रु बाधा उत्पन्न हो जाय तो उपरोक्त मंत्र का २१ बार उच्चारण कर यंत्र के समक्ष अपनी समस्या स्पष्ट कहे। यों भी संकट कालीन परिस्थितियों में एक बार भी उच्चारण करने से तत्काल सुरक्षा चक्र प्राप्त होता ही है। यदि साधक किसी समस्या का हल जानना चाहता है तो रात्रि में उपरोक्त मंत्र का एक माला जप करके प्रश्न को सिरहाने रख कर सो जाए तो उसे अपने प्रश्न का उत्तर स्वप्न के माध्यम से प्राप्त हो जाता है।

इस प्रकार से यम द्वितीया का पर्व सही अर्थों में बन जाता है **'भगिनी पर्व'** और सहज रूप से प्राप्त हो जाती है ऐसी भगिनी की शक्तियां जो अपने आप में तेजस्वी है, तांत्रोक्त क्रियाओं की पूंजी भूत स्वरूपा है, आभिचारिक क्रियाओं की ज्ञाता है और अपने साधक पर भगिनी वत सहज स्नेहशील है।

अगर इन मंत्रों से लक्ष्मी सिद्ध नहीं हुई तो सारे साधना ग्रंथों को आग लगा दूंगा

- विश्वामित्र

लक्ष्मी! अब मैं तुम्हारे सामने गिड़गिड़ाउंगा नहीं, हाथ नहीं जोडूंगा, स्तोत्र का उच्चारण नहीं करूंगा, स्तुति नहीं करूंगा, प्रार्थना नहीं करूंगा, मैं अपनी दृढ़ता से, मंत्रों की ताकत से तुम्हें उस क्षीर सागर से निकाल कर अपने आश्रम में स्थापित करूंगा . . .

. . . चाहे प्रसन्नता के साथ या विवशता से, तुम्हें स्थापित होना ही पड़ेगा।

विश्वामित्र त्रेता युग के अद्वितीय आचार्य, क्रोधी, हठी और अपनी धुन के पक्के थे। उस समय साधनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो विश्वामित्र की समानता करने वाला कोई ऋषि नहीं था। वशिष्ठ के गुरु रहते हुए भी दशरथ ने राम और लक्ष्मण को विश्वामित्र के हाथों में सौंपा कि इन्हें धनुर्विद्या और अस्त्र- शस्त्र साधना का ऐसा ज्ञान और सिद्धियां दीजिए जिससे ये कहीं पर भी विजय प्राप्त कर सके और विश्वामित्र के कुशल हाथों में राम और लक्ष्मण अद्वितीय योद्धा बने।

विश्वामित्र का आश्रम सभी दृष्टियों से बढ़ चढ़ कर था और उस समय दो ही ऋषि बराबर के टक्कर के थे। एक तो विश्वामित्र और दूसरे वशिष्ठ। वशिष्ठ का आश्रम जहां सम्पन्न और धनी था वहीं विश्वामित्र का आश्रम आर्थिक अभाव से पीड़ित और निर्धन सा था। यद्यपि विश्वामित्र ने उच्च कोटि की साधनाएं सिद्ध की थी, यद्यपि विश्वामित्र अद्वितीय थे, यद्यपि विश्वामित्र ने त्रिशंकु को नया स्वर्ग बना कर भेजने का निश्चय कर लिया था किन्तु वहीं वे अपने आश्रम में सम्पन्नता, भाग्य लक्ष्मी और ऐश्वर्य लक्ष्मी को प्राप्त नहीं कर सके थे और न ही आश्रम में स्थापित कर सके थे।

धीरे - धीरे धन के अभाव में आश्रम बिखरने सा लग गया। शिष्य इधर - उधर जाने लगे, इससे विश्वामित्र को अत्यधिक चिन्ता हुई। जब तक आश्रम श्री सम्पन्न न हो, तब तक किसी दृष्टि से पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती "भले ही मैं उच्च कोटि का विद्वान हूं, भले ही अस्त्र-शस्त्र विद्या में निपुण हूं, भले ही मैं अद्वितीय आचार्य हूं परन्तु जीवन में लक्ष्मी का भी पूर्ण महत्व है जिस घर में सभी कुछ हो और लक्ष्मी नहीं हो तो वह घर अपने आप में दीन - हीन कांति रहित मलिन और बिखरा - बिखरा सा होता है" उन्होंने एक दो बार लक्ष्मी की साधनाएं की भी, लक्ष्मी की मूर्ति का अनावरण भी किया ध्यान भी किया, नवीन स्तोत्रों की रचना भी की परन्तु कठोर हृदया लक्ष्मी न तो पसीजी, न प्रकट हुई और न विश्वामित्र के आश्रम में स्थापित हुई। विश्वामित्र का आश्रम वैसा ही दीन -हीन, मलिन और धन से कमजोर

बना रहा।

जब बात बर्दाश्त से बाहर हो गई तो विश्वामित्र अत्यधिक क्रोधित हो उठे और उन्होंने आश्रम के मध्य में अपने बचे-खुचे शिष्यों के बीच लाल लाल आंखों से क्रोधातिरेक में भरकर आकाश की ओर उंगली उठाकर जोरों से गर्जना की कि - " मैं यदि इस बार भी अपने इन विशिष्ट दिव्य मंत्रों से लक्ष्मी को अपने वश में नहीं कर सका , यदि मैं इस विशेष साधना द्वारा लक्ष्मी को अपने आंगन में खड़ा नहीं कर सका , यदि मैं इस अद्वितीय साधना के बल पर सभी गुणों से युक्त महालक्ष्मी को बिठा नहीं सका तो मेरा जीवित रहना व्यर्थ है और यदि ऐसा नहीं हुआ तो मैं सारे साधना ग्रंथों को आग लगा दूंगा और मैं यह समझ लूंगा कि ये सब साधनाएं झूठी और असत्य है।" इसके उपरान्त फिर अपने सीने पर हाथ रख कर कहा "मैं दूसरे ऋषियों से सम्बन्धित साधनाओं की बात नहीं कहता, परन्तु मैं ब्रह्माण्ड से प्राप्त मंत्रों के आधार पर नवीन साधना पद्धति की रचना करूंगा, नवीन मंत्रों का उदगम करूंगा और इस साधना पद्धति और इस मंत्र के माध्यम से मैं लक्ष्मी को हमेशा - हमेशा के लिए अपने आश्रम में स्थापित कर दूंगा, जिससे कि इस आश्रम में किसी प्रकार की निर्धनता , न्यूनता और दरिद्रता रहे ही नहीं। ऐसा हो ही नहीं सकता कि मैं किसी मंत्र की रचना करूं और वह सिद्ध न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता कि मैं जिस साधना पद्धति का निर्माण करूं वह अपने आप में न्यून हो जाय और यदि ऐसा हुआ तो मैं भविष्य में किसी प्रकार की कोई साधना नहीं करूंगा और मैं अपने शिष्यों को कह दूंगा कि मैं अब तुम्हें स्वतंत्र करता हूं अब तुम किसी भी दूसरे आश्रम में जाकर रह सकते हो और फिर उन्होंने तर्जनी उंगली को तानकर क्षीर सागर की ओर उठाकर कहा -- अब मैं तुम्हारे सामने गिड़गिड़ाउंगा नहीं, हाथ नहीं जोडूंगा ,स्तोत्र का उच्चारण नहीं करूंगा, स्तुति नहीं करूंगा, प्रार्थना नहीं करूंगा , मैं अपनी दृढ़ता से, मंत्रो की ताकत से तुम्हें उस क्षीर सागर से निकाल कर अपने आश्रम में स्थापित करूंगा और तुम्हें प्रसन्नता के साथ या मजबूरी के साथ जिस स्थिति में भी हो पूर्ण सहस्र रूपों में आकर मेरे इस आश्रम में स्थापित होना ही पड़ेगा और सभी दृष्टियों से मेरे इस आश्रम को सम्पन्न और पूर्णता देनी ही पड़ेगी। "

विश्वामित्र की घोषणा से दिग - दिगन्त हिल गया, पूरे आकाश में उनकी वाणी गूंज उठी, उनके क्रोध से सभी परिचित थे, क्षीर सागर की लहरें आन्दोलित होने लगी और यह ध्वनि लक्ष्मी के कानों में भी पड़ी, सहस्रनाग का फन भी कम्पायमान हो गया। भगवान विष्णु भी चौंक से गये और बोले अब विश्वामित्र अपनी नवीन साधना पद्धति से तुम्हें आने के लिए बाध्य करेंगे ही और तुम्हारे पास कोई चारा नहीं रहा क्योंकि वह जिस साधना पद्धति का निर्माण कर रहा है वह अपने आप में अन्यतम होगी, क्योंकि वह ऋषि के मुख से निकली हुई साधना पद्धति नहीं होगी अपितु ब्रह्माण्ड से आपूरित साधना पद्धति और मंत्र होगा।

दूसरे दिन विश्वामित्र अपने आश्रम के भवन की एक ओर बनी कुटिया में बैठ गये उनका मुंह दक्षिण दिशा की ओर था जिधर क्षीरोदय समुद्र है और नीचे पीला आसन बिछा दिया सामने लकड़ी के तख्ते पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर नौ ढेरियां बनाई जो नौ निधियों की प्रतीक थी । मध्य ढेरी पर अर्थात किसी भी तरफ से गिनने पर पांचवीं ढेरी पर एक पात्र रख उसमें सहस्त्र ऐश्वर्य युक्त " **ऐश्वर्य महालक्ष्मी यंत्र** " को स्थापित किया । सहस्त्रा रूपा लक्ष्मी का तात्पर्य है धन - धान्य लक्ष्मी, पृथ्वी लक्ष्मी, कृषि लक्ष्मी,भवन लक्ष्मी , कीर्ति लक्ष्मी , आयु लक्ष्मी , यश लक्ष्मी , श्रेय लक्ष्मी, पुत्र लक्ष्मी, पौत्र लक्ष्मी और जितने भी प्रकार के भोग होतें हैं उन सभी भोगों से संबंधित लक्ष्मी के संयुक्त रूप को ऐश्वर्य लक्ष्मी कहा जाता है। लकड़ी के बाजोट या तख्ती के दूसरी ओर नौ चावलों की ढेरियां जमीन पर बनाई और उस पर नौ दीपक लगाये। जिनमे तेल भरा हुआ था और दीपक की लौ साधक की ओर अर्थात विश्वामित्र की ओर थी।

फिर विश्वामित्र ने जल , केसर, अक्षत ,पुष्प और प्रसाद से लक्ष्मी का पूजन किया और दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प लिया कि मैं विश्वामित्र ब्रह्माण्ड से प्राप्त इस यंत्र के द्वारा ब्रह्माण्ड से प्राप्त मंत्र से लक्ष्मी को आहूत करता हूं और लक्ष्मी को चाहे वह विवश हो चाहे वह प्रसन्न हो मेरे इस आश्रम में , इस घर में आना ही है और प्रसन्नता के साथ स्थापित होना है, अपने समस्त रूपों के साथ समस्त ऐश्वर्य के साथ मुझे पूर्ण सुख और सौभाग्य, धन - धान्य , यश और प्रतिष्ठा सब कुछ प्रदान करना है और मैं इसी संकल्प के साथ इस नौ दिन की साधना को सम्पन्न कर रहा हूं और ऐसा कह कर वह जल जमीन पर छोड़ दिया। इसके बाद उन्होंने दिगदिगन्त की ओर नेत्र उठाकर उस मंत्र को प्राप्त किया जो ब्रह्माण्ड आपूरित मंत्र था। इसका वर्णन विवरण **विश्वामित्र सांगतेय** हस्त लिखित ग्रंथ में मुझे तिब्बत में दिखने को मिला। जो ब्रह्माण्ड से आपूरित मंत्र प्राप्त हुआ था वह मंत्र था

मंत्र -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं श्रीं ऐश्वर्य लक्ष्मी आगच्छ आगच्छ स्थापित देह्य ऐं श्रीं फट्

यह बीज युक्त मंत्र अपने आप में ही अत्यधिक तेजस्वी और दुर्लभ है, विश्वामित्र ने देखा कि मंत्र के प्रत्येक अक्षर में से विचित्र प्रकार की किरणें निकल रही है जो इस बात की प्रतीक थी कि यह मंत्र

(शेष भाग पृष्ठ ७५ पर)
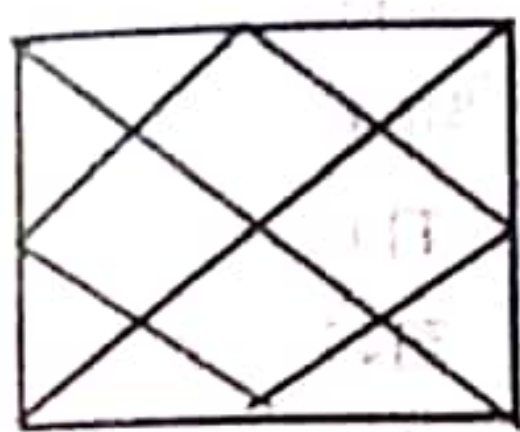
ज्योतिष प्रश्नोत्तर

श्याम सुन्दर अरोड़ा, कलकत्ता
प्रश्न : **नया कार्य कौन सा करें?**
उत्तर : आपके लिए कन्फेक्शरी का व्यवसाय लाभप्रद रहेगा।

श्रीमती राकेश कुमारी शर्मा, अम्बाला
प्रश्न : **मेरा स्वास्थ्य ठीक होगा या नहीं?**
उत्तर : आपके स्वास्थ्य में इस वर्ष के अन्त तक अवश्य ही मनोवांछित सुधार हो जायेगा।

राजेन्द्र प्रसाद मेहरोत्रा, नैनीताल
प्रश्न : **व्यक्तिगत जीवन में आ रही बाधाएं कब तक दूर होंगी?**
उत्तर : अगले वर्ष फरवरी माह तक स्थितियां विषमता पूर्ण हैं। बगलामुखी साधना सम्पन्न करें।

डॉ. मुकेश कुमार बरियाह, नई दिल्ली
प्रश्न : **साधना क्षेत्र में भविष्य कैसा होगा?**
उत्तर : आपको मांत्रोक्त पद्धति से साधना में विशेष सफलता मिलने का प्रबल योग है।

महेश मुट्टा, पुणे
प्रश्न : **भाग्योदय एवं साधना के विषय में स्पष्ट करें।**
उत्तर : दोनों क्षेत्रों में श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न करें।

रितु, रोहतक
प्रश्न : **मुझे नौकरी कब तक और किस क्षेत्र में मिलेगी?**
उत्तर : प्रकाशन एवं इलेक्ट्रानिक्स के क्षेत्र में भाग्योदय की संभावना है। यह वर्ष आपके लिए श्रेष्ठ है।

अजय कुमार पत्रकार, मुंगेर
प्रश्न : **क्या मेरे साथ अल्पायु दोष है? समाधान बताएं।**
उत्तर : आपके साथ अल्पायु दोष नहीं है एवं जीवन में निर्विघ्नता के लिए महाकाली साधना करें।

श्रीमती शांता चटर्जी, भिलाई
प्रश्न : मेडिकल के क्षेत्र में डिप्लोमा करने पर भी अच्छी नौकरी नहीं मिल रही।
उत्तर : स्थान परिवर्तन करने से भाग्योदय संभव।

सुशील मुनि, पठान कोट
प्रश्न : **स्मरण शक्ति तीव्र करने के लिए कौन से मंत्र की साधना करें?**
उत्तर : प्रातः काल 'ऐं' बीज का जप स्फटिक माला से एक माला करें।

राजेन्द्र प्रताप, मुज्जफरनगर
प्रश्न : **क्या मैं सेना या पुलिस में अधिकारी बनूंगा?**
उत्तर : इनकी अपेक्षा अर्धसैनिक बल में सफलता प्राप्ति की स्थितियां अधिक हैं।

तुरीकुदादा, सुन्दर गढ़
प्रश्न : **वर्तमान में जहां विवाह करना चाहता हूं, क्या उचित रहेगा?**
उत्तर : नहीं।

केहर सिंह राजपूत, रीवा
प्रश्न : **पदोन्नति कब तक होगी?**
उत्तर : वर्तमान विभाग में पदोन्नति की संभावनाएं अत्यंत क्षीण हैं।

नरपात सिंह, लुधियाना
प्रश्न : **मेरे साथ चल रहे मानसिक तनाव का निदान कैसे?**
उत्तर : पांच रत्ती का पुखराज धारण करें।

सौ. वैशाली वि. महाजन, जलगांव
प्रश्न : **पुत्र की पढ़ाई के विषय में चिंता रहती है।**
उत्तर : विद्या उत्तम रहेगी, चिंता का विषय नहीं।

रश्मि दिवाकर, पटना
प्रश्न : **पैतृक व्यवसाय में लाभ का क्या उपाय करें?**
उत्तर : व्यापार वृद्धि प्रयोग एवं तंत्र निवारण प्रयोग से पूर्ण निराकरण होगा।

विनय कुमार सिंह, बोकारो स्टील सिटी
प्रश्न : **मैं कौन सा रत्न या माला धारण करूं?**
उत्तर : माणिक्य रत्न अथवा खड्ग माला धारण करें।

रविन्द्रकुमार पी. खरड, अमरावती
प्रश्न : **बचपन से चली आ रही खांसी की बीमारी कैसे दूर होगी?**
उत्तर : विशिष्ट साबर साधना द्वारा ही स्थाई लाभ मिलेगा।

पार्थ कुमार दास, पूर्णिया
प्रश्न : **मुझे नौकरी कब मिलेगी?**
उत्तर : आपको २३ वें वर्ष में श्रेष्ठ नौकरी मिल जानी चाहिए।

राजीव कुमार शर्मा, अलवर
प्रश्न : **संतान प्राप्ति कब होगी?**
उत्तर : तीसरे वर्ष के अंत तक।

नटराज श्रीवास्तव, वाराणसी
प्रश्न : **जीविकोपार्जन कब आरम्भ होगा?**
उत्तर : दो वर्ष कठिन है।

विपिन भाई बी. पटेल, सूरत
प्रश्न : **भाग्योदय कब होगा?**
उत्तर : जीवन में पूर्ण सुख की स्थिति ५३ वें वर्ष से आरम्भ होगी।

आशोक कुमार सोनी, उदयपुर
प्रश्न : **क्या मुझे इंजीनियरिंग के क्षेत्र में सफलता मिलेगी?**
उत्तर : सफलता की संभावनाएं कम है।

बी. एस. गिल, कांगड़ा
प्रश्न : **क्या ज्योतिष के क्षेत्र में सफलता मिलेगी?**
उत्तर : नहीं। साधना के क्षेत्र में सफल रहेंगे।

सीताराम अग्रवाल, आगरा
प्रश्न : **ऋण मुक्ति कब तक?**
उत्तर : सात माह पश्चात स्थितियों में सुधार। तीन वर्ष पश्चात पूर्ण समाप्ति।

गजानन एन. लाड, नागपुर
प्रश्न : **क्या फोटोग्राफी के व्यवसाय से लाभ होगा?**
उत्तर : हां।

ओम प्रकाश, मैनपुरी
प्रश्न : **आर्थिक समस्या कब दूर होगी?**
उत्तर : केन्द्रस्थ राहु के कारण विविध कष्ट बने रहेंगे।

चन्द्रकान्त, भोपाल
प्रश्न : वर्तमान नौकरी से तनाव।
उत्तर : अभी कोई परिवर्तनकारी कदम न उठायें। दो वर्ष बाद समय अनुकूल आयेगा।

कूपन क्रमांक :- ११३ (**कूपन पर ही प्रश्न स्वीकार्य होंगे**)

नाम :...

जन्म तिथि :- ....महीना ....सन्..............

जन्म स्थान .... जन्म समय ....

पता (स्पष्ट अक्षरों में) :-..

....

आपकी केवल एक समस्या :- ....

कृपया निम्न पते को काटकर लिफाफे पर चिपकाएं :-

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान कार्यालय
३०६, कोहाट इन्क्लेव
पीतम पुरा, नई दिल्ली-११००३४

बार - बार साधनाओं के बाद भी मनोवांछित सफलता न मिलना खिन्न कर देती है साधक का मन . . .और उठने लगता है उसका विश्वास . . . . और ऐसा ही होता है लक्ष्मी साधनाओं में विशेष रूप से, तभी तो संज्ञा दी गई है चंचला कहकर, लेकिन सच्चाई यह है कि लक्ष्मी चंचला है ही नहीं, वह तो सहज साध्य है लेकिन उपलब्ध हो एक निश्चित क्रम , उपाय और पद्धति ऐसे ही सूत्रों को जो एक साधक के जीवन भर का निचोड़ समाहित है यहां प्रस्तुत सरल और सारगर्भित लेख में . . .

कौन कहता है लक्ष्मी सिद्ध नहीं होगी मेरे अनुभव के २० सूत्र

श्री गुलेरिया जी एक प्रमुख उद्योग पति हैं लेकिन उद्योग पति तो अब हुए हैं, उसके पहले तो उन्हें पैतृक परम्परा से एक छोटी सी परचून की दुकान ही मिली थी पिता की मृत्यु के बाद दो बहनों का विवाह और छोटे भाई की पढ़ाई अपने परिवार का पूरा बोझ उनके ऊपर आ पड़ा - जो परचून की दूकान से तो जीवन भर नहीं सुलझ सकता था . . . उससे तो दो वक्त की रोटी और सम्मान ढकने भर को वस्त्र, बस इतना ही जैसे- तैसे जुट पाता था। ऐसे में यदि भूले - भटके कोई मित्र या रिश्तेदार घर आ जाय तो सभी सदस्य संकोच से भर एक दूसरे का मुंह देखने लग जाते. . . . जल्द ही समझ में आ गया कि ऐसे तो जीवन का गुजारा सम्भव ही नहीं और फिर निकल पड़े अच्छे आय का साधन प्राप्त करने के लिए अपने छोटे भाई के जिम्मे दुकान छोड़। कहां - कहां नहीं भटके - ठेला गाड़ी से लेकर दलाली तक और ट्रक पोंछने से लेकर मुंशीगीरी तक . . . . जब जो काम मिला, करते गये और समय के थपेड़ों के साथ इधर से उधर, उधर से इधर सूखे पत्ते की तरह जीवन काटने के लिए बाध्य रहे। तभी उन्हें जाना पड़ा कलकत्ता से अपने मालिक का काम लेकर भुवनेश्वर की ओर, और यही उनके जीवन में बन गई भाग्योदय की घटना।

श्री गुलेरिया जी आज भी अन्तरंग क्षणों में जीवन के उस मोड़ की याद करके खो जाते हैं --

" . . . . सेठ जी का बताया काम तो निपट गया था , मैंने सोचा क्यों न थोड़ी दूर और चलकर भगवान श्री जगन्नाथ जी के दर्शन कर लूं और चल पड़ा एक लोकल ट्रेन पकड़ कर . . . . . मुझे क्या पता था कि भगवान श्री जगन्नाथ जी मुझे दर्शन देने से पूर्व ही अपनी कृपा दे देंगे . . . . . एक - एक कर सहयोगी यात्री रास्ते में छोटे - छोटे स्टेशनों पर उतरते हुए और खाली होता मेरा कम्पार्टमेंट . . . . सामने बैठे हुए भव्य त्रिपुण्ड धारी सौम्य साधु . शायद चारों धामों की यात्रा में से एक धाम करने जा रहे होंगे, सोचकर बाहर के दृश्यों में खो गया, लेकिन उनकी वह दृष्टि . . . . . वह तो एकटक मेरी ओर ही निहारती हुई . . . . . बाध्य कर रही हो मुझे उन्हीं की ओर देखने को, और बच नहीं पाया मैं उस मंत्र - मुग्ध कर

देने वाली दृष्टि और मुख पर खिलती छवि से। कहां जायेगा, कहां रुकेगा, कितने दिन रहेगा - जैसे प्रश्नों का सचमुच मेरे पास कोई हल नहीं था। कब मैं उन्हीं के साथ बंधा - बंधा उनके ही आश्रम में जाकर रुका, कैसे दो - तीन दिन कट गये, अब तो सब एक स्वप्न सा लगता है, जैसे सब पूर्व निर्धारित रहा हो, ईश्वर कृपा जो होनी थी मुझ पर और चलते समय मुझे भी यह पुस्तक देते हुए कहा कि सम्भाल कर रखना इसे, काम आयेगी . . . . ''

और वह पुस्तक थी जैन साहित्य की दुर्लभ कृति **'' पद्माक्षी कौतुक''** एक हस्तलिखित ग्रंथ, जो शायद किसी प्राचीन पाण्डुलिपी को देखकर उतारा गया था और उस पाण्डुलिपी में यत्र - तत्र पढ़ न पाने के कारण वे स्थान खाली छोड़ दिये गये थे, लेकिन फिर भी उसमें जो कुछ बच रहा था, वह अपने आप में अद्वितीय था। अमूल्य निधि और जीवन को नया आधार देने वाली इस पुस्तक को मुझे देते समय गुलेरिया जी की आंखों में आंसू उतर आया '' . . . . अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय है यह मुझे, इसे शीघ्र ही लौटाना।'' बस इतना ही कह सके वे और शायद मैं उनका गुरुभाई न होता तो वे यह पुस्तक देखने भी न देते।

लक्ष्मी साधना का पूरा रहस्य खोलती, प्रत्येक साधना का तार - तार स्पष्ट करती, यह पुस्तक ही नहीं साक्षात् लक्ष्मी है . . . . . . और तब समझ सका मैं, लक्ष्मी को तो प्राप्त करना जीवन में कोई कठिन कार्य है ही नहीं, लक्ष्मी तो सहज ही स्थापित की जा सकती है अपने घर में और ऐसी कि कई - कई पीढ़ियां निश्चिंत होकर सुख पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकें।

सारा रहस्य सारा क्रम खोल कर रख दिया है इस पुस्तक में हर साधना की, चाहे वह **वसुधा लक्ष्मी** हो या **ज्येष्ठा** या जैन धर्म की आराध्या . . . . **पद्मावती** कुछ भी तो नहीं दुर्लभ रह गया या गोपनीय रह गया इस पुस्तक को पढ़ लेने के बाद। साक्षात् लक्ष्मी पति बना देने की क्रिया और लक्ष्मी को अपने पीछे - पीछे चलने के लिए बाध्य कर देने का रहस्य . . .

मैंने लक्ष्मी उपनिषद भी पढ़ा है, मैंने तांत्रिक ग्रंथों का भी अध्ययन किया है लेकिन यह ग्रंथ तो कामधेनु के समान है जो ताड़ पत्र पर लिखे पत्र नहीं साक्षात् कल्पवृक्ष के पत्र ही हैं, जीवन की प्रत्येक कामना को पूर्ण करने में समर्थ। तभी तो जैन सम्प्रदाय से अधिक सम्पन्न, उससे अधिक श्री युक्त सम्प्रदाय और कोई भी नहीं दृष्टिगोचर होता क्योंकि उसके आधार में है ऐसा अद्वितीय और अनमोल ग्रंथ।

पुस्तक की सैकड़ों हजारों, पद्धतियों में से चुनकर मैंने पाये हैं जो अनमोल सूत्र, जो उतर सकें व्यवहारिक जीवन में भी सरलता से प्रामाणिकता से उन्हें मैं आगे स्पष्ट कर रहा हूं।

यह तो प्रारम्भिक सूत्र है, मेरी तो इच्छा है कि मैं इसी प्रकार इस पुस्तक का क्रमबद्ध तरीके से अध्ययन करके सम्पूर्ण ग्रंथ, सूत्रों में बद्ध कर सरल भाषा में प्रस्तुत कर सकूं।

मेरे अनुभव के बीस सूत्र

१. जीवन में सफल रहना है या लक्ष्मी को स्थापित करना है तो प्रत्येक दशा में सर्वप्रथम दरिद्रता विनाशक प्रयोग करना ही होगा। यह सत्य है कि लक्ष्मी धनदात्री है, वैभव प्रदायक है लेकिन दरिद्रता जीवन की एक अलग स्थिति होती है और उस स्थिति का विनाश अलग ढंग से सर्वप्रथम करना आवश्यक होता ही है।

२. लक्ष्मी का एक विशिष्ट स्वरूप है **'' बीज लक्ष्मी''**। एक वृक्ष की ही भांति एक छोटे से बीज में सिमट जाता है-- लक्ष्मी का विशाल स्वरूप। बीज लक्ष्मी साधना में भी उतर आया है भगवती महालक्ष्मी के पूर्ण स्वरूप के साथ - साथ जीवन में उन्नति का रहस्य।

३. लक्ष्मी समुद्र - तनया है, समुद्र से ही उत्पत्ति है उनकी और समुद्र से प्राप्त विविध रत्न सहोदर हैं उनके, चाहे वह दक्षिणावर्ती शंख हो या मोती शंख, गोमती शंख, स्वर्ण पात्र, कुबेर पात्र, लक्ष्मी प्रकाम्य, क्षीरोद्भव, वर-वरद , लक्ष्मी चैतन्य सभी उनके भ्रातवत ही हैं और इनकी गृह में उपस्थिति आह्लादित करती है लक्ष्मी को, विवश कर देती है उन्हें गृह में स्थापित कर देने को।

४. समुद्र मंथन में प्राप्त एक रत्न **'' लक्ष्मी''** का वरण यदि किसी ने किया तो वे थे साक्षात भगवान विष्णु। अपने पति की अनुपस्थिति में लक्ष्मी किसी भी गृह में झांकने तक की भी कल्पना नहीं करती और भगवान श्री विष्णु की उपस्थिति का प्रतीक है शालीग्राम, **अनन्त महा यंत्र** एवं शंख। शंख, शालीग्राम एवं तुलसी का वृक्ष - इनसे मिलकर बनता है पूर्ण रूप से भगवान लक्ष्मी - नारायण की उपस्थिति का वातावरण।

५. लक्ष्मी का एक नाम कमला भी है, कमलवत उनकी आंखे हों अथवा उनका आसन, सब कमल ही है और सर्वाधिक प्रिय है-- लक्ष्मी को पद्म। **कमल - गट्टे की माला** स्वयं धारण करना आधार और आसन देना है लक्ष्मी को अपने शरीर में अपना प्रभाव समाहित करने के लिए।

६. लक्ष्मी की पूर्णता होती है विघ्न विनाशक श्री गणपति की उपस्थिति से जो मंगल कर्ता है और प्रत्येक साधना में प्रथम पूज्य। भगवान श्री गणपति के किसी भी विग्रह की स्थापना किये बिना लक्ष्मी की साधना तो ऐसी ही है ज्यों कोई अपने धन भण्डार में भरकर उसे खुला छोड़ दें।

७. लक्ष्मी का वास वहीं संभव है जहां व्यक्ति सदैव सुरुचि पूर्ण वेशभूषा में रहे, स्वच्छ और पवित्र रहे तथा आन्तरिक रूप से निर्मल हो। गंदे, मैले, असभ्य और बकवादी व्यक्तियों के जीवन में लक्ष्मी का वास संभव ही नहीं।

८. लक्ष्मी का आगमन होता है जहां पौरुष हो, जहां उद्यम हो, जहां गतिशीलता हो उद्यम शील व्यक्तित्व ही प्रतिरूप होता है भगवान श्री नारायण का जो प्रत्येक क्षण गतिशील है, पालन में संलग्न है। ऐसे ही व्यक्तियों के जीवन में लक्ष्मी गृहलक्ष्मी बन कर, संतान लक्ष्मी बनकर आयु, यश, श्री कई - कई रूपों में प्रकट होती है।

९. जो सदगृहस्थ हैंउन्हें अपने जीवन में हवन को महत्वपूर्ण स्थान देना चाहिए और प्रत्येक माह की शुक्ल पंचमी को श्री सूक्त के पदों से एक कमल गट्टे का बीज और शुद्ध घृत के द्वारा आहुति प्रदान करना फलदायक होता है।

१०. अपने दैनिक जीवन क्रम में नित्य महालक्ष्मी की किसी ऐसी साधना - विधि को सम्मिलित करना है जो आपके अनुकूल हो और यदि इस विषय में निर्णय - अनिर्णय की स्थिति हो तो नित्य प्रति सूर्योदय काल में निम्न मंत्र की एक माला का मंत्र जप तो कमल गट्टे की माला से अवश्य ही करना चाहिए।

मंत्र -

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद मम गृहे आगच्छ आगच्छ महालक्ष्म्यै नमः

११. किस लक्ष्मी साधना को अपने जीवन में अपनायें और उसे किस मंत्र से सम्पन्न करें, इसका उचित ज्ञान तो केवल आपके गुरुदेव के पास ही है और योग्य गुरुदेव अपने शिष्य की याचना पर उसे महालक्ष्मी दीक्षा से विभूषित कर वह गुह्य साधना पद्धति स्पष्ट करते हैं जो सम्पूर्ण रूप से उसके संस्कारों के अनुकूल हो।

१२. अनुभव से यह ज्ञात हुआ है कि बड़े - बड़े अनुष्ठानों की अपेक्षा यदि छोटे - छोटे और तीक्ष्ण जैन साबर प्रयोग अथवा नाथ साबर प्रयोग किये जाएं तो जीवन में अनुकूलता तीव्रता से आती है और इसमें हानि की भी कोई संभावना नहीं होती।

१३. जीवन में नित्य महालक्ष्मी के चिन्तन मनन और **ध्यान के साथ - साथ यंत्रों का स्थापन भी** केवल महत्वपूर्ण ही नहीं आवश्यक है। **श्री यंत्र, कनक धारा यंत्र** और **कुबेर यंत्र** इन तीनों के समन्वय से एक पूर्ण क्रम स्थापित होता है।

१४. जब कई छोटे - छोटे प्रयोग और साधनाएं सफल न हो रही हों तब एक बार **चतुरालक्ष्मी** प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए।

१५. पारद निर्मित प्रत्येक विग्रह अपने आप में सौभाग्य दायक होता है चाहे वह **पारद महालक्ष्मी** हो या **पारद शंख** अथवा **पारद श्री यंत्र। पारद शिवलिंग** और **पारद गणपति** भी अपने - आप में लक्ष्मी तत्व समाहित किये होते हैं।

१६. जीवन में जब भी अवसर मिले, तब एक बार भगवती महालक्ष्मी के शक्तिमय स्वरूप कमला महाविद्या की साधना अवश्य ही करनी चाहिए, जिससे जीवन में धन के साथ - साथ पूर्ण मानसिक शांति और श्री का आगमन संभव हो सके।

१७. धन का अभाव चिंता जनक स्थिति में पहुंच जाय और लेनदारों के तानों और उलाहनों से जीना मुश्किल हो जाता है, तब पद्मावती साधना करना ही एक मात्र उपाय शेष रह जाता है।

१८ जब सभी प्रयोग असफल हो जाएं तब अघोर विधि से लक्ष्मी प्राप्ति का उपाय ही अंतिम मार्ग शेष रह जाता है लेकिन इस विषय में एक निश्चित क्रम अपनाना पड़ता है।

१९. कई बार ऐसा होता है कि घर पर व्याप्त किसी तांत्रिक प्रयोग अथवा गृह दोष या अतृप्त आत्माओं की उपस्थिति के कारण भी वह सम्पन्नता नहीं आ पाती जो कि अन्यथा संभव होती, ऐसी स्थिति को समझ कर बाधाओं का निराकरण करना ही बुद्धि-मत्ता है।

२०. उपरोक्त सभी उपायों के साथ - साथ सीधा सरल और सात्विक जीवन, दान की भावना, पूण्य कार्य करने में उत्साह, घर की स्त्री का सम्मान और प्रत्येक प्रकार से घर में मंगल मय वातावरण बनाये रखना ही सभी उपायों का पूरक है क्योंकि इसके अभाव में यदि लक्ष्मी का आगमन हो भी जाता है तो स्थायित्व संदिग्ध रह जाता है।

मैंने गुलेरिया जी की भावनाओं का सम्मान करके, उस पुस्तक की फोटो कापी नहीं करवायी, लेकिन उसमें संग्रहित ज्ञान को अपने ढंग से सूत्रों में बद्ध किया है। मैंने प्रत्येक साधना के साधना पक्ष को लेकर पूरा क्रम सूत्रों में बद्ध किया है लेकिन उपरोक्त बीस सूत्र तो प्रत्येक साधना के आधार हैं, यह मैं निष्पक्षता से एवं पूरी दृढ़ता से कह सकता हूं।

(पृष्ठ ४६ का शेष भाग)

करते हुए, नख-शिख वर्णन करते हुए एक ग्रंथ लिखना प्रारंभ किया, लेकिन अंत तक वह भी इन्हीं प्रश्नों पर पहुंचा कि ऐसा कौन सा उपाय संभव है, ऐसी कौन सी एक क्रिया है, जिसके द्वारा पूरा का पूरा जीवन सौन्दर्यमय बना लिया जाय। अनेक पद्धतियों पर पूरे जीवन भर चोट करने के बाद जिस पद्धति को सर्वश्रेष्ठ माना वह है -- सौन्दर्य लक्ष्मी प्रयोग। जो ग्रंथ के नाम पर कालांतर में **'' सौन्दर्य पारिजात ''** प्रयोग के नाम से भी विख्यात हुआ।

इस ग्रंथकार ने अपने ग्रंथ में अत्यंत सुन्दर ढंग से कहा है कि यौवन तो पारिजात का पुष्प है, जिसकी आयु बहुत कम होती है और जिसका सौन्दर्य अप्रतिम . . . . . लेकिन उसकी आयु स्थायी की जा सकती है, उसकी सुगन्ध बचाई जा सकती है तो केवल सौन्दर्य लक्ष्मी प्रयोग से। भगवती लक्ष्मी के अत्यंत काव्य पूर्ण और मधुर चित्रण में इस शास्त्रकार ने स्पष्ट किया है -- किस प्रकार से भगवती लक्ष्मी पूर्ण रूप से यौवन और सौन्दर्य की साकार प्रतिमा है, जो अपने वरदायक प्रभाव से साधक के जीवन को भी सौन्दर्यवान बना सकती है। भगवती महालक्ष्मी जब अपने **'' सौन्दर्य लक्ष्मी ''** स्वरूप में कृपावान होती है तो केवल बाह्य सौन्दर्य ही नहीं आन्तरिक सौन्दर्य भी प्रदान कर जाती है, क्योंकि यही तो वह उपाय है जिससे पारिजात की सुगन्ध भर ली जाय अपने अंदर, और वह फिर महकता रहता है पूरे जीवन भर, हल पल हर क्षण अपनी आभा और रंग के साथ, जो क्रिया किसी भी उपाय या औषधि या पद्धति से संभव हो ही नहीं सकती, अनेक उपाय कर लेने के बाद अनेक प्रसाधनों का दुष्प्रभाव देख लेने के बाद यदि जीवन में एक ऐसा छोटा सा प्रयोग भी करके देखा जाय तो हानि इसमें कुछ नहीं है।

इस तन की बगिया में कहीं न कहीं से फूलों भरा, पारिजात की सुगन्ध लिए कोई नन्हा सा पौधा अवश्य खिल जाता है . . . . .

साधना विधान

''सौन्दर्य लक्ष्मी प्रयोग '' या **''सौन्दर्य पारिजात प्रयोग''** किसी भी शुक्ल - पक्ष की पंचमी से प्रारम्भ कर पूर्णिमा तक किया जाने वाला एक सरल प्रयोग है और आने वाले दिनों में तो इसका विशेष मुहूर्त बन रहा है। जबकि शरद पूर्णिमा जैसी उत्सव भरी रात -- मादक पूर्णिमा सम्पन्न होगी। शरद पूर्णिमा तो अपने आप में अमृत वर्षा का दिन है और ऐसी रसमय पूर्णिमा पर इस प्रयोग का समापन कुछ और वृद्धि कर जायेगा।

कुछ विद्वानों के अनुसार इस प्रयोग को किसी भी पुष्य नक्षत्र से प्रारम्भ कर आगे के पांच दिनों तक किया जाय, तब भी यह पर्याप्त प्रभावकारक होता है। मेरे मत में यह दोनों ही विधियां पूर्ण प्रामाणिक और फलदायक हैं, साधक अपनी सुविधा के अनुसार दोनों में से किसी भी पद्धति का प्रयोग कर सकता है।

ताम्र पत्र पर अंकित **सौन्दर्य लक्ष्मी यंत्र** को लकड़ी के बने बाजोट पर पीला रेशमी वस्त्र बिछाकर, सुगन्धित पुष्प की पंखुड़ियों पर स्थापित करें। यदि कमल का पुष्प उपलब्ध हो तो सर्वश्रेष्ठ माना गया है। उस पर एक **सौन्दर्य पारिजात** भेंट चढ़ायें इसके अतिरिक्त साधना में किसी उपकरण की आवश्यकता नहीं है। यदि आपके पास **सौन्दर्य माला रति माला** अथवा **अप्सरा माला** में से कोई माला हो तो आप इसका प्रयोग इस साधना में कर सकते हैं अन्यथा **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र की ११ माला जप प्रतिदिन करें। सुगन्धित द्रव्य और गंध का प्रयोग प्रचुरता से करें। यंत्र के साथ - साथ स्वयं को भी इत्र आदि से आपूरित करके साधना में बैठें।

मंत्र -

ॐ ह्रीं सौन्दर्यायै नमः

मंत्र जप के उपरान्त सौन्दर्य लक्ष्मी यंत्र अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें, सौन्दर्य पारिजात को किसी डिब्बी अथवा पीले वस्त्र में बांधकर अपने वस्त्रों के रखने के स्थान पर रख दें।

लक्ष्मी के इस स्वरूप का वर्णन अभी तक इस प्रकार से प्रयोग रूप में कहीं भी प्रकाशित नहीं हुआ है और न इसकी पूर्ण व्याख्या की जा सकी है, लेकिन भगवती महालक्ष्मी के ही एक स्वरूप की साधना होने के कारण निश्चित रूप से फलदायक है ही और सही अर्थों में जीवन का ऐसा धन प्राप्त करना है तो फिर आप छुपाना भी चाहें तो छुपेगा नहीं. . . . . . ।

ऋषि वशिष्ठ -

ऋषि वशिष्ठ ने अपने शिष्य आरम्विक को कहा कि मैं आज से लक्ष्मी को सिद्ध करने और प्रत्यक्ष करने के लिए साधना में बैठ रहा हूं और संसार में इससे बड़ी साधना , इससे तेजस्वी मंत्र कोई नहीं है ऐसा हो ही नहीं सकता कि मैं यह साधना करूं और लक्ष्मी मेरे आश्रम में पूर्णता के साथ प्रत्यक्ष प्रकट न हो।

शुक्रवार के दिन वशिष्ठ ने अपने सामने **लक्ष्मी यंत्र** स्थापित किया और उसे **क्षीरोदय मंत्र** से सिद्ध किया। सामने ऋद्धि - सिद्धि और शुभ - लाभ से संबंधित चार तेल के दीपक प्रज्वलित किये और फिर **स्फटिक माला** से जप प्रारम्भ किया। वशिष्ठ का गोपनीय मंत्र है --

मंत्र -

" ॐ ह्रीं कमल वासिन्यै प्रत्यक्ष ह्रीं फट् "

रात्रि को स्नान कर पीले आसन पर पूर्व की मुंह कर बैठे और ५१ माला मंत्र जप करते - करते, अपने पूर्ण स्वरूप में लक्ष्मी वशिष्ठ के सामने प्रकट हुई और कहा -- **मैं अत्यधिक प्रसन्न हूं और तुम्हारी साधना से जीवन पर्यन्त तुम्हारे आश्रम में स्थापित रहूंगी। किसी प्रकार से कोई कमी , कोई न्यूनता, कोई दुख - दैन्य, कोई अभाव रह ही नहीं सकेगा।**

और फिर यह सिद्ध हो गया कि वशिष्ठ कृत यह मंत्र , यह यंत्र और यह साधना अपने आप में प्रामाणिक है। जिस प्रकार से महर्षि वशिष्ठ कृत अनेक साधनाओं और मंत्रों की उच्चता तथा श्रेष्ठता अपने अपने आप में निर्विवाद है और फलदायक अनुभूत है ही।

महर्षि पुलस्त्य -

पुलस्त्य ने लक्ष्मी को पूर्णता के साथ प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयोग सम्पन्न किया जिसकी आज भी शास्त्रों में विशेष चर्चा है। उन्होंने अपने सामने ताम्र पत्र पर अंकित **श्री लक्ष्मी यंत्र** को स्थापित किया और यंत्र के सामने घी का दीपक जला कर पीले आसन पर उत्तर की ओर मुंह कर बैठे और **सफेद हकीक माला** से एक रात्रि में निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जप कर लक्ष्मी को प्रकट होने के लिए बाध्य कर दिया और यह सिद्ध कर दिया कि महर्षि पुलस्त्य का यह मंत्र और यह प्रयोग अत्यधिक चैतन्य पूर्ण है। महर्षि पुलस्त्य ने जिस मंत्र का उच्चारण किया था वह है --

मंत्र -

" ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं कमल वासिन्यै आगच्छ आगच्छ ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमः "

और वास्तव में आने वाले समय में कई साधकों ने इस बात को अनुभव किया कि यह मंत्र और यह प्रयोग पूर्णतः सिद्ध है।

शंकराचार्य -

अपने समय के अद्वितीय विद्वान और सन्यासी शंकराचार्य का नाम किसी से छिपा हुआ नहीं है, उनके गुरु ने कहा " शंकर जब तक तुम लक्ष्मी की आराधना और साधना सिद्ध नहीं कर लेते, तब तक जीवन में पूर्णता संभव ही नहीं है। वह चाहे तुम्हारे लिए हो, चाहे तुम्हारे शिष्यों के लिए हो और उन्होंने एक अत्यंत गोपनीय विधान शंकराचार्य को बताया।"

किसी भी रविवार की रात्रि को कांसे या पीतल की थाली में काजल लगा कर काली कर दें और फिर चांदी की शलाका से लक्ष्मी का चित्र बनायें चाहे वह कैसा भी बने, फिर चित्र के ऊपर **ऐश्वर्य लक्ष्मी यंत्र** स्थापित कर दें और एकनिष्ठ होकर, मात्र एक सफेद धोती ही पहन कर, उत्तर दिशा की ओर मुंह कर, सामने गेहूं के आंटे के चार दीपक बनाये और उसमे किसी भी प्रकार का तेल भर कर प्रज्वलित करें और थाली के चारों कोनों पर रखें। मूंगे की माला से निम्न मंत्र का एक रात्रि में ५१ माला मंत्र जप होना चाहिए।

मंत्र -

" ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं फट् "

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तो रात्रि में वहीं विश्राम करें, जमीन पर ही सो जाएं, सुबह जब घुंघरुओं की आवाज सुनाई दे तो उठ जाएं और इससे यह समझ लें कि लक्ष्मी का आगमन उनके घर में हो चुका है और किसी प्रकार की न्यूनता और अभाव उनके घर में नहीं रहेगा।

योगी शिवानन्द -

योगी शिवानन्द का नाम सम्पूर्ण भारत में विख्यात है और लक्ष्मी से संबंधित सैकड़ों संस्मरण उनके साथ जुड़े हुए हैं।

शरीर छोड़ने से पहले उन्होंने अपने प्रधान शिष्य कृपाचार्य को यह लक्ष्मी प्रयोग बताया था जो सोने की कलम से लिखने योग्य है क्योंकि सन्यासियों और योगियों में इस साधना की अत्यधिक चर्चा है।

किसी भी रात्रि को साधक एक थाली लेकर उसमें घी के छः दीपक जला ले और थाली के बाहर **विजय लक्ष्मी यंत्र** स्थापित कर दें जो कि सम्पूर्ण विजय मंत्र से सिद्ध हो फिर रक्त चंदन की माला या मूंगे की माला से निम्न मंत्र का जप करें--

मंत्र -

" ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं फट् "

उसी रात्रि में १०१ माला मंत्र जप होना अनिवार्य है।

उनके जिस शिष्य ने भी इस साधना को सम्पन्न किया उनका अनुभव यह है कि मंत्र जप समाप्त होते - होते लक्ष्मी अपने पूर्ण सौन्दर्य के साथ साधक के सामने प्रकट हुई और उनके जीवन में सभी दृष्टियों से सम्पन्नता, ऐश्वर्य, योग एवं क्षेम प्राप्त हुआ। यह प्रयोग वास्तव में ही प्रामाणिक है।

स्वामी सच्चिदानन्द -

टिहरी गढ़वाल में योगीराज सच्चिदानंद जी का आश्रम था, जो कि अत्यधिक विख्यात था और जिसकी बड़ी चर्चा थी, उन्हें नेपाल से एक प्राचीन ग्रंथ प्राप्त हुआ था जिसमें विशिष्ट लक्ष्मी प्रयोग था, जिसे योगी राज सच्चिदानंद ने सिद्ध किया था। उनकी हस्तलिखित जीवनी में इस प्रयोग की चर्चा है और कई योगियों ने इस साधना से पूर्ण लाभ उठाया है, किसी भी बुधवार की रात्रि को साधक शुद्धता के साथ स्नान कर पीली धोती धारण कर ले और एक आसन पर उत्तर की ओर मुंह करके बैठ जाए तथा सामने एक ही पंक्ति में ११ तेल के दीपक लगाये। इसमें तेल किसी भी प्रकार का हो सकता है, फिर इसके सामने **प्रत्यक्ष लक्ष्मी सिद्ध यंत्र** को स्थापित करे जो विष्णु मंत्र से सिद्ध हो और स्फटिक माला से निम्न मंत्र का मंत्र जप करें। मंत्र जप के बीच उठे नहीं, चाहे घुंघरुओं की आवाज सुनाई दे या सम्पूर्ण स्वरूप के साथ लक्ष्मी दिखाई ही दे।

मंत्र -

" ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं फट् "

हिमालय के कई सन्यासियों के पास यह प्रयोग मैंने देखा है और उन्होंने अनुभव किया है कि यह अत्यंत तेजस्वी प्रयोग है।

पगला बाबा -

पगला बाबा तो अपने आप में सम्पूर्ण भारत वर्ष में विख्यात हैं और उन्होंने अपने जीवन में लाखों रुपये दान में दिये, फिर भी उनके खजाने में कोई न्यूनता नहीं आई। उन्होंने इसके लिए यौवनावस्था में एक लक्ष्मी प्रयोग सिद्ध किया था जो कि अत्यन्त गोपनीय था। यह प्रयोग इस प्रकार है --

एक मिट्टी का दीपक घी से भरकर बांये हाथ में रख दें और उस दीपक को प्रज्वलित कर दें फिर दाहिने हाथ से **कमल गट्टे** की माला से २१ माला मंत्र जप करें।

मंत्र -

" ह्रीं ऐश्वर्य श्रीं धन - धान्याधिपत्यै ऐं पूर्णत्व लक्ष्मी सिद्धयै नमः "

इसमें २१ माला मंत्र जप होना जरूरी है और मंत्र जप के बाद उस दीपक को धरती पर रखें कहते हैं कि यह प्रयोग कभी भी असफल नहीं हुआ। "हठयोग" योग का यह श्रेष्ठ प्रयोग है और सफलता मिलती ही है। दीपक के सामने उंगलियों पर **पूर्णत्व लक्ष्मी यंत्र** रख दें और इस यंत्र को बाद में अपने घर में पीले कपड़े में बांधकर उस स्थान पर रखें जहां रुपये पैसे रखे जाते हैं। यह वास्तव में एक श्रेष्ठ प्रयोग है।

और ये तांत्रिक भी साक्षी हैं

विश्व के उच्च कोटि के तांत्रिकों के प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूं जो कि गोपनीय तो रहे हैं पर प्रामाणिक हैं और अत्यधिक तेजस्वी हैं। कहते हैं कि सूर्य पूरब में उगना भूल सकता है पर इन साधनाओं से सिद्धि प्राप्ति में चूक नहीं होती।

गोरख नाथ -

तंत्र के क्षेत्र में गुरु गोरख नाथ का नाम अत्यंत सम्मान के रूप में लिया जाता है, उन्होंने लक्ष्मी से सम्बन्धित उच्च कोटि की साधना कर एक ऐसा वातावरण अपने आश्रम में बना दिया था कि वे जितना भी खर्च करते उससे सौ गुना ज्यादा प्राप्त होता था। कहते हैं कि उनके आश्रम में लक्ष्मी हर समय प्रत्यक्ष रहती थी और किसी - किसी को दिखाई भी दे जाती थी।

किसी भी रविवार की रात्रि को **श्वेतार्क गणपति** को थाली में स्थापित कर दें और उसे सिंदूर से रंग दें फिर चांदी के की सलाका से उस श्वेतार्क गणपति पर लिखें-

'' श्रीं ह्रीं श्रीं ''

रात्रि को साधक मात्र एक धोती पहन कर, पूर्व दिशा की ओर मुंह कर खड़ा हो जाय और हाथ में **स्फटिक माला जो छोटे मनके** की हो ले लें और खड़े - खड़े ही ५१ माला मंत्र जप करें।

मंत्र - ह्रीं ह्रीं लक्ष्मी आगच्छ आगच्छ ह्रीं ह्रीं फट्

जब तक ५१ माला मंत्र जप पूरा न हो जाय तब तक न तो बैठे और न नींद ले, न पानी ले। ज्यादा से ज्यादा किसी दीवार का सहारा लेकर खड़ा हो सकते हैं, इसमें किसी भी प्रकार के दीपक या अगरबत्ती की आवश्यकता नहीं है यदि साधक चाहे तो तेल का दीपक लगा सकता है। यह अपने आप में अचूक प्रयोग है और सफलतादायक भी है।

मत्स्येन्द्र नाथ -

तंत्र के क्षेत्र में जितना गोरखनाथ का नाम है उतना ही मत्स्येन्द्र नाथ का नाम है। कहते हैं कि उच्च कोटि की साधनाओं में मत्स्येन्द्र नाथ गोरख नाथ से भी कई गुना आगे थे। उन्होंने लक्ष्मी से संबंधित एक गोपनीय प्रयोग सिद्ध किया था जो मुझे तिब्बत के ग्रंथ में प्राप्त हुआ।

साधक स्नान करने के बाद स्वच्छ धुली हुई धोती पहने इसके अलावा कोई वस्त्र शरीर पर नहीं पहने और न ही कोई आसन हो, जमीन पर बैठ जाय और उत्तर दिशां की ओर मुंह कर सामने **हीरा शंख** स्थापित कर ले और इस शंख के सामने हकीक माला से निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जप करें।

मंत्र - ऐं यं रं श्रीं यं फ्रौं क्रीं श्रीं फट्

यह अपने आप में कूट बीज मंत्र है और अत्यन्त प्रसिद्ध मंत्र है प्रत्येक साधक को इस मंत्र का प्रयोग कर पूर्ण लाभ उठाना चाहिए।

त्रिजटा अघोरी -

जो भी तंत्र के बारे में जानते हैं या जिनकी भी तंत्र में रुचि है वे त्रिजटा अघोरी से परिचित होंगे ही। अपने आप में अत्यधिक तेजस्वी और सिद्धि प्रद व्यक्तित्व है उनका। जिसने उच्च कोटि की शक्तियों को अपने वश

में कर रखा है। लक्ष्मी से संबंधित एक अचूक प्रयोग उनके द्वारा प्राप्त हुआ था जो साधकों के लिए इस अंक में दिया जा रहा है--

अपने सामने सात गोमती चक्र और **पूर्ण धनेश्वरी महालक्ष्मी यंत्र** को स्थापित कर दें और सात तेल के दीपक लगा दें यह सब एक ही थाली में करें वह थाली अपने सामने रख दें और **शंख माला** से निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जप करें।

मंत्र -- हुं हुं हुं श्रीं श्रीं श्रीं ब्रं ब्रं ब्रं फट्

एक अद्भुत और चैतन्य मंत्र है यह और एक आश्चर्य जनक साधना, एक सिद्धि प्रद प्रयोग है जिसे साधकों को दीपावली पर सम्पन्न करना ही चाहिए।

स्वामी भैरवानंद -

लक्ष्मी से संबंधित एक महत्वपूर्ण प्रयोग पूरे हिमालय में प्रचलित है और सैकड़ों साधकों ने इस प्रयोग को आजमाया है। अपने सामने तीन **सियार सिंगी** रख दें और प्रत्येक का सिंदूर से तिलक करें, साधक स्वयं अपने ललाट पर सिंदूर का तिलक करे और रात्रि में उत्तर की ओर मुंह कर लाल आसन पर बैठ जाय और स्वयं भी लाल धोती धारण करें। फिर सात घी या तेल का दीपक लगा कर पूर्ण भाग्योदय लक्ष्मी का जप करे जो कि इस प्रकार है -

मंत्र -

ॐ लक्ष्मी आबद्ध आबद्ध सिद्धय सिद्धय फट्

इस मंत्र की ५१ माला मंत्र जप **शंख माला** या **स्फटिक माला** से सम्पन्न करें। मंत्र जप सम्पन्न होते- होते लक्ष्मी की कृपा प्राप्त हो जाती है और उसे जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता। यह अपने आप में तेजस्वी मंत्र है।

अवधूत कृत्यानंद -

अवधूत साधना में स्वामी कृत्यानंद का नाम विश्वविख्यात है उन्होंने मुझे एक अत्यंत महत्वपूर्ण लक्ष्मी से संबंधित प्रयोग बताया था।

उनके अनुसार किसी भी रात्रि को अपनी बायीं हथेली पर **काम रूप मणि** रख दें और हथेली पर एक छोटा सा मिट्टी का दीपक तेल से भरा रख दें, दीपक को प्रज्वलित करें। लौ पर नजर रखते हुए दाहिने हाथ से मूंगे की माला से मंत्र जप करें। एक ही रात्रि में ५१ माला मंत्र जप होना जरूरी है।

मंत्र -

ॐ श्रं सिद्धेश्वराय लं महालक्ष्मी वं वश्यमानाय फट्

मंत्र जप के बाद उस **कामरूप मणि** को अपने घर में किसी भी स्थान पर रख दें और साधक यह देख आश्चर्य चकित रह जायेगा कि लक्ष्मी प्राप्ति की दृष्टि से यह प्रयोग अद्भुत और महत्वपूर्ण है।

प्रत्येक साधक को यह प्रयोग आजमाना ही चाहिए।

तांत्रिक हलाहलनन्द-

तांत्रिक क्षेत्र में हलाहलानंद जी का नाम अत्यंत आदर के साथ लिया जाता है। लक्ष्मी से संबंधित उनके प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण माने गए हैं।

मंगलवार की रात्रि को साधक लाल लंगोट पहन कर लाल आसन पर खड़ा होकर, सिंदूर का तिलक अपने ललाट पर लगाकर **वशीकरण लक्ष्मी यन्त्र** को बांयी हथेली में ले ले और दाहिनी हाथ में **सिद्ध माला** को लेकर २१ माला मंत्र जप करे।

मंत्र -

अघोर लक्ष्मी मम गृहे आगच्छ स्थापय तुष्टय पूर्णत्व देहि देहि फट् ।।

और वास्तव में यह प्रयोग चमत्कारी प्रयोग है जो दिखने में तो सरल है परन्तु अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसे करने पर पूर्णत्व सिद्धि प्राप्त होती ही है।

स्वामी कौल्यानन्द -

स्वामी कौल्यानन्द का नाम उत्तर काशी के क्षेत्र में साधकों के बीच अज्ञात नहीं। पूर्ण रूप से वीतरागी होते हुए इन्होंने जिस प्रकार एक बार चुनौती मिलने पर लक्ष्मी की यह साधना प्रस्तुत की उसकी प्रामाणिकता देखकर दांतो तले उंगली दबा लेनी पड़ती है। किसी भी मंगलवार की रात्रि में एकान्त में बैठ लाल वस्त्र पहन सामने **दस केलन** रख कर एक बड़ा तेल का दीपक जला लें और **प्रत्येक केलन** को सिन्दूर से रंग हकीक माला से इस मंत्र की पांच माला मंत्र जप करें।

मंत्र-

ॐ ह्रीं श्रीं श्रियै फट्

और ये गृहस्थ साधक भी . . .

पूज्य गुरुदेव से जुड़ने से पूर्व मैं एक प्रमुख राष्ट्रीय राजनीतिक दल से जुड़ा रहा और अपने क्षेत्र का अध्यक्ष होने के कारण मेरे ऊपर सदैव आकस्मिक खर्चों का बोझ बना ही रहता था। इधर - उधर की यात्राएं, जन सम्पर्क और जरूरत मंदों की मदद करने के साथ - साथ मुझे अपनी पार्टी के निर्देश पर चुनाव भी लड़ना पड़ा, जिसके लिए मुझे सामान्य से कहीं ज्यादा धन की आवश्यकता थी। जब मैं चारों तरफ से निराश हो गया तब अपने फ्लैट को एक परिचित बैंक मैनेजर के द्वारा उसके बैंक में बंधक रखकर ऋण प्राप्त किया। चुनाव की समाप्ति के बाद भी मेरा गृहस्थ जीवन और जन सम्पर्क चलता रहा और मैं बड़ी मुश्किल से कुछ किश्तें ही जमा कर सका। बाकी की भरपाई के लिए मुझे कोई उपाय समझ में नहीं आ रहा था, जबकि बैंक से रिमाइंडर आने शुरु हो गये थे, मेरे फ्लैट के सभी कागज उनके पास होने के कारण अब तो मुझे चिंता सताने लगी थी कि कहीं ऐसा न हो कि मुझे अपने घर से ही हाथ धोना पड़े ।

यह जिस वर्ष की बात है उन्हीं दिनों गुरुदेव बम्बई में एक शिविर में पधारे । मैं अपनी पार्टी के एक प्रमुख पदाधिकारी के बहुत आग्रह पर उनके पास गया। बात आयी गई हो गयी, लेकिन मेरे परिचित उन्हीं पार्टी के पदाधिकारी के बहुत कहने से मैं जोधपुर जाने को भी तैयार हो गया, वैसे भी मुझे जयपुर जाना था ही, जोधपुर पहुंचने पर मैंने गुरुजी से अपनी सारी स्थिति बताई और साफ कह दिया कि मुझे तंत्र-मंत्र पर बहुत विश्वास नहीं है। उन्होंने मुझे अपने पास पारे के बने लक्ष्मी -गणेश की एक जुड़ी हुई मूर्ति दी और उस पर एक मंत्र बताकर कुछ दिन तक रोज सुबह पांच माला मंत्र जपने को कहा।

इसके बाद मुझे ऋण मुक्ति दीक्षा प्रदान की , आज मुझे खुद सोचकर हैरानी होती है कि साधना समाप्त होने से एक हफ्ते पहले ही मेरे पास बैंक से एक पत्र आया जिसमें उन्होंने कभी मेरे द्वारा दिये गये प्रार्थना पत्र पर, जिसमें मैंने किश्तों को कम कीमत का कर चुकाने की अवधि बढ़ाने की प्रार्थना की थी, उस पर मेरे ही अनुकूल निर्णय दे दिया गया था। मैं तो इस प्रार्थना पत्र पर कोई एक्शन न लिए जाने से भूल ही गया था। यही नहीं कुछ दिन बाद मैंने एक अन्य प्रार्थना पत्र के द्वारा अपने मकान के कागज भी वापस प्राप्त किये जो उन्होंने मेरी राजनीतिक एवं सामाजिक प्रतिष्ठा देखते हुए सरलता से मुझे दे दिए। तब जाकर मैं समझ सका कि तंत्र - मंत्र के साथ गुरु कृपा और दीक्षा का क्या मतलब होता है और अब तो मैं बम्बई जैसे शहर में एक - एक दिन के शिविर लगा कर गुरुजी को हर माह आमंत्रित करता हूं, जिससे समाज के अधिक से अधिक लोग लाभ उठा सकें। अब यही मेरी सामाजिक सेवा है और राजनीति से मैंने सन्यास ले लिया है।

गणेश वट्टाणी
बम्बई

मैं भारत पेट्रोलियम जैसी प्रतिष्ठित संस्था की इलाहाबाद शाखा में एक उच्च पद पर आसीन हूं और इसके पूर्व जोधपुर में कार्यरत था। वहीं पर मैंने अपने स्थानीय कर्मचारियों से पूज्य गुरुदेव की प्रशंसा सुनकर और धार्मिक रुचि होने के कारण उनके निवास स्थान पर जाकर भेंट की। मैं पहली बार मिलने पर ही जिस तरह से अपनी कुछ व्यक्तिगत समस्याओं का हल और आध्यात्मिक प्रश्नों का उत्तर पा सका, उसके बाद तो मैंने अपने छोटे तीनों बच्चों और पत्नी सहित गुरु दीक्षा ले ली। जोधपुर में रहते समय तो मैं हर दूसरे- तीसरे दिन दर्शन करता रहता था लेकिन इलाहाबाद ट्रांसफर हो जाने के बाद मैं अलग पड़ गया। दूसरी ओर एक घरेलू सम्पत्ति के झगड़े मे फंस जाने से छुट्टियों का सारा समय उसमें ही निकल जाता था। मेरी एक पैतृक सम्पत्ति झगड़े में फंस जाने से मेरे गृहस्थ जीवन का सुख- चैन छीन कर ले गयी थी। मैं तो उसको बेचकर झगड़ा ही खत्म कर देना चाहता था, लेकिन मुकदमें बाजी में फंसी होने के कारण वह दाम जो मिल रहे थे, इतने कम होते थे कि मैं बेचने में झिझक जाता था।

संयोग से इसी वर्ष अप्रैल में पूज्य गुरुदेव के जन्म दिन का उत्सव इलाहाबाद में होना निश्चित हुआ। मैं भी आयोजन कर्त्ताओं में एक था और इसी अवसर पर मैंने गुरुदेव से अपना यह विवाद बताया। उन्होंने दूसरे दिन मुझे शिविर में आने पर उपाय बताने को कहा। मैं उनकी बात का अर्थ नहीं समझ सका, अगले दिन गुरुदेव ने सैकड़ों साधकों के बीच राज्याभिषेक दीक्षा और कुबेर दीक्षा देने की घोषणा की, मैंने सैकड़ों साधकों के बीच ये दोनों दीक्षाएं प्राप्त की। लेकिन मेरे मन में संदेह रह गया था कि इन दीक्षाओं से मेरी समस्याओं का क्या संबंध? अभी कुछ दिन पहले ही मेरी विवाद ग्रस्त सम्पति में दूसरे पक्षकार ने खुद ही मुझसे समझौता कर लिया और उससे भी आश्चर्य तो यह हुआ कि वहीं कोर्ट में उपस्थित एक व्यक्ति ने खुद ही मुझसे आगे बढ़कर उस सम्पति को मेरे अनुमान से भी अधिक डेढ़ गुने दाम पर खरीद लेने का प्रस्ताव रखा। इस झगड़े के सुलझने से मुझे मानसिक शांति के साथ - साथ मुझे धन लाभ भी हुआ है।

एस. पी. बांगड़
इलाहाबाद

मैंने पूज्य गुरुदेव से गुरु दीक्षा प्राप्त कर लेने के बाद ही यह समझ लिया था कि किसी भी साधना की अपेक्षा यदि मैं इनके चरणों से जुड़ा रहूं तो वही कई - कई साधनाओं से अधिक फलदायक होगा और मैंने अपने जीवन के पिछले सालों में इस बात को अनुभव से भी सच पाया। मैं कई शिविरों में भाग लेता रहा लेकिन साधना से भी ज्यादा उनकी कृपा का फल, उनके द्वारा सम्पन्न करवाये जाने वाले प्रयोगों का लाभ तथा दीक्षाओं की प्रत्यक्ष अनुभूति करता रहा। बिना किसी कठिन अभ्यास के केवल गुरु मंत्र जप से मेरा ध्यान धीरे-धीरे बढ़ता हुआ अब डेढ़ दो घंटे तक लगने लग गया है। मेरी सभी समस्याएं भी धीरे-धीरे समाप्त होती रहीं लेकिन एक समस्या थी जो मेरे सम्मान की बात है मुझे रह - रह कर कचोटती रही। मेरा कुछ पैसा एक जगह इस तरह से रुक गया था या धोखे से फंसा लिया गया, जिसको वापस पाना मेरे लिए कठिन था और मैं अपने को अपमानित अनुभव करता रहा। मैंने पिछली बार दिल्ली जाने पर गुरुदेव से अपनी यह समस्या कही। उन्होंने मुझे तंत्र रक्षा कवच लेने के साथ महालक्ष्मी दीक्षा भी लेने की सलाह दी। मैंने उनकी सलाह को ही उनकी आज्ञा मानकर दोनों उपाय किए और वापस लौटकर धन प्राप्ति के लिए मुकदमा कर दिया। मुकदमा दायर करते ही न केवल मुझे सारी धन राशि ब्याज सहित लौटा दी गयी, नुकसान के लिए भरपाई भी की। मेरी तो एक तरह से लॉटरी ही खुल गयी और गुरु कृपा से प्राप्त कर इस धन का सदुपयोग मैं दिनांक २२, २३ सितम्बर को कलकत्ता में सिद्धाश्रम साधक परिवार का शिविर लगाने में कर रहा हूं, जिसमें पूज्य गुरुदेव भी उपस्थित होंगे।

सुरजीत सिंह 'कोमल'
कलकत्ता

मेरी आयु १५ वर्ष है और मैं कई सालों से अपने अनियमित रूप से बढ़ते वजन और लम्बाई को लेकर दुखी रहती थी। साथ ही मेरे साथ रक्त की कुछ ऐसी गड़बड़ी थी कि मुहांसों के साथ - साथ मैं अन्य रोगों से भी परेशान रहती थी। मेरे मन में बहुत हीन - भावना बढ़ती जा रही थी, क्योंकि मेरी सहेलियां पहले तो पीठ पीछे फिर खुलकर मेरे सामने मेरा मजाक बनाने लग गयी थीं और मैं पढ़ाई में भी पिछड़ने लग गयी थी। पता नहीं तनाव से या खून की खराबी से मेरे बाल भी पतले होकर गिरने शुरू हो गये थे। दवाइयों से स्थिति सुधर नहीं रही थी। तभी बनारस से मेरी दीदी घर पर आई। वे पिछले कई सालों से गुरुजी से जुड़ी हुई हैं उन्होंने मेरी हालत देखकर मुझे घर से जिद कर अपने साथ दिल्ली ले जाने का निर्णय कर लिया और गुरुजी से मिलने पर मेरी समस्या बताई। मेरी स्थिति तो खुद ही प्रकट हो रही थी, गुरुदेव ने कुछ सोचकर तीन दिन बाद कोई विशेष दीक्षा देने की बात मेरी दीदी कनक पांडे से कही। इन तीन दिनों में मुझे केवल दूध पीकर ही रहना था। चौथे दिन प्रातः काल ही गुरुदेव ने मुझे अपने सामने दीक्षा स्थान पर बैठाया और एकटक अपनी आंखों में देखते रहने की आज्ञा देकर कुछ विशेष मंत्रों का उच्चारण किया।

इस दीक्षा के बाद मैं एक दिन और रुकी और मुझे मेरी दीदी ने बताया कि गुरुदेव ने मुझे **सौन्दर्य लक्ष्मी दीक्षा** दी है। इस दीक्षा को पाने के बाद अभी दो महीने ही गुजरे हैं लेकिन मेरे स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक ढंग से परिवर्तन आने शुरू हो गए हैं मेरा सारा फालतू वजन अपने आप ही कम होता गया और चेहरे पर ताजगी आ गयी है। अब न मुझे रक्त विकार रह गये हैं और न इन सब कारणों से रहने वाला मानसिक तनाव। सचमुच गुरुदेव ने मेरा कायाकल्प कर दिया है।

प्रियंका मिश्रा
फैजाबाद

- क्या आपके विरुद्ध षडयंत्र रचे जा रहे हैं?
- क्या शत्रुओं के प्रहार की आशंका रहती है?
- क्या आपको मुकदमे में फंसा दिया गया है?
- गृह कलह और तनाव से मुक्ति नहीं मिल रही?
- इन्टरव्यू या परीक्षाओं में सफलता नहीं मिल रही?
- क्या व्यापार में हानि हो रही है?

और बस यही समस्याएं ही क्यों? क्या इस युग में कदम - कदम पर मृत्यु झपटने के लिए तैयार खड़ी नहीं दिखती और समस्याएं आ - आ कर उलझा नहीं लेती? आतंकवादी गतिविधियों में आये दिन मारे जाते सैकड़ों निर्दोष नागरिक, रोज ही सड़क दुर्घटनाओं में होती दुखद मृत्यु कभी कहीं किसी फैक्टरी से हो गया कोई जहरीला रिसाव, तो कभी इस युग का सबसे बड़ा अभिशाप साम्प्रदायिक दंगे जिनके माध्यम से पग - पग पर मृत्यु विविध स्वरूपों से छलने को तैयार रहती है, तब क्या किया जाय? कौन सा उपाय प्रयोग में लाया जाय ? क्या एकाएक टूट पड़ने वाली ऐसी अनेक विपदाओं से बचने के लिए कोई सुरक्षा चक्र धारण किया जा सकता है? जीवन में कुछ क्षतियां ऐसी भी होती हैं जो अपूर्णीय होती हैं और उनका समय रहते यदि निराकरण अथवा बचाव का उपाय न कर लिया जाय तो शेष जीवन में पछताने के सिवा कुछ नहीं बचता। संभावनाओं में तो केवल मात्र सुरक्षा के पूर्व उपाय ही किए जा सकते हैं। जीवन में ऐसी कटु और दुखद स्थिति आने ही क्यों दी जाय? क्यों न इसके निराकरण के उपाय पहले से ही संभव कर लिए जाए । यदि कोई व्यक्ति यह सोचे कि मैं तो प्रत्येक प्रकार से सुखी और सुरक्षित हूं , मेरा तो किसी से कोई झगड़ा ही नहीं, तो यह उसकी भूल होगी क्योंकि इस मूल्यहीन समाज में अब न कोई सुरक्षित रह गया है और न निरापद।

विजया दशमी का पर्व भारतीय जीवन में कितना महत्वपूर्ण स्थान रखता है यह बताने की आवश्यकता नहीं, साथ ही साधक पूरे वर्ष टकटकी लगा कर इस दिन

की प्रतीक्षा करता रहता है जब मां भगवती जगदम्बा की सम्पूर्ण शक्तियां, उनका सम्पूर्ण जाज्वल्यमान स्वरूप, उनकी तेजस्विता, सब कुछ इस ब्रह्माण्ड के कण - कण में व्याप्त होने के साथ ही साथ उनकी असीम कृपा के साथ इस प्रकार प्राप्य होता है कि साधक सहज ही उसे अपने जीवन में उतार कर जीवन की समस्त समस्याओं को सुलझा सकता है।

विजय पर्व इस प्रकार मनाएं

जीवन का इसी प्रकार का एक महत्वपूर्ण प्रयोग है अपराजिता प्रयोग, अपने नाम के ही अनुरूप यह व्यक्ति को जीवन में प्रत्येक ढंग से अपराजित रहने का बल प्रदान करता है। व्यक्ति जीवन में सभी पक्षों को सम्पूर्णता से जीए और पग - पग पर उसे चुनौतियां या बाधाएं मिल कर उसका जीवन कटुता और तिक्तता से न भरें, यही जीवन की अपराजेय स्थिति है।

*रोग, शोक, ऋण , कलह और आकस्मिक आपदाओं के अतिरिक्त इस युग के जो चण्ड और मुण्ड हैं वे हैं - धनाभाव और कार्य सिद्धि न होना । इनके संहार के लिए भी देवी का बल आवश्यक हो जाता है और यह संभव होता है **अपराजिता साधना से।*** जिसके माध्यम से व्यक्ति देवी प्रदत्त शक्तियों को अपने शरीर में स्थान देने के लिए पात्रता निर्मित करता है।

अपराजिता स्तोत्र

मार्कण्डेय ऋषि द्वारा रचित इस दुर्लभ स्तोत्र पाठ साधना में ऐसे तीव्र प्रभाव समाहित हैं जिनको यदि विजया दशमी की रात्रि सिद्ध कर लिया जाय तो साधक को सम्पूर्ण रूप से समस्त बाधाओं से मुक्ति मिल जाती हैं। जिस प्रकार से एक बालक केवल मां को पुकार भर लेता है और वह स्वयं उसके सारे कष्ट समझ कर स्वतः ही उनका निराकरण कर देती है, उसी प्रकार से जब साधना के द्वारा साधक श्रेष्ठता व आत्मीयता से मां भगवती जगदम्बा का आह्वान करता है तो वे प्रकट अथवा अप्रकट रूप में उपस्थित होकर उसकी समस्त बाधाओं का निराकरण कर जाती हैं।

साधना विधान

अथ ध्यानम्

ॐ नीलोत्पल- दल-श्यामां भुजांगभरणान्वितम्। शुद्ध स्फटिक संकाशां, चन्द्रकोटिनिभाननाम्।। १।। शंखचक्रधरां देवीं- वैष्णवीमपराजिताम्। बालेन्दु शेखरां देवीं - वरदाभय दायिनीम्।। २।।

अपराजिता स्तोत्र

नमस्कृत्य पपाठैनांमार्कण्डेयो महातपाः।। श्रृणुध्वं मुनयः सर्वे सर्वकामार्थ सिद्धिदाम्।असद्धि साधिनीं देवीं-वैष्णवीमपराजिताम्।। ॐ नमो नारायणाय। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।। ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्त्रशीर्षाय क्षीरोदार्णव शायिने शेषभोगे पर्यंकाय, गरुड़ वाहनाय, अमोघाय, अजाय, अजिताय पीत वाससे ॐ वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध , हयग्रीव, मत्स्य-कूर्म वाराह- नृसिंह-अच्युत- वामन- त्रिविक्रम - श्रीधर - राम, राम, राम। वरद-वरद वरदोभव नमोऽस्तुते, नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते स्वाहा।।

ॐ असुर - दैत्य - दानव - यक्ष -राक्षस-भूत-प्रेत-पिशाच-कूष्माण्ड-सिद्ध योगिनी - डाकिनी- शाकिनी - स्कन्दग्रहान् -उपग्रहान्नक्षत्रग्रहांश्चाऽन्यानूहनहनपचपच मथमथ- विध्वंसय -विध्वंसय विद्रावय विद्रावय चूर्णय-चूर्णय - शंखेनचक्रेण वज्रेण-शूलेन - गदया-मुसलेन-हलेन भस्मी कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ सहस्त्रबाहोसहस्त्र प्रहरणायुध, जय जय, विजय विजय, अजित अमित, अपराजित, अप्रतिहत सहस्त्रनेत्र-ज्वल ज्वल - प्रज्वल प्रज्वल, विश्वरूप बहुरूप- मधुसूदन, माहवराह-महापुरुष - वैकुण्ठ - नारायण, पद्मनाभ - गोविन्द - दामोदर - ऋषिकेश केशव-सर्वासुरोत्सादन- सर्वभूत-वशंकर-सर्वदुःस्वप्न प्रभेदन, सर्वयंत्र प्रभंजन, सर्वनाग निमर्दन सर्वदेवमहेश्वर - सर्वबन्धनविमोक्षण सर्वाहित प्रमर्दन - सर्वज्वरप्रणाशनसर्वग्रह - निवारण, सर्वपाप प्रशमन-जनार्दन, नमोऽस्तुते स्वाहा।।

इस पाठ का विशेष फल तभी प्राप्त होता है जब इसका संयोजन **अपराजिता यंत्र** से कर दिया जाय । ऊपर लिखित स्तोत्र तो उपलब्ध हो जाता है किंतु इनका संयोजन जिस यंत्र विशेष से किया गया उसका विवरण किसी भी पुस्तक में प्राप्त नहीं होता और समुचित यंत्र के अभाव में कोई भी मंत्र अथवा स्तोत्र फलदायक नहीं सिद्ध होता।

विजया दशमी की रात्रि में दस बजे तक साधक साधना कक्ष में लाल रंग के वस्त्र पहन कर लाल रंग के आसन पर दक्षिण मुख होकर साधना के लिए स्थान ग्रहण कर ले। सामने लाल वस्त्र बिछाकर तांबे के पात्र में अपराजिता यंत्र स्थापित करें एवं उसके पीछे मां भगवती जगदम्बा के तीव्र स्वरूप महाकाली का रौद्र रूप में प्राण प्रतिष्ठित चित्र भी स्थापित करें। यंत्र व चित्र का सिंदूर , काजल, कुंकुम एवं अक्षत से पूजन कर लाल रंग के ही पुष्प भी अर्पित करें। सामान्य पूजन के उपरान्त उपरोक्त स्तोत्र में वर्णित ध्यान का उच्चारण कर देवी का श्रद्धा पूर्वक स्मरण कर **हकीक माला** से स्तोत्र के ५१ पाठ करें। पाठ के उपरान्त वह माला गले में धारण कर लें। पूर्ण सिद्धि के लिये विजया दशमी की रात्रि में १०८ पाठ करने का विधान है। जब भी कभी कोई विपरीत स्थिति आए तो इसी हकीक माला से उक्त स्तोत्र के ग्यारह पाठ करें। ♦

(पृष्ठ ३१ का शेष भाग)

- फूसियों और तीखी निगाहों से कट कर रह गया था। नित्य भोजन के समय बैठते मुझे ऐसी इच्छा होती कि काश! मेरी मृत्यु हो जाय। मेरी पत्नी भी लज्जित और दुखी थी, बच्चे सहमे - सहमे कहीं कोने में दुबके रहते थे। समय बिताना मेरे लिए कठिन हो गया था और निरर्थक इधर से उधर घूमने - फिरने में समय का अपव्यय ही होता था। जिस व्यापार में मैं सहयोगी बनने की सोच कर आया था उसकी अब कोई सम्भावना नहीं रह गयी थी, लेकिन यहां से जाऊं तो अब कहां जाऊं ? यह प्रश्न मेरे सामने सबसे प्रमुख था।

ऐसे ही दिनों में आगमन हुआ मेरी ससुराल में एक ऐसे व्यक्ति का जो ,मेरे लिए देवदूत से कम नहीं सिद्ध हुआ । मेरे पत्नी के मौसेरे भाई उन्हीं दिनों घर आये। आयु में मेरे बराबर होने के कारण तथा रिश्ते में मधुर संबंध होने के कारण विवाह के पश्चात वही एक ऐसे व्यक्ति थे , जो मेरे साथ मैत्री पूर्ण सम्बन्ध रखते थे। उन्हें मेरी पत्नी के पत्र से सब कुछ पता लग चुका था । उन्होंने ही मुझे सलाह दी कि इस स्थिति को सम्हलना तो बस तांत्रिक प्रयोग से ही संभव है या किसी श्रेष्ठ अनुष्ठान से, अन्यथा तुम तो सब कुछ हार ही चुके हो।

मैं एक सामान्य व्यापारी की तरह साधारण पूजा - पाठ से अधिक कोई रुचि नहीं रखता था न मेरा अनुष्ठानों में कोई रुचि थी, न तांत्रिक प्रयोगों में और न गुरु में , जैसा कि मेरे साले ने मुझसे जोधपुर चलने का आग्रह कर रहे थे। उनके बहुत आग्रह से और आग्रह से भी अधिक ससुराल के वातावरण से अलग हटने के लिए मैं उनकी बात मान लिया और उन्हीं के साथ पहुंचा जोधपुर में **डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी** के पास। यह मेरे जीवन में पहली बार किसी गुरु से भेंट का अवसर था और मैं बहुत आश्वस्त नहीं था। वास्तव में तो मेरे पत्नी के मौसेरे भाई इतने अधिक आग्रहशील थे और उन्हीं का आग्रह था कि पूज्यपाद गुरुदेव अनमने मन से मेरे बारे में कुछ सोचकर एक अनुष्ठान अपने किसी शिष्य के द्वारा करवा देने के लिए सहमत हो गये।

दूसरे दिन सुबह मैं उनके बताये समयानुसार उपस्थित था और अनुष्ठान की समाप्ति पर पुरोहितों द्वारा आहुतियां दिलवाने के पश्चात कुछ आहुतियां पूज्यपाद गुरुदेव ने भी दिलवायी। मैं यह अनुष्ठान समाप्त होने के बाद सारा काम निपट गया समझ कर जाने को तैयार हो गया था कि तब तक पूज्य गुरुदेव ने मुझे रुकने को कहा तथा शेष सभी को विदा दी। वे मुझे एक अलग कक्ष में ले गये और अनुष्ठान के उन्हीं वस्त्रों में पालथी मार कर सीधे बैठ जाने को कहा।

सायंकाल का समय . . . लेकिन अपने उस कक्ष में प्रकाश की व्यवस्था करने से मना कर दिया पूज्यपाद गुरुदेव ने और सांझ के उस झुटपुटे में खिड़कियों की कांच से आता प्रकाश सीधा उनके मुख मण्डल पर पड़ कर जैसी आभा दे रहा था कि वह तो वर्षों बाद भी मेरी दृष्टि पटल के सामने है . . .

कोई अन्य वस्तु नहीं दिख रही थी मुझे और देखते ही देखते कुर्सी पर ही ध्यानस्थ हो गये पूज्यपाद गुरुदेव . . .कुछ क्षण बाद आंखे खुली, रक्तिम आभा और करुणा से भर गयी आंखें . . . वर मुद्रा में उठा दाहिना हाथ और उसके बीचों - बीच एक टक देखने की आज्ञा . . . मैंने ऐसा ही किया तभी आ टकराया उनके दाहिने पांव का अंगूठा सीधे मेरे वक्षस्थल पर . . . सारा शरीर मंद ऊष्मा से ऊष्ण होता हुआ, हल्का होता जा रहा था . . . ज्यों तनाव छंट रहे हों और यह देह तनाव बोझ से मुक्त हो गयी। दृष्टि एक टक हथेली के मध्य भाग पर, उसमें से फूटता प्रकाश का एक बिन्दु, धीरे - धीरे बड़ा आकार ग्रहण करता हुआ और बढ़ता हुआ मेरे समीप, कुछ और समीप और चमका वह तेजी से क्षण मात्र के लिए एक विस्फोट बन कर . . . भगवती महालक्ष्मी का षोडश श्रृंगार युक्त विविध आभूषणों और बहुमूल्य वस्त्रों को धारण किया हुआ विग्रह, जब तक निहारूं तब तक तो समा गया मेरी ही देह में और आंखे खोजती ही रह गई उस दिव्यतम रूप के दैवी दर्शन को।

. . . भगवती महालक्ष्मी का अपूर्व तेज युक्त सौन्दर्य, या शेष रह गयी पद्म गंध , नूपुर की वह मधुर ध्वनि या फिर कोई प्रकाश पुंज . . . चका चौंध से भर सामने कुछ भी निहारने में असमर्थ हो गया था मैं, संज्ञा शून्यता आ गयी थी मुझ पर और रोम - रोम हर्षित होकर खड़ा हो गया . . . सामने पूज्यपाद गुरुदेव की उसी प्रकार स्थिर मुद्रा और तीक्ष्ण दृष्टि मेरे अंग - अंग में उतरती हुई . . . क्या उमड़ पड़ा एकाएक मेरे अंदर, कहां से टूट पड़ा आंसू का प्रवाह . . . न कोई विश्वास न कोई श्रद्धा लेकिन अब तो . . . अब तो यही लग रहा था कि <u>यह जो सामने बैठे हैं यही है मेरे जीवन के रक्षक और सवांरने वाले . . .</u> कुछ जैसे भूली बिसरी हुई कड़ियां एकाएक जुड़ने लग गई।

" . . . सौभाग्य शाली है तू! पूर्व जन्म का तेरा पुण्य आज सफल हुआ, महालक्ष्मी दीक्षा दी है तुझे, और वह भी सम्पूर्ण चरणों के साथ . . . अब तेरा निश्चित कल्याण होगा। " सुनकर मैं सचेत हुआ और किसी प्रकार से अपने को संभाला।

अब एक दिन और मैंने जोधपुर रुकना उचित समझा, मेरे रिश्तेदार को मेरे अंदर रात भर में हुए इस परिवर्तन से कोई आश्चर्य नहीं हुआ, वे ऐसी अनेक घटनाएं शायद पहले भी देख ही चुके थे। मेरी इच्छा नहीं रह गयी थी कि अपने पैतृक नगर में अथवा ससुराल में रहकर कोई कार्य करूं और इसके लिए आकांक्षी था पूज्यपाद गुरुदेव की आज्ञा और आशीर्वाद का। उन्होंने मेरी मनः स्थिति को समझते हुए मुझे ऐसा करने की आज्ञा और आशीर्वाद

प्रदान किया और स्थान का चुनाव भी उन्होंने ही किया।

फिर तो एक सफलता की लम्बी कहानी है मेरे साथ जो मेरे साथ के व्यापारियों में कथा बनकर सुनाई जाती है। जन्म प्रांत को छोड़कर सूदूर दक्षिण में जा एक अत्यंत छोटे स्तर से अपना व्यवसाय अपने साले से कुछ धन उधार लेकर प्रारम्भ किया, फिर मेरे जीवन में ऐसा नहीं रहा कि मुझे पीछे मुड़ कर देखना पड़ा हो। देखते ही देखते कुछ ही दिनों के भीतर मेरी गिनती उस अजनबी नगर के शीर्षस्थ व्यापारियों में होने लगी और आज तो मैं अपने प्रांत और सहयोगी क्षेत्रों का एक मात्र वितरक हूं, अब मैं एक साधारण व्यापारी नहीं रहा। कोई भी तो अभाव नहीं रह गया मेरे जीवन में। धन मेरे लिए महत्वपूर्ण होने के साथ - साथ'इतने उतार - चढ़ाव देखने के बाद बहुत महत्वपूर्ण नहीं रह गया था। महत्वपूर्ण था मेरे लिए धन के साथ सुख, मानसिक शांति, पारिवारिक सम्पन्नता, यश और प्रतिष्ठा और यह सब मैंने जीवन में भरपूर पाया, मेरे दोनो पुत्र अपनी पढ़ाई भारत में पूर्ण करने के बाद बिजनेस मैनजमेंट की शिक्षा लेने विदेश जा चुके हैं। हम पति - पत्नी पूर्ण स्वस्थ और मानसिक शांति का जीवन जीते हुए जीवन में वह सब कुछ समझ चुके हैं और पा चुके हैं जिससे जीवन की सार्थकता है, धार्मिकता, निश्चिन्तता और गुरु चरणों मे अनुरक्तता यही हमारे जीवन की पूंजी है। मेरी कोई भी रात अपने अन्य सहयोगियों की तरह बिस्तर पर करवटें बदल - बदल कर या नींद की गोली खाकर नहीं बीती। लम्बा - चौड़ा व्यवसाय होने के बाद भी मुझे ब्लड - प्रेशर या मानसिक तनाव जैसे रोग ने आकर नहीं घेरा। यही मेरे जीवन का सबसे बड़ा आनन्द है और इसके आधार में है पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा दी गई महालक्ष्मी दीक्षा। जिसका मैंने जीवन में कदम - कदम पर लाभ और प्रत्यक्ष प्रभाव देखा है। आज भी जब मुझे अवसर मिलता है तो भले ही कुछ घंटों के लिए मैं पूज्यपाद गुरुदेव के श्रीचरणों में बैठकर ही जीवन की तृप्ति का अनुभव करता हूं।

गोवर्धन बी. वर्मा
गोवर्धन एजेन्सी, एम.डी.पी. मार्केट
थर्ड फ्लोर, बटप्पा लेन,
सी.टी.स्ट्रीट क्रास,
बंगलौर - ५६०००२
कर्नाटक

महालक्ष्मी जी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी अम्बे, मैया जय आनन्द कन्दे।
सत् चित् नित्य स्वरूपा, सुर नर मुनि सोहे।। ॐ जय . .
कनक समान कलेवर, दिव्याम्बर राजे। मैया . .
श्री पीठे सुर पूजित, कमलासन साजे ।। ॐ जय . .
तुम हो जग की जननी, विश्वम्भर रूपा । मैया . .
दुख दारिद्र्य विनाशे, सौभाग्यं सहिता।। ॐ जय . .
नाना भूषण भाजत, राजत सुखकारी। मैया . .
कानन कुण्डल सोहत, श्री विष्णु प्यारी।। ॐ जय . .
उमा तुम्हीं, इन्द्राणी, तुम सबकी रानी । मैया . .
पद्म शंख कर धारी, भुक्ति, मुक्ति दायी।। ॐ जय . .
दुःख हरती सुख करती, भक्तन हितकारी । मैया . .
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी ।। ॐ जय . .
अमल कमल धृत मातः, जग पावन कारी। मैया . .
विश्व चराचर तुम ही, तुम विश्वम्भर दायी।। ॐ जय . .
कंचन थाल विराजत, शुभ्र कपूर बाती । मैया. .
गावत आरती निशदिन, जन मन शुभ करती।। ॐ जय . .

(पृष्ठ ५८ का शेष भाग)

ब्रह्माण्ड रश्मियों से आपूरित है।

फिर विश्वामित्र ने **ऐश्वर्य माला** से एक निष्ठ होकर मंत्र जप प्रारम्भ किया . उससे केवल नित्य ११ माला मंत्र जप करने का विधान है और यह नौ दिन तक की जाने वाली साधना है, उसी पुस्तक विश्वामित्र सांगतेय में यह भी व्यवस्था लिखी है कि यदि नित्य ५१ माला मंत्र जप करके साधक पांच दिन में इस अनुष्ठान को सम्पन्न कर ले या १५१ माला एक रात्रि में ही कर इस अनुष्ठान को सम्पन्न कर सकता है।

विश्वामित्र ने ११ माला मंत्र जप कर अनुष्ठान को सम्पन्न किया इस प्रकार जब आठ दिन पूरे हो गये तो विश्वामित्र ने देखा कि पूरा कमरा सुगन्ध से आपूरित हो उठा है और यह एक विचित्र अद्भुत और आन्नद -दायक सुगन्ध थी। विश्वामित्र बराबर मंत्र जप करते रहे और अनुष्ठान के मध्य भाग में पहुंचे तो विश्वामित्र ने देखा कि एक अत्यंत तेजस्विता से युक्त षोडश वर्षीय अत्यधिक सौन्दर्य वती और रूप यौवन से युक्त युवती जिसका सारा शरीर देदीप्यमान हो रहा था और जिसके शरीर से शीतल किरणें प्रवहित हो रही थी जिसकी कमल सी आंखे अपने आप में सम्पूर्ण भाग्य और ऐश्वर्य देने में समर्थ थी, जिसके गले में कमल के पुष्पों का हार विद्यमान था, वह अत्यंत मोहक और प्रसन्न मुद्रा में विश्वामित्र के सामने पद्मदल पर पद्मासन में बैठ गयी और एक टक दृष्टि से विश्वामित्र को अनुष्ठान करते देखती रही।

न विश्वामित्र हिले और न बोले उनके होंठ सतत मंत्र जप कर रहे थे, जब उन्होंने ११ माला पूरी की तब उन्होंने अपनी आंखें खोली और देखा कि अपने सामने सहस्त्र ऐश्वर्य के साथ विविध सौन्दर्य के साथ भगवती महालक्ष्मी विद्यमान है। यह अनुष्ठान सम्पन्न कर उन्होंने ऐश्वर्य माला आसन पर ही रखी थी कि वह बोल उठी विश्वामित्र! तुम सर्वश्रेष्ठ महाऋषि हो, तुम अद्वितीय आचार्य हो, तुम पूर्णत्व प्राप्त साधक हो, तुम्हारी जिद और तुम्हारे हठ के सामने पूरा ब्रह्माण्ड नतमस्तक है, मैं सभी प्रकार से तुम्हारी आज्ञा के लिए परिपालक हूं और मैं अपनी सहस्त्र रूपों के साथ तुम्हारे आश्रम में हमेशा- हमेशा के लिए विद्यमान रहूंगी, इस क्षण के साथ तुम्हारे और तुम्हारे आश्रम के जीवन में किसी भी प्रकार की कोई न्यूनता और अभाव नहीं रहेगा। कोई बीमारी , कोई परेशानी , कोई चिन्ता, कोई तकलीफ व्याप्त नहीं होगी और सभी प्रकार से यह घर, यह आश्रम अपने आप में अद्वितीय और श्रेष्ठतम कहलायेगा।

विश्वामित्र ने अनुष्ठान को समाप्त किया और भगवती लक्ष्मी ने १०८ कमल पुष्प विश्वामित्र के सामने रख दिये ये पुष्प इस बात के संकेत थे कि भगवती महालक्ष्मी १०८ स्वरूपों में विश्वामित्र की आज्ञा मानने के लिए विवश है और आश्रम में स्थापित है। विश्वामित्र ने उस ऐश्वर्य माला को अपने गले में धारण किया और अपने इस अनुष्ठान को सम्पन्न किया। इतिहास साक्षी है कि उस त्रेता युग में उस समय के बाद विश्वामित्र के आश्रम के समान कोई आश्रम ही नहीं था अद्वितीय ऐश्वर्य सम्पन्न , स्वर्ण वर्षा करता हुआ धन - धान्य से आपूरित सभी सुख - सुविधाओं से युक्त अतुलनीय धन और सम्पन्नता से परिपूरित , यहां तक कि आगे चलकर दशरथ को भी जब युद्ध में भाग लेने के लिए धन की आवश्यकता पड़ी तो विश्वामित्र से धन प्राप्त कर युद्ध में विजय प्राप्त की। वास्तव में ही यह अनुष्ठान अपने आप में अत्यंत महत्वपूर्ण है और दीपावली के इस महत्वपूर्ण अवसर पर कोई भी साधक इस साधना को सम्पन्न कर इसकी प्रामाणिकता पर मुहर लगा सकता है और जीवन में धन ,यश , मान , पद , प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य प्राप्त कर जीवन को पूर्णत्व प्रदान कर सकता है।

(पृष्ठ २१ का शेष भाग)

गया, दिन के तीसरे प्रहर का आरम्भ हो चुका था और एकांत होने पर पूज्यपाद गुरुदेव से मिलने का अवसर आया और जब प्रवेश किया मैंने उनके कक्ष में और चरण स्पर्श कर सिर उठाया तो ठीक उनके सिर के उपर लगे चित्र के ऊपर जाकर दृष्टि स्थिर हो गयी मेरी . . . यही तो, यही तो, इसी मूर्ति को आज प्रातः देखा था मैंने, ठीक यही मुख - मुद्रा तो थी, कोई भी तो अंतर नहीं लेकिन वही स्त्री यहां इस चित्र में लक्ष्मी के इस रूप में धन - वर्षिणी बन कर खड़ी है . . .यही जैसे आज सुबह इस चित्र से निकल कर साधना - स्थल पर आ गयी हो . . . क्या मैंने आज सुबह लक्ष्मी का ही दर्शन पाया? क्या लक्ष्मी इस तरह से साधारण वस्त्रों में आ सकती है? क्या वह इस प्रकार सद्यस्नाता रूप धर कर भी विचर सकती है? और क्या- क्या प्रश्नों की झड़ी लग गयी मेरे मानस में, अवाक होकर कभी देखता पूज्यपाद गुरुदेव का मुखमण्डल तो कभी वह चित्र और तुरंत मानस में तैर जाता प्रातः काल का रूप। उन्मुक्त हंस पड़े पूज्यपाद गुरुदेव मेरा असमंजस और हड़बड़ी देखकर और गुरुदेव की महिमा ही निराली होती है, उनके प्रत्येक क्रिया कलाप, प्रत्येक स्पर्श, प्रत्येक शब्द से शिष्य का कुछ न कुछ संवर ही जाता है और मेरे मन के सारे संदेह, सारे भ्रम शून्य में विलीन हो गये . . . हां वह महालक्ष्मी ही थी, वह उनका ही जीवित जाग्रत और यथार्थ स्वरूप था, अन्तर केवल इतना था वह मेरे मन में बने किसी रूप की अपेक्षा आ गयी थी स्वेच्छा से धारण किये हुए रूप में।

" क्या देव वर्ग भी तेरी किसी धारणा से बंधा है? " रहा सहा भ्रम दूर कर दिया पूज्यपाद गुरुदेव के इस एक वाक्य ने।

कैलाश नाथ मिश्रा
द्वारा श्री अखिलेश कुमार तिवारी
निराला नगर, फैजाबाद (उ.प्र.)

आजीवन सदस्यता

गौरवशाली ''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'' पत्रिका की

''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'' पत्रिका की आजीवन सदस्यता एक गौरव है,एक स्वाभिमान है, जीवन का सौभाग्य है और साधना की पूर्णता है, यह एक अनुपम गुरुदेव के हृदय के निकट पहुंचने की प्रिय पात्रता है, साधना में पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है.

और **आजीवन सदस्यता शुल्क मात्र ६६६६/- है** जिसे एक मुश्त या तीन किश्तों में जमा कराकर यह सौभाग्य प्राप्त किया जा सकता है।
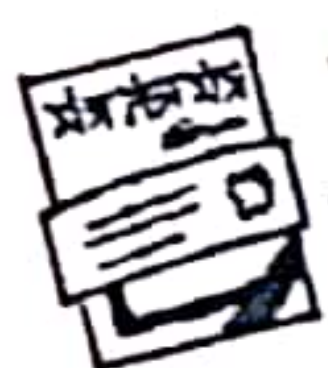
पूरे जीवन भर ''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'' पत्रिका सर्वथा निःशुल्क आपके घर पर, डाक द्वारा।

शिविर सिद्धि पैकेट -जिसमें १.धोती २. माला ३. दुपट्टा ४.पंचपात्र५.आसन -सर्वथा मुफ्त।

''महालक्ष्मी दीक्षा '' जो अपने आप में ही वैभव धन ऐश्वर्य से युक्त है- एक महीने के भीतर - भीतर आपको निःशुल्क।

गुरु यंत्र- जो जीवन की पूर्णता में सहायक है, सर्वथा मुफ्त।
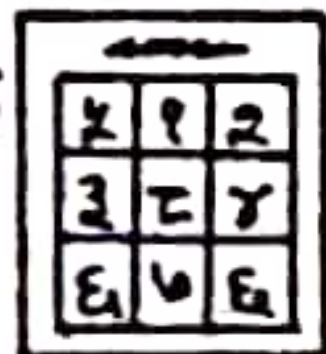
२१ तोले का मंत्र सिद्ध पारद शिवलिंग - जिसकी न्यौछावर ही २५००/-रु. है, पर आपको सर्वथा मुफ्त।

सिद्धाश्रम कैसेट --जो आपके घर को गुरुवाणी से झंकृत करने में समर्थ है।

एक १६ X २० साइज का प्राण ऊर्जा से चैतन्य सिद्ध गुरु चित्र, सर्वथा निःशुल्क।

पारद पादुका - जो आपके घर के ऋण को दूर करने में मददगार है।

सूर्यकान्त उपरत्न , जो भाग्योदयकारक है, अंगूठी में जड़वा कर पहिनने लायक।

स्वर्णतंत्रम्--पुस्तक सर्वथा मुफ्त।

जीवन भर परम पूज्य गुरुदेव से व्यक्तिगत सम्पर्क

यह सुनहरा अवसर १३.११.६३ तक

और

यों आप बिना उपरोक्त उपहारों के मात्र २४००/- रुपये देकर भी आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'' पत्रिका में जमा आपकी यह धनराशि धरोहर राशि के रूप में है, जों पत्रिका कार्यालय में आपके नाम से जमा रहेगी, जब भी आप आजीवन सदस्य न रहना चाहें, आप रजिस्टर्ड डाक से इस प्रकार का पत्र भेज दें, (जिसका प्रमाणीकरण कार्यालय द्वारा हो), पत्र भेजने की तारीख से दस वर्ष बाद **यह धरोहर धनराशि, बिना ब्याज के आपको लौटा दी जायेगी।**

सम्पर्क

दिल्लीः -३०६, कोहाट इन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली- ३४ , फोन : ०११ - ७१८२२४८

अथवा

जोधपुर :- मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : ०२६१ - ३२२०६

लक्ष्मी पूजन मुहूर्त

इस वर्ष दीपावली कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या शनिवार १३ नवम्बर १९९३ को है। शास्त्रों के अनुसार स्थिर लग्न में किया गया कार्य चिर स्थायी रहता है। अतः लक्ष्मी पूजन स्थिर लग्न में ही सम्पन्न करना चाहिए।

१३ नवम्बर १९९३ को स्थिर लग्न दो समय में आता है एक तो १३ नवम्बर को शाम को ५ बजकर ५७ मिनट से सात बजकर ५३ मिनट तक वृषभ लग्न है दूसरा स्थिर लग्न सिंह लग्न है जो कि अर्ध रात्रि को १२ बज कर २५ मिनट से २ बजकर ४२ मिनट तक है, इन दोनों ही समय में लक्ष्मी पूजन किया जा सकता है।

प्रत्येक व्यक्ति जो घर का मुखिया है उसके राशि के अनुसार यदि लग्न को देखकर लक्ष्मी पूजन किया जाय तो ज्यादा उचित रहता है। राशि के अनुसार मेष, मिथुन, कर्क , तुला, धनु और कुम्भ राशि वालों को शाम को ५ बजकर ५७ मिनट से ७ बजकर ५३ मिनट के बीच में जो वृषभ लग्न आता है, उसमें लक्ष्मी पूजन करना चाहिये और वृषभ , सिंह , कन्या वृश्चिक, मकर और मीन राशि वालों को चाहिए कि वह सिंह लग्न अर्थात १२ बजकर २५ मिनट से २ बजकर ४२ मिनट तक जो स्थिर लग्न है, उसमें लक्ष्मी पूजन करना चाहिए। राशि का विवरण इस प्रकार है--

मेष - अ,च , ल	**वृषभ** - ऊ , व	**मिथुन** - क , छ	**कर्क** - ड , ह
सिंह - म ,ट	**कन्या** - प ,ण	**तुला** - र , त	**वृश्चिक** - न ,य
धनु - भ, ध, फ,ढ़	**मकर** - ख, ज	**कुम्भ** - ग , स	**मीन** - द ,च

इस प्रकार जिनके नाम जिन अक्षरों से प्रारम्भ होते हैं उनकी वही राशि कही जाती है जन्म की राशि से कोई मतलब नहीं है जिस नाम से वह पहचाना जाता है, उसी नाम की राशि देखना चाहिए।

इसकी अलावा जो मुहूर्त है वो इस प्रकार है --

११.११.९३ को धनत्रयोदशी है -- इस दिन धन पूजन या बही खातों का पूजन शाम को ५ बजे से ६ बजे के बीच किया जाय तो ठीक है ।

११.११.९३ को ही ८ बज कर २१ मिनट से ९ बजकर ४२ मिनट के बीच में नवीन बहीखातों का पूजन होना चाहिए या डायरी पूजन होना चाहिए या कलम दवात का पूजन होना चाहिए।

१२.११.९३ को रूप चतुर्दशी है इस दिन प्रत्येक स्त्री , कन्या वह चाहे बहु , पत्नी या पुत्र वधू हो , उनको अत्यधिक श्रृंगार कर पूर्णता से अपने रूप यौवन को निखार कर अपने बड़े - बूढ़ों का चरण स्पर्श करना चाहिए। गुरु पूजन या देवता पूजन करने का भी विधान है कहते हैं कि जो स्त्री इस दिन जितनी ज्यादा सौन्दर्य सामग्री तथा आभूषणों तथा अच्छे वस्त्रों से श्रृंगार युक्त होकर पूजन करती है वह पूरे वर्ष पर्यन्त रूप और सौन्दर्य मय बनी रहती है।

१५.११.९३ को यम द्वितीया है। इस दिन यम की पूजा की जाती है और अपने भाई की शुभता के लिए बहन उसे तिलक करती है साथ ही वह अपने गुरु गृह जाकर उन्हें यथोचित दान, भेंट आदि अर्पित करे और उनका पूरे परिवार के साथ आशीर्वाद प्राप्त करे। ऐसा ही शास्त्रों में विधान है।

इसी पत्रिका के अगले पृष्ठों में महालक्ष्मी पूजन का विधान है, उस पूजन को सम्पन्न करना चाहिए जिससे कि सही समय पर पूजन और शुभ कार्य सम्पन्न हो सके।

अपनों से अपनी बात

विशेष कर शिष्यों से

भारत भर में विस्तारित शिष्यों को पूज्यपाद गुरुदेव का

आह्वान

पत्रिका का प्रचार-प्रसार सक्रियता एवं सघनता से करने के लिए . . .
संलग्न विज्ञापन के अनुसार अपने स्थान पर राज्य स्तरीय अथवा राष्ट्र स्तरीय अखबार में अपने खर्च पर पोस्ट कार्ड साइज में विज्ञापन प्रकाशित कर उसकी कटिंग पत्रिका कार्यालय में भेजें और पूज्यपाद गुरुदेव के आशीर्वाद के साथ प्राप्त करें . . .

दारिद्रय विनाशिनी
वैभव लक्ष्मी यंत्र

दीपावली की चैतन्य रात्रि में सिद्ध किया जायेगा स्वयं पूज्यपाद गुरुदेव के कर कमलों से, जिसको प्राप्त कर सकेंगे वे सौभाग्यशाली शिष्य जिन्होंने ३०.१०.९३ तक पूर्णता दे दी होगी इस गुरुकार्य को, विज्ञापन के प्रकाशन से।

इसके लिए आवश्यक है कि आप अपने नाम के साथ, अपने परिवार के सभी सदस्यों का नाम, आयु सहित हमें भेंजे जो विज्ञापन की कटिंग के साथ संलग्न हो,दीपावली से पूर्व . . . .

विज्ञापन में अपना नाम अवश्य प्रकाशित करायें

<u>सम्पर्क</u>

३०६, कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा,
नई दिल्ली - ११००३४
फोन : ०११ - ७१८२२४८

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर(राज.),
फोन : ०२९१ - ३२२०६

महालक्ष्मी विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका- पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधना में संबंधित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है, तथा साधना से संबंधित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
श्री यंत्र	०६	२४०/-
कनकधारा यंत्र	०६	२४०/-
लक्ष्मी यंत्र	१०	३००/-
पारद गणपति	१०	३६०/-
श्वेतार्क गणपति	१०	४५०/-
विजय गणपति	१०	६००/-
एक लघु नारियल	१२	२१/-
श्री पात्र	१२	२४०/-
कमल गट्टे की माला	१२	१५०/-
सौभाग्य लक्ष्मी साधना पैकट	१४	
सौभाग्य लक्ष्मी महायंत्र		
कुबेर यक्ष		
भाग्य चिकलन		
सौभाग्य नारियल		
सौभाग्य चिरमी		
सौभाग्य किन्नर		
सौभाग्य दीपन	१४	६००/-
सौभाग्य पेकल		
सौभाग्य किलेन		
सौभाग्य पहनान		
सौभाग्य बेहुल		
सौभाग्य मोरहुन		
१०० कमल के बीज		
सहस्त्र रूपा सिद्ध माला		
सहस्त्र रूपा महालक्ष्मी यंत्र	२४	६००/-
क्षीरोद्भव शंख		
स्थिर महालक्ष्मी मणि		
बिकिनाऔल	२५	१००/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
१५ चिरमी		
१५ हकीक	२७	३६०/-
१५ इन्द्रजाल के टुकड़े		
कपिलेश्वरी यंत्र	३४	३००/-
१० योगिनी कृतवाह	३४	२१०/-
सतरूपा भगवती जगदम्बे यंत्र	३६	३००
शक्तिपात युक्त दीक्षाएं		
महालक्ष्मी दीक्षा	३८	५१००/-
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा	३८	३१००/-
ऋण मोचन दीक्षा	३८	५१००/-
रोग निवृत्ति दीक्षा	३८	२१००/-
सम्पूर्ण सम्मोहन दीक्षा	३८	३६००/-
स्वर्णप्रभा यक्षिणी यंत्र	४०	६००/-
हकीक माला	४०	१५०/-
कनक वर्षिणी यंत्र	४३	२४०/-
पारद शंख	४३	३००/-
पारद माला	४३	६००/-
महादुर्गा यंत्र		
दुर्गा गुटिका		
काली गुटिका	४७	६००/-
शक्ति माला		
काली हकीक माला	४६	१५०/-
लाल हकीक माला	४६	१५०/-
स्फटिक माला	५०	३००/-
१ गोमती चक्र	५१	२१/-
लघु मोती शंख	५१	१२०/-
दक्षिणा वर्ती शंख	५१	१५००/-
१ सियार सिंगी	५२	१५०/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
मधुरूपेण रुद्राक्ष	५२	६०/-
१ हकीक पत्थर	५२	११/-
एकाक्षी नारियल	५३	३००/-
कुबेर यंत्र	५३	४५०/-
लक्ष्मी माला	५३	४५०/-
विद्युत लक्ष्मी माला	५३	६००/-
कामरूप लक्ष्मी मणि	५४	६००/-
पारद लक्ष्मी	५४	३००/-
रक्त वर्णिय माला	५५	१५०/-
ऐश्वर्य महालक्ष्मी यंत्र	५८	४५०/-
ऐश्वर्य माला	५८	३००/-
सौन्दर्य लक्ष्मी यंत्र	६४	२४०/-
सौन्दर्य माला	६४	२४०/-
रति माला	६४	२४०/-
अप्सरा माला	६४	२४०/-
सौन्दर्य पारिजात	६४	१११/-
लक्ष्मी यंत्र	६५	३६०/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
सफेद हकीक माला	६५	१५०/-
श्री लक्ष्मी यंत्र	६५	२४०/-
ऐश्वर्य लक्ष्मी यंत्र	६६	२४०/-
मूंगे की माला	६६	१५०/-
विजय लक्ष्मी यंत्र	६६	३००/-
रक्त चन्दन की माला	६६	१२०/-
प्रत्यक्ष लक्ष्मी सिद्ध यंत्र	६६	३००/-
पूर्णत्व लक्ष्मी यंत्र	६६	२८०/-
हीरा शंख	६७	३००/-
पूर्ण धनेश्वरी महालक्ष्मी यंत्र	६८	३००/-
शंख माला	६८	२४०/-
कामरूप मणि	६८	६००/-
वशीकरण लक्ष्मी यंत्र	६८	३००/-
सिद्ध माला	६८	१५०/-
दस केलन	६८	१००/-
दीक्षा		
सौन्दर्य लक्ष्मी दीक्षा	७०	३०००/-

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे।

ड्राफ्ट किसी भी वैंक का हो, वह **"मंत्र शक्ति केन्द्र"** के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पताः-

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,जोधपुर-३४२००१(राज.),टेलीफोन : ०२९१-३२२०६

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आवें

३०६,कोहाट एन्क्लेव,नई दिल्ली, टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली की ओर से नव शक्ति इन्डस्ट्रीज से मुद्रित C. १३ , न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा प्रकाशित तथा ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

सम्पादक : श्री नन्द किशोर श्रीमाली

Scanned by CamScanner

भौतिक सफलता : साधना एवं सिद्धियां

क्योंकि भौतिक जीवन, सामाजिक जीवन ही आधार है अध्यात्मिकता का . . .
विविध बाधाओं, शत्रु , मुकदमेबाजी, ऋण, गृह कलह में आबद्ध हो कर जीवन की मस्ती ही कहां?
इन्हीं का निराकरण तो . . . .

लक्ष्मी प्राप्ति के दुर्लभ प्रयोग

जीवन में धन का न सूखने वाला स्रोत ढूंढने की क्रिया . . .
समाज के प्रत्येक वर्ग कीआवश्यकता और सुविधा को ध्यान में रख रचित एक अनमोल ग्रंथ . . .

आधुनिकतम हिप्नोटिज्म के १०० स्वर्णिम सूत्र

१०० सूत्र ही नहीं, १०० रत्न . . .
जो भर देंगे जीवन को झिलमिलाहटों से . . .
प्रेम, आकर्षक, विवाह, जन सम्पर्क, जीवन का प्रत्येक पक्ष . . . सरल और पूर्णतयः प्रायोगिक ढंग से . . .
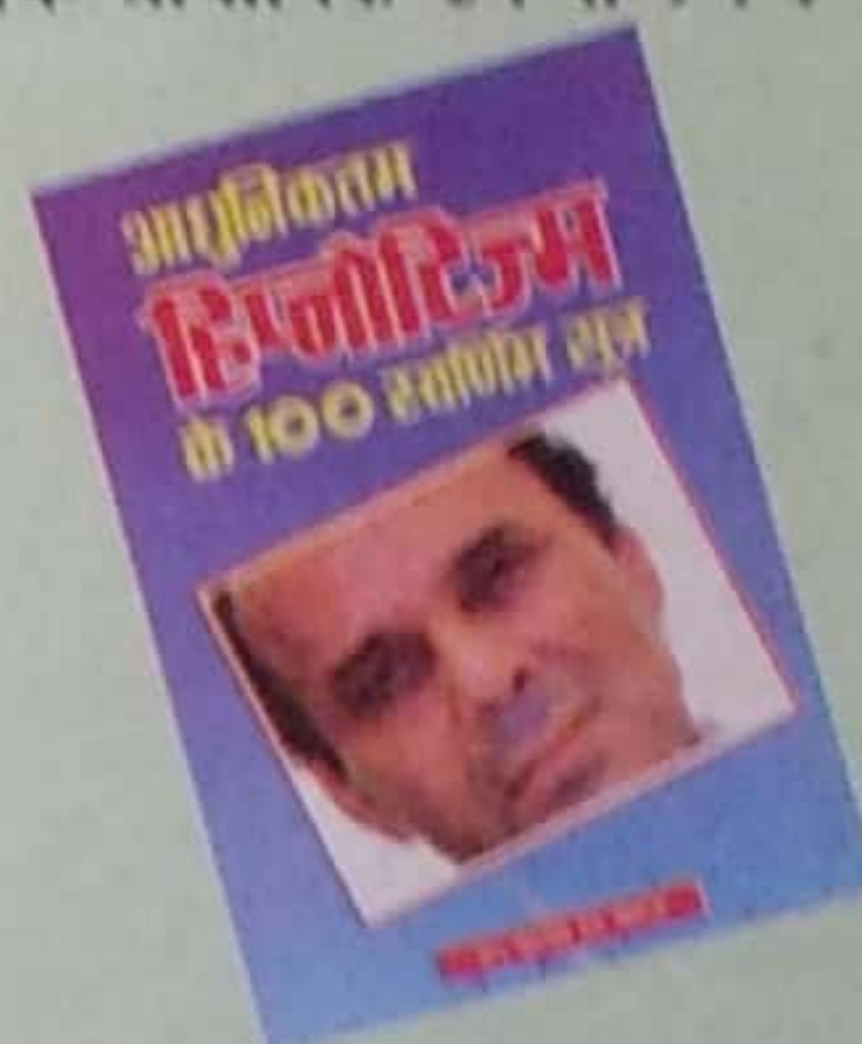
महालक्ष्मी सिद्धि एवं साधना

जीवन का प्रत्येक छोर संवारना, सजाना, और प्राप्त करना वह सब कुछ जो आवश्यक हो . . . सुंदर भवन, पुत्र, समृद्धि, वाहन, ऐश्वर्य . . .
प्रत्येक पक्ष . . .
अद्वितीय संकलन, निश्चित उपाय. .

चार और बहुमूल्य ग्रंथ

प्राप्ति स्थान :

मंत्र -तंत्र-यंत्र विज्ञान, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४ फोन : ७१८२२४८

अथवा

मंत्र-तंत्र-यत्र विज्ञान, डॉ श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.) , फोन : ०२९१-३२२०९